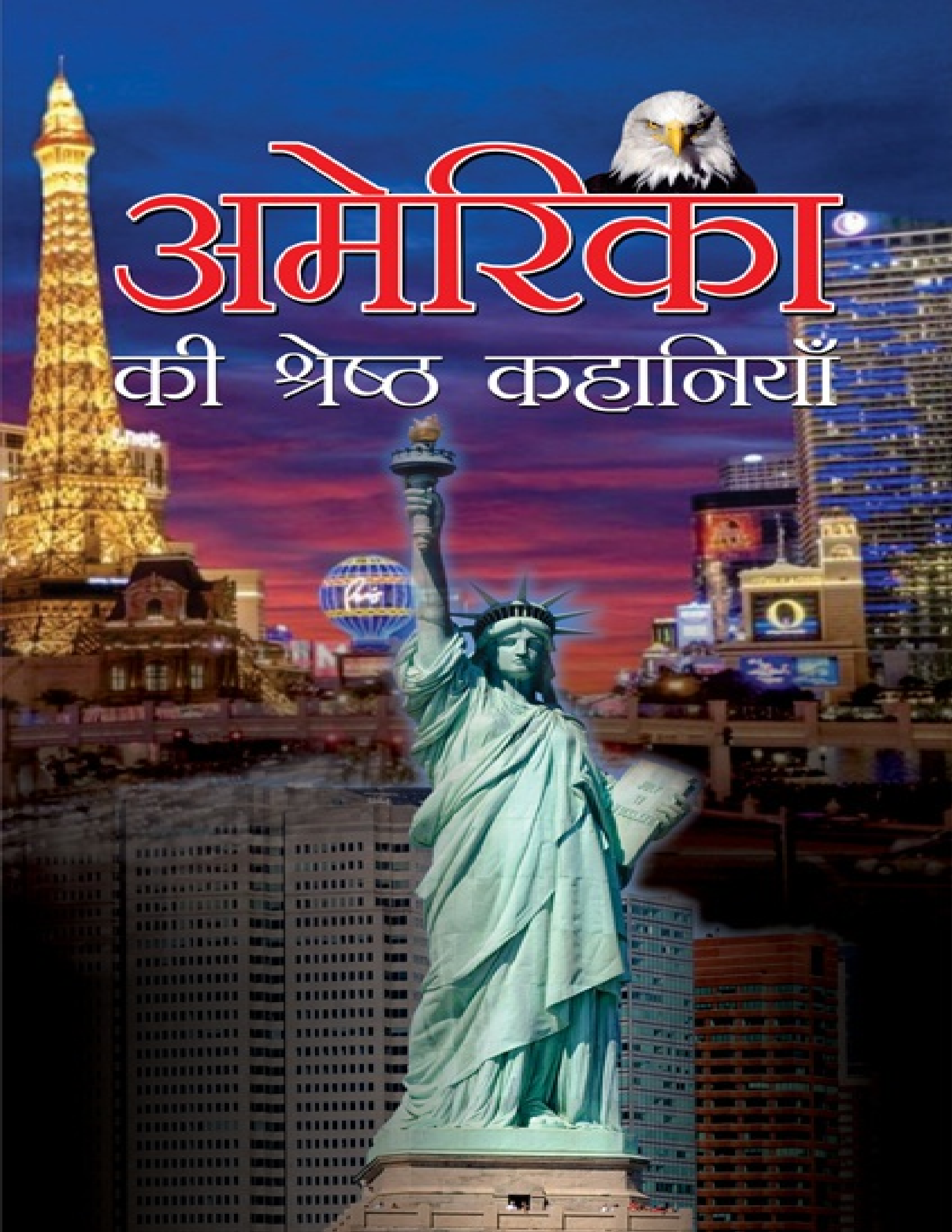
अमेरिका
की श्रेष्ठ कहानियाँ

अमेरिका

की

श्रेष्ठ कहानियाँ

सं. मोजेज माइकल

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

रिप वान विंकल

-वॉशिंगटन इर्विंग

डीड्रिक निकरबॉकर की एक मरणोपरांत रचना

यह कहानी न्यूयॉर्क के एक बूढ़े व्यक्ति स्व. डीड्रिक निकरबॉकर के कागजात में मिली थी। डीड्रिक में इस प्रांत के इतिहास और यहाँ आकर बस जानेवाले मूल निवासियों के वंशजों के तौर-तरीकों को जानने की बहुत ललक थी, लेकिन उसके ऐतिहासिक अनुसंधान किताबों के बीच वे थे; क्योंकि उसके इस प्रिय विषय पर किताबें तो शोचनीय स्तर तक नगण्य हैं, जबकि बूढ़े निवासियों और उनसे भी ज्यादा उनकी बीवियों में डीड्रिक को उन लोककथाओं का अपार भंडार दिखाई देता था, जो सच्चे इतिहास के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती हैं। इसलिए जब कभी संयोग से उसे किसी फैलते गूलर के वृक्ष के तले नीची छतवाले किसी खेतघर के अंदर आराम से सिमटा कोई असली डच परिवार मिल जाता था तो वह उसे एक छोटी सी बंद किताब की तरह लेता था और किसी किताबी कीड़े की भाँति उसका अध्ययन करता था।

इन तमाम अनुसंधानों का नतीजा एक किताब के रूप में सामने आया। डच गवर्नरों के राज के दौरान इस प्रांत का इतिहास इस किताब में था, जिसे उसने कुछ साल बाद छपवाया । उसकी इस किताब की साहित्यिक प्रकृति के बारे में कई तरह की रायें रही हैं, और सच कहा जाए तो यह जितनी अच्छी होनी चाहिए थी, उससे तनिक भी बीस नहीं है। इसकी सबसे खास खूबी है इसकी सटीक शुद्धता—और जब यह पहले-पहल प्रकाश में आई तो इस शुद्धता पर सचमुच थोड़ा संदेह किया गया था, लेकिन फिर यह पूरी तरह से प्रमाणित हो गई है। अब इसे तमाम ऐतिहासिक संग्रहों में निर्विवाद रूप से एक प्रामाणिक पुस्तक के रूप में स्थान मिला हुआ है।

यह बूढ़ा व्यक्ति अपनी किताब छपने के कुछ समय बाद ही मर गया, और अब जबकि वह मर चुका है तो उसकी स्मृति को बहुत नुकसान पहुँचाए बगैर यह कहा जा सकता है कि उसने अगर और ज्यादा भारी मशक्कत में अपना समय लगाया होता तो अधिक अच्छा होता। लेकिन वह अपने शौक को अपने तरीके से पूरा करने को तत्पर रहता था, और हालाँकि पड़ोसियों को इससे कभी-कभार मिर्चें लग जाती थीं और उसके स्नेह और सम्मान के असली पात्र उसके कुछ दोस्तों को इससे आत्मिक दु:ख होता था, फिर भी उसकी गलतियों और मूर्खताओं को लोग 'गुस्सा होकर कम, लेकिन दु:खी होकर अधिक' याद करते हैं। और उन्होंने यह संदेह करना शुरू कर दिया है कि उसने कभी किसी को चोट पहुँचाने या आहत करने का इरादा नहीं बनाया। लेकिन आलोचक उसकी स्मृति में कितना भी मीन-मेख निकालें, अनेक लोगों के लिए वह अभी भी प्रिय है; और ये वे लोग हैं जिनकी अच्छी राय का वजन होता है। इनमें खास वे बिस्कुट बनानेवाले हैं, जो अपने नववर्ष के केकों पर उसकी तसवीर अंकित करते हैं, और इस तरह उन्होंने उसे अमरता का उतना ही अवसर दे दिया है जितना वाटरलू के तमगे या महारानी ऐन के सिक्के पर अंकित व्यक्ति को प्राप्त है।

सौगंध सैक्सनों के देवता वोडन की
जिसके नाम पर बना है वेंजडे, अर्थात् वोडंजडे (बुधवार)।
सत्य वह चीज है, जिसे रखूँगा मैं हमेशा
उस दिन तक, जब मैं जाऊँगा
अपनी कब्र में—

—कार्टराइट

जिस किसी ने भी हडसन नदी की यात्रा की है, उसे काटस्किल पर्वतों की जरूर याद होगी। ये महान् ऐपलेचन पर्वत शृंखला की एक टूटी हुई शाखा हैं, जिन्हें नदी के पश्चिम में एक उद्दाम ऊँचाई तक उठकर आस-पास के प्रदेश पर प्रभुत्व जमाते देखा जा सकता है। ऋतुओं के हर बदलाव, मौसम के हर बदलाव, सच पूछें तो दिन के हर पहर के साथ इन पहाड़ों के जादुई रंगों और आकारों में कुछ-न-कुछ बदलाव जरूर आ जाता है; और दूर-दूर तक सभी गृहिणियाँ इन्हें अचूक बैरोमीटर मानती हैं। जब मौसम साफ और स्थिर होता है तो ये पहाड़ नीले व बैंगनी आवरण ओढ़ लेते हैं और अपनी स्पष्ट आकृतियों को शाम के स्वच्छ आकाश पर छाप देते हैं; लेकिन कभी-कभी, जब बाकी परिदृश्य मेघ-विहीन होता है तो वे अपनी चोटियों के आस-पास धूसर भाप का छत्ता इकट्ठा कर लेते हैं, जो डूबते सूरज की अंतिम किरणों में चमककर ऐसे दीप्त हो उठता है, मानो महिमा-मुकुट हो!

इन मनोहर पहाड़ों की तलहटी में ऐसे यात्री ने एक गाँव से उठता हुआ धुआँ तो देखा ही होगा, जिसकी काठ की छतें पेड़ों के बीच ठीक उस जगह पर चमकती हैं जहाँ पहाड़ी जमीन का नीलापन पास के इलाके की ताजा हरियाली में विलीन हो जाता है। यह एक बहुत पुराना छोटा सा गाँव है, जिसे इस प्रांत के शुरुआती दिनों में कुछ डच उपनिवेशकों ने बसाया था। यह उस जमाने की बात है जब नेक पीटर स्टॉईवेसांट (ईश्वर उसकी आत्मा को शांति प्रदान करें!) राज करना शुरू कर रहा था। वहाँ मूल प्रवासियों के कुछ मकान थे, जो कुछ सालों के भीतर बन रहे थे। ये मकान हॉलैंड से लाई गई छोटी-छोटी पीली ईंटों के बने थे। इनकी खिड़कियाँ जालीदार थीं और इनके सामने की तरफ तिकोने छज्जे थे। इन मकानों के ऊपर हवा की दिशा बतानेवाले सूचक लगे थे।

उसी गाँव में, उन्हीं मकानों में से एक में (जो सच-सच कहा जाए तो दयनीय स्थिति तक समय और मौसम के थपेड़े खाए हुए था) बहुत सालों पहले रिप वान विंकल नाम का एक सीधा-सादा नेक आदमी रहता था। यह तब की बात है जब यह प्रांत अभी भी ग्रेट ब्रिटेन के अधीन था। वह वान विंकल वंश का था। ये वही वान विंकल थे जिनका नाम पीटर स्टॉईवेसांट के बहादुरी के दिनों में मशहूर था और जो फोर्ट क्रिस्टीना के कब्जे के समय पीटर के साथ-साथ थे। लेकिन रिप वान विंकल को विरासत में अपने पुरखों का मार-धाड़वाला स्वभाव अधिक नहीं मिला था। मैंने कहा है कि वह एक सीधा-सादा, नेक आदमी था; यही नहीं, वह एक दयालु पड़ोसी और एक आज्ञाकारी जोरू का गुलाम भी था। दरअसल, जोरू का गुलाम होने की वजह से ही उसके स्वभाव में वह विनम्रता आ गई थी जिसने उसे हर जगह इतना लोकप्रिय बना दिया था; क्योंकि जो मर्द घर पर झगड़ालू औरतों के बस में रहते हैं, वे बाहर अतिदीन और समझौतावादी होते हैं। उनका स्वभाव घरेलू क्लेश की भट्ठी में तपकर निस्संदेह नरम और लचीला हो जाता है और बीवी की फटकार उन्हें धैर्य व लंबी सहनशीलता के गुण सिखाने के लिए दुनिया भर के तमाम प्रवचनों के बराबर होती है। इसलिए, एक झगड़ालू औरत को कुछ मायनों में एक सहनीय वरदान माना जा सकता है, और अगर यह सही है तो रिप वान विंकल को तिहरा वरदान प्राप्त था।

यह निश्चित है कि गाँव की तमाम नेक गृहिणियों का वह अत्यंत प्रिय था और वे, जैसाकि औरतों का स्वभाव होता है, घरेलू झगड़ों में हमेशा उसका पक्ष लेती थीं और शाम को जब गपशप का समय होता था तो वे इन मामलों पर बात करते हुए सारा दोष श्रीमती वान विंकल पर मढ़ना नहीं भूलती थीं। गाँव के बच्चे भी उसे आता देख खुशी से चिल्लाने लगते थे। वह उनके खेलों में उनकी मदद करता, उनके खिलौने बनाता, उन्हें पतंग उड़ाना और कंचे खेलना सिखाता और उन्हें भूतों, चुड़ैलों व इंडियनों के किस्से सुनाता। जब कभी वह गाँव में मटरगश्ती करता होता तो गाँव के बच्चे उसे घेरे रहते; कुछ उसका दामन पकड़कर लटक जाते तो कुछ उसकी पीठ पर चढ़ जाते और पूरे इलाके में एक भी कुत्ता उस पर भौंकता नहीं था।

रिप के स्वभाव में एक बड़ा दोष यह था कि चार पैसे मिलनेवाली किसी भी मेहनत से उसे अरुचि होती थी। इसके कारण वह किसी तुर्क के भाले जैसी लंबी छड़ी लेकर एक गीले पत्थर पर बैठ जाता और सारा दिन बिना कुछ बोले मछली का शिकार करता रहता था। भले ही उसके चारे में कोई मछली एक बार भी मुँह नहीं मारे। वह अपने कंधे पर एक शिकारी बंदूक लादे कुछेक गिलहरियाँ व कबूतर मारने के लिए घंटों जंगल और दलदल में होकर पहाड़ के ऊपर और नीचे घाटी में मारा-मारा फिरता रहता था। वह कड़ी-से-कड़ी मेहनतवाले काम में भी अपने किसी पड़ोसी का हाथ बँटाने में पीछे नहीं रहता और जब मक्का की कुटाई या पत्थर की बाड़ें बनाने का कोई देहाती मनोरंजन होता तो वह उसमें सबसे आगे रहता था। गाँव की औरतें भी उसे ऐसे छोट-मोटे कामों में लगाए रहती थीं, जिन्हें उनके कम कृपालु पति नहीं करते थे। थोड़े में कहा जाए तो रिप अपने अलावा और किसी के भी काम को करने के लिए हमेशा तैयार रहता था; लेकिन जहाँ अपने परिवार के कर्तव्य निभाने और अपने फार्म को ठीक-ठाक रखने का सवाल था तो यह उसे असंभव लगता था।

दरअसल, उसने यह कह रखा था कि उसके फार्म पर काम करने से कोई फायदा नहीं था। पूरे इलाके में यह सबसे ज्यादा दु:खदायी जमीन थी। यहाँ सबकुछ गड़बड़ हो जाता था और उसकी कोशिशों के बावजूद बिगड़ जाता था। उसकी बाड़ें हर समय टूट-टूटकर गिरती रहतीं; उसकी गाय या तो भटक जाती या फिर पत्तागोभियों के खेत में घुस जाती थी। खर-पतवार भी और कहीं इतनी तेजी से नहीं उगते थे जितनी तेजी से उसके खेतों में। बारिश भी अदबदाकर तभी होती थी जब उसे बाहर क कोई काम करना होता था। इस तरह उसकी पुश्तैनी जायदाद उसकी देख-रेख में एक-एक एकड़ करके बरबाद होती चली गई और आखिर में मक्का व आलू का एक छोटा सा खेत ही बचा। फिर भी, यह उस इलाके का सबसे बदहाल फार्म था।

उसके बच्चे भी ऐसे फटेहाल और जंगली थे मानो उनका कोई हो ही नहीं। उसका बेटा रिप उसी की शक्ल-सूरत का छोकरा था और उसमें ये लक्षण दिखते थे कि वह अपने बाप के पुराने कपड़ों के साथ उसकी आदतें भी विरासत में हासिल करेगा। वह अपने बाप का पुराना-धुराना ढीला-ढाला पाजामा पहने अपनी माँ के पीछे-पीछे किसी घोड़े के बच्चे की तरह आता-जाता दिखाई देता था। उस पाजामे को वह बड़े नखरों से एक हाथ से इस तरह उठाए रहता था, जैसे कोई नफीस औरत खराब मौसम में अपनी पोशाक के पुछल्ले को उठाए रहती है।

बहरहाल, रिप वान विंकल मूर्ख और चिकने-चुपड़े स्वभाववाले उन सुखी इनसानों में था, जो दुनिया को मजे में लेते हैं, मैदे या आटे की जैसी भी रोटी कम-से-कम सोचने या परेशानी उठाने से मिले, खाते हैं, और एक रुपए के लिए काम करने के बजाय एक पैसे पर भूखों मरना पसंद करते हैं। अगर उसके ऊपर छोड़ दिया जाता तो वह खुशी-खुशी सारी जिंदगी सीटी बजाकर काट देता; लेकिन उसकी पत्नी हमेशा उसे उसकी काहिली, उसकी लापरवाही और इस बात के लिए टोक-टोककर उसकी नाक में दम करती रहती थी कि वह परिवार को बरबादी की राह पर ले जा रहा था। उसकी जुबान सुबह, दोपहर, शाम हर समय चलती रहती और वह जो कुछ भी कहता या करता, उससे उसकी बीवी उस पर बेतहाशा बरस पड़ती थी। इस तरह की तमाम झिड़कियों का जवाब देने का रिप के पास बस एक ही तरीका था और बार-बार के इस्तेमाल से यह उसकी आदत बन गई थी। वह अपने कंधे उचकाता, सिर झटकता, ऊपर की तरफ आँखें उठाता; लेकिन कुछ बोलता नहीं था। लेकिन उसकी इस हरकत से झड़ककर उसकी पत्नी एक बार फिर चालू हो जाती और वह अपनी तमाम ताकत बटोरकर घर के बाहर निकल जाता था—जो सच कहा जाए तो एक जोरू के गुलाम के लिए एकमात्र जगह होतीहै।

रिप का एकमात्र घरेलू साथी उसका कुत्ता वुल्फ था, जो अपने मालिक की तरह ही जोरू का गुलाम था; क्योंकि श्रीमती वान उन्हें काहिली के साथी मानती थी। वह यह भी मानती थी कि अपने मालिक के बार-बार भटकने की

असली वजह भी वही था, इसलिए वह उस पर आँखें तरेरती रहती थी। यह सच भी है कि एक सम्माननीय कुत्ते को शोभा देनेवाले तमाम गुणों के अनुरूप वह इन जंगलों का सबसे साहसी कुत्ता था—लेकिन एक औरत की जुबान के सदा सक्रिय और सर्व आक्रामक आतंक के सामने कौन सा साहस टिक सकता है? वुल्फ जैसे ही घर में घुसता, उसके रोंगटे बैठ जाते, उसकी दुम जमीन पर लटक जाती या मुड़कर उसकी टाँगों के बीच घुस जाती थी। वह शहीदी अंदाज में दबे पाँव चलता और कनखियों से श्रीमती वान विंकल को देखता जाता था और झाड़ू या कलछुल के जरा सा लहराते ही वह चिल्लाता हुआ दरवाजे की तरफ भाग जाता था।

जैसे-जैसे रिप वान विंकल की वैवाहिक जिंदगी के बरस बीतते गए, उसके दिन और भी खराब होते गए। चिड़चिड़ा स्वभाव कभी उम्र के साथ नरम नहीं पड़ता और तेज जुबान ही ऐसा अकेला धारदार औजार है, जो जितना इस्तेमाल किया जाता है उतना ही तेज होता जाता है। बहुत दिनों तक तो यह हालत रही कि घर से भगाए जाने पर वह अपने आपको तसल्ली देने के लिए साधुओं, दार्शनिकों, और गाँव के अन्य निठल्ले लोगों की जमात में चला जाता था। यह एक किस्म का अनवरत क्लब था, जिसकी बैठकें एक छोटी सी सराय के सामने एक बेंच पर होती थी; जिस पर सम्राट् जॉर्ज तृतीय का अरूजाभ चित्र लगा था। यहाँ वे गरमियों के लंबे, अलसाए दिनों में छाया में बैठा करते और बड़ी व्यग्रता से गाँव में चलनेवाली अफवाहों पर बातें करते रहते था और बेसिर-पैर की अंतहीन, अलसाई कहानियाँ कहते रहते थे। लेकिन कभी-कभी वहाँ से गुजरनेवाले किसी यात्री से कोई पुराना अखबार उनके हाथों में पड़ जाता, तब उस पर चर्चा करते कि उसे सुनकर किसी भी राजनयिक के पैसे वसूल हो जाएँ। जब स्कूल मास्टर डेरिक वान ब्रमेल उस अखबार में लिखी बातें पढ़ता तो वे बहुत गंभीर होकर उन्हें सुनते थे। डेरिक वान ब्रमेल एक साफ-सुथरा और खूब पढ़ा-लिखा आदमी था, जो शब्दकोश के बड़े- से-बड़े शब्द से भी डरनेवाला नहीं था। ये लोग सार्वजनिक घटनाएँ घट जाने के कुछ महीनों बाद उन पर बड़ी समझदारी से विचार-विमर्श करते थे।

इस जमात के विचारों पर निकोलस वेडर का पूरा नियंत्रण रहता था, जो गाँव का बड़ा-बूढ़ा और उस सराय का मालिक था, जिसके दरवाजे पर वह सुबह से रात तक बैठ जाता था और बस धूप से बचने के लिए थोड़ा हट जाता था। वह एक बड़े-से पेड़ की छाया में रहता था। इस तरह, गाँववाले उसको देखकर उसी तरह से समय का ठीक-ठाक अंदाजा लगा लेते थे, जैसे धूपघड़ी को देखकर। यह सच है कि उसे लोगों ने बहुत कम बोलते सुना था। लेकिन वह हर समय बिना रुके अपना पाइप पीता रहता था। लेकिन उसके साथी (क्योंकि हर महान् व्यक्ति के साथी होते हैं) उसे खूब अच्छी तरह से समझते थे और यह भी जानते थे कि उसकी राय कैसे हासिल की जानी है। जब किसी पढ़ी या सुनाई गई बात पर वह अप्रसन्न होता था तो उसे जोर-जोर से पाइप पीते देखा जाता था। तब वह छोटे-छोटे, जल्दी-जल्दी और गुस्से से भरे कश छोड़ता था; लेकिन जब वह प्रसन्न होता था तो वह धीमे-धीमे और शांति के साथ कश खींचता और उसके हलके-हलके व शांत छल्ले फेंकता था। कभी-कभी वह पाइप को अपने मुँह से निकाल लेता और महकते धुएँ को अपनी नाक के पास उमड़ने देता था और पूर्ण अनुमोदन की मुद्रा में गंभीरता से अपना सिर हिलाता था।

इस गढ़ से भी अभागे रिप को अंत में उसकी झगड़ालू पत्नी ने भगा दिया। वह अचानक जमात की शांति को भंग कर देती और वहाँ उपस्थित लोगों को तितर-बितर कर देती थी। उस भयंकर झगड़ालू औरत की दु:साहसी जुबान से खुद यह सम्माननीय व्यक्ति निकोलस वेडर भी नहीं बच पाता था। वह उस पर सीधे-सीधे यह आरोप लगाती थी कि वह उसके पति को काहिली की आदतों के लिए बढ़ावा दे रहा है।

अंत में बेचारा रिप निराशा के गर्त में डूबकर रह गया। खेतों में मेहनत करने और अपनी पत्नी की बकबक से

बचने का उसके पास अब एक ही रास्ता बचा था कि हाथ में बंदूक ले और जंगलों में निकल जाए! यहाँ वह कभी-कभी एक पेड़ के नीचे बैठ जाता और अपने थैले में पड़ी चीजों को वुल्फ के साथ मिल-बाँटकर खत्म कर लेता था। वुल्फ को वह अपना दंड का साथी मानकर उसके साथ हमदर्दी रखताथा।

''बेचारे वुल्फ,'' वह कहता, ''तुम्हारी मालकिन तुम्हें एक कुत्ते की जिंदगी जीने को मजबूर करती है; लेकिन कोई बात नहीं मेरे बच्चे, जब तक मैं जिंदा हूँ तब तक तुम्हें ऐसे दोस्त की कमी नहीं होगी, जो तुम्हारे साथ खड़ा हो!''

यह सुनकर वुल्फ अपनी दुम हिलाता, उदास होकर अपने मालिक की शक्ल देखता और अगर कुत्ते दया कर सकते हैं तो मुझे पूरा विश्वास है कि वह इस भाव का पूरे मन से प्रतिदान करता था।

ऐसी ही एक लंबी सैर के दौरान, पतझड़ के एक सुहाने दिन, रिप अनजाने में काटस्किल पर्वत के एक सबसे ऊँचे हिस्से में जा निकला। वह अपने मनपसंद खेल यानी गिलहरी के शिकार पर निकला था और बुरी तरह से थक गया तो एक खड़ी चट्टान के ऊपर पहाड़ी वनस्पति से ढके एक हरे टीले पर धम से पसर गया। पेड़ों के बीच छुटी एक खाली जगह से वह पूरे निचले प्रदेश को देख सकता था, जो मीलों तक घने जंगली इलाके में फैला था। उसे दूर, बहुत नीचे कुछ दूरी पर शानदार हडसन दिखाई दे रही थी, जो अपने शांत लेकिन भव्य मार्ग पर बही जा रही थी। उनमें एक बैंगनी मेघ या किसी मंथर नौका के पाल का अक्स पड़ रहा था, जो यहाँ-वहाँ इसकी चमचमाती छाती पर सोई हुई थी और अंत में वह नीलाभ पर्वतीय क्षेत्र में जाकर गुम हो गई थी।

दूसरी तरफ उसने एक गहरी पहाड़ी घाटी में देखा, जो जंगली, एकाकी और बेतरतीब झाड़-झंखाड़वाली थी और उसकी तलहटी पर निकटवर्ती चट्टानों के टुकड़े भरे पड़े थे। इस तंग घाटी में डूबते सूरज की परावर्तित किरणों का प्रकाश नहीं के बराबर पहुँच रहा था। रिप थोड़ी देर तक इस दृश्य के बारे में सोचता रहा। शाम धीरे-धीरे आ रही थी; पहाड़ भी घाटियों पर अपनी लंबी नीली छायाएँ फेंकने लगे थे। उसने देखा कि उसके गाँव पहुँचने से बहुत पहले ही अँधेरा हो जाएगा और श्रीमती वान विंकल के आतंक का सामना करने की बात ध्यान में आते ही उसके मुँह से एक गहरी आह निकल गई।

वह उतरने ही वाला था कि उसे दूर से आती एक आवाज सुनाई दी—''रिप वान विंक ल! रिप वान विंकल!'' उसने चारों तरफ देखा, लेकिन उसे पहाड़ों पर अपनी एकाकी उड़ान में डैने तौलते एक कौए के सिवाय और कुछ नहीं दिखाई दिया। उसने सोचा कि शायद उसे धोखा हुआ है। और वह उतरने के लिए फिर मुड़ा। लेकिन तभी उसे फिर से वही पुकार शाम की शांत हवा में गूँजती सुनाई दी, ''रिप वान विंकल! रिप वान विंकल'' और तभी वुल्फ अपने रोंगटे खड़े करके धीमे से गुर्राने लगा और फिर सहमकर घाटी की तरफ देखता हुआ अपने मालिक की बगल में दुबक गया।

अब रिप को अपने अंदर एक अनजान-सा भय समाता महसूस हुआ। वह भी उत्सुकता से उसी दिशा में देखने लगा और उसने एक विचित्र आकृति को धीरे-धीरे चट्टानों के ऊपर आते देखा, जो अपनी पीठ पर लदी किसी चीज के बोझ से झुकी जा रही थी। वह एक मनुष्य को इस अकेली और सूनी जगह में देखकर चकित रह गया। लेकिन यह मानते हुए कि वह आस-पास का ही कोई व्यक्ति है, जिसे उसकी मदद की जरूरत है, वह तुरंत उसकी मदद करने नीचे चल दिया।

और पास पहुँचने पर तो वह इस अजनबी की असाधारण आकृति देखकर और भी चकित रह गया। वह एक नाटा, चौड़ा, बूढ़ा आदमी था, जिसके बाल मोटे और झाड़दार व दाढ़ी सफेद थी। वह पुराने जमाने के डच फैशन के कपड़े पहने था। कपड़े की जरकिन थी, जो कमर पर कसी हुई थी। कई जाँघिये थे, जिनमें से सबसे ऊपरवाला

काफी बड़ा था, उसमें दोनों तरफ कतार में बटन लगे थे और घुटनों पर चुन्नटें थीं। वह अपने कंधों पर एक मोटा पीपा उठाए हुए था, जिसमें शायद शराब भरी थी। वह रिप को इशाराकर रहा था कि वह आकर इस बोझ को उठाने में उसकी मदद करे। रिप को थोड़ा संकोच हुआ और उसे अपने इस नए परिचित पर भरोसा भी नहीं हो रहा था। फिर भी उसने हमेशा की तरह तत्परता दिखाते हुए उस अजनबी की बात मान ली। फिर वे बारी-बारी से उस पीपे को उठाते हुए एक सँकरी खाई में होकर ऊपर चढ़ने लगे, जो किसी पहाड़ी झरने का सूखा पाट था। जब वे ऊपर चढ़ रहे थे तो रिप को रह-रहकर एक लंबी गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी, जैसे दूर बादल गरज रहे हों। यह आवाज किसी गहरे दर्रे से नहीं, बल्कि ऊँची-ऊँची चट्टानों के बीच किसी दरार से आती लग रही थी, जिस तरफ उनका ऊबड़-खाबड़ रास्ता जा रहा था। वह एक पल को ठिठक गया, लेकिन फिर यह सोचकर आगे बढ़ने लगा कि पहाड़ों के ऊपर अकसर गरज के साथ बारिश होती रहती है और यह उसी की आवाज होगी। दर्रे को पार करके वे एक खाली जगह पर आए, जो किसी छोटी-सी रंगशाला की तरह थी। यह रंगशाला सीधी खड़ी चट्टानों से घिरी थी, जिनके किनारों पर निकटवर्ती पेड़ अपनी शाखाएँ फैलाए हुए थे और इस तरह वहाँ से नीले आकाश व संध्या के चमकदार मेघों की झलक ही दिखाई देती थी। इस पूरे समय रिप और उसका साथी चुपचाप मेहनत से आगे बढ़ते रहे थे; क्योंकि हालाँकि रिप को बहुत अचंभा हो रहा था कि इस जंगली पहाड़ पर शराब का पीपा लेकर आने का क्या मकसद हो सकता है! फिर भी उस अज्ञात व्यक्ति में कुछ ऐसी अजीब और अबूझ बात थी, जो भय मिश्रित विस्मय का भाव जगाती थी और पहचान बनाने से रोकती थी।

रंगशाला में प्रवेश करने पर आश्चर्य पैदा करनेवाली और भी चीजें दिखाई दीं। रंगशाला के बीचोबीच एक समतल जगह पर कुछ अजीब से दिखनेवाले व्यक्तियों की एक टोली नाइनपिन्स का खेल खेल रही थी। वे लोग अजीबो-गरीब फैशन के कपड़े पहने थे, जिनकी पेटियों में लंबी छुरियाँ लगी थीं और उनमें से अधिकतर बड़े-बड़े जाँघिये पहने थे, जो मार्गदर्शक के ही रंग के थे। उनकी सूरतें भी अजीब थीं; एक का बड़ा-सा सिर, चौड़ा मुँह और सुअरों जैसी छोटी-छोटी आँखें थीं; एक और के चेहरे पर बस नाक ही नाक दिखती थी और उसके ऊपर एक सफेद तिकोनी टोपी थी, जिस पर एक छोटी-सी लाल मुर्गे की पूँछ लगी थी। उन सभी की अलग-अलग आकार और रंग की दाढ़ियाँ थीं। उनमें से एक उनका नायक दिखाई देता था—वह एक मोटा-सा बूढ़ा भद्र पुरुष था, जिसका चेहरा मौसम के थपेड़े खाए हुए था। वह एक गोटेदार सदरी, चौड़ी पेटी और कटारी, ऊँचा टोप और पंख, लाल मोजे और ऊँची एड़ी के जूते पहने था, जिन पर गुलाब सजे थे। इस पूरी टोली को देखकर रिप को गाँव के पादरी डोमिनी वान शाइक की बैठक में लगी एक पुरानी फ्लेमिश पेंटिंग की आकृतियों की याद आ गई, जिसे बसावट के समय हॉलैंड से लाया गया था।

रिप को जो बात खास तौर पर अजीब लगी, वह यह थी कि हालाँकि ये लोग स्पष्ट तौर अपना मनोरंजन कर रहे थे, फिर भी अपने चेहरों पर वे अत्यधिक गंभीरता, अत्यधिक रहस्यपूर्ण मौन ओढ़े हुए थे और उसने इतनी व्याकुल आनंद की टोली कभी नहीं देखी थी। उस दृश्य की शांति को केवल गेंदों का शोर तोड़ रहा था, जो लुढ़काए जाने पर हर बार पहाड़ों में बिजली की कड़क की गड़गड़ाहट पैदा कर रही थीं।

जब रिप और उसका साथी उनके पास पहुँचे तो अचानक वे अपना खेल छोड़कर बुत जैसी स्थिर आँखों से उसे इस तरह घूरने लगे कि उनकी अजीब, अनोखी और निस्तेज शक्लें देखकर उसका दिल धक-धक करने लगा और उसके घुटने आपस में बजने लगे। अब उसके साथी ने पीपे में भरे तरल को बड़ी-बड़ी सुराहियों में पलट दिया और उसे इशारा किया कि वह टोली को शराब परोसे। वह डरते-काँपते हुए शराब परोसने लगा। वे बड़ी खामोशी से शराब डकार गए और फिर अपने खेल में लग गए।

धीरे-धीरे रिप का डर और विस्मय कम हो गया। यहाँ तक कि जब उस पर किसी की निगाह नहीं होती थी तो वह हिम्मत करके उस पेय को खुद भी चख लेता था। उसे इसमें काफी कुछ हॉलैंड की जिनका स्वाद मिला। वह स्वाभाविक तौर पर प्यासी आत्मा था और जल्दी ही उसे एक और घूँट भरने का लालच हो आया। एक बार के पीने से उसकी लालसा और भड़क जाती और वह इतनी जल्दी-जल्दी सुराही के पास गया कि अंत में वह मदहोश हो गया। उसकी आँखें अस्थिर हो गईं। उसका सिर धीरे-धीरे लुढ़क गया और वह गहरी नींद में सो गया।

जब वह जागा तो उसने अपने आपको उसी हरे टीले पर पाया, जहाँ से उसने सबसे पहले घाटी के बूढ़े आदमी को देखा था। उसने अपनी आँखें मलींयह एक चमकीली धुपहली भोर थी। चिड़ियाँ झाड़ियों में फुदक और चहचहा रही थीं और बाज ऊँचाई पर विशुद्ध पहाड़ी हवा को चीरता उड़ रहा था। 'सचमुच,' रिप ने सोचा, 'मैं यहाँ सारी रात तो नहीं सोता रहा।' उसने याद किया कि उसके सोने से पहले क्या-क्या हुआ था। शराब के पीपेवाला वह अजीब आदमी—पहाड़ी दर्रा—चट्टानों के बीच वह जंगली निर्जन स्थान—नाइनपिन्स खेलती वह त्रस्त टोली—सुराही—'ओह, वह सुराही! वह जालिम सुराही!' रिप ने सोचा—'क्या बहाना बनाऊँगा श्रीमती वान विंकल से मैं?'

उसने अपनी बंदूक की तलाश में आस-पास देखा, लेकिन अपनी साफ तेल लगी शिकारी बंदूक की जगह उसे एक पुरानी पथरकला बंदूक अपने पास पड़ी मिली, जिसकी नली में जंग लग चुकी थी, जिसका खटका टूट गया था और जिसके कुंदे में दीमक लग गई थी। अब उसे संदेह हुआ कि पहाड़ के उन गंभीर रसियों ने उसके साथ धोखा किया था और उसे शराब पिलाकर उसकी बंदूक लूट ली थी। वुल्फ भी गायब हो गया था, शायद वह किसी गिलहरी या तीतर के पीछे कहीं इधर-उधर निकल गया होगा! उसने सीटी बजाई और उसका नाम लेकर आवाज दी, लेकिन सब व्यर्थ गया। उसकी सीटी और पुकारने की आवाज गूँज-गूँजकर लौटती रही, लेकिन कोई कुत्ता दिखाई नहीं दिया।

उसने ठान लिया कि वह पिछली शाम की क्रीड़ावाली जगह फिर जाएगा और अगर उसे उस टोली का कोई भी आदमी मिला तो उससे अपने कुत्ते और बंदूक की माँग करेगा। वह चलने के लिए खड़ा हुआ तो उसे पता चला कि उसके जोड़ अकड़ रहे थे और उसमें वह हमेशावाली चुस्ती नहीं थी। 'ये पहाड़ी बिछौने मुझे रास नहीं आते।' रिप ने सोचा, 'और अगर इस मौज-मस्ती के कारण मैं बिस्तर से लग जाता हूँ तो श्रीमती वान विंकल मेरा जीना हराम कर देगी।' वह मुश्किल से घाटी में उतरा। उसे वह खाई दिखाई दी, जिसमें होकर वह और उसका साथी पिछली शाम ऊपर चढ़े थे। लेकिन उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक पहाड़ी धारा अब चट्टानों पर उछलती हुई इसमें बह रही थी और घाटी को अपने कल-कल स्वर से भर रही थी। बहरहाल, उसने अपना रास्ता बदल दिया और उस धारा के किनारे-किनारे भूर्ज, गंधवल्क और पहाड़ी हेजल की झाड़ियों से होकर कठिनाई से आगे बढ़ने लगा। कभी-कभी वह उन जंगली अंगूर लताओं में फँस और उलझ जाता, जो एक से दूसरे पेड़ तक अपने तंतुओं की कुंडली डाले हुए थीं और उन्होंने उसके रास्ते में एक तरह का जाल फैला रखा था।

अंत में वह उस जगह पहुँचा, जहाँ दर्रा चट्टानों में होकर रंगशाला में खुला था; लेकिन अब वहाँ इस तरह के प्रवेश मार्ग का कोई निशान नहीं रह गया था। चट्टानों ने एक ऊँची अभेद्य दीवार खड़ी की हुई थी, जिसके ऊपर से झरना हलके झाग की एक चादर-सी बनाता हुआ आ रहा था और एक चौड़े गहरे थाले में गिर रहा था। यह थाला आस-पास के जंगल की छायाओं से काला हो रहा था। तब यहाँ आकर बेचारा रिप खड़ा हो गया। उसने एक बार फिर सीटी बजाई और अपने कुत्ते को आवाज दी; लेकिन जवाब में उसे कौओं के एक झुंड की काँव-काँव ही सुनने को मिली, जो एक छुपहली खड़ी चट्टान के ऊपर से लटकते एक सूखे पेड़ के पास हवा में ऊँचाई पर किलोल कर रहे थे; और अपनी ऊँची स्थिति में सुरक्षित ये कौए जैसे नीचे देखकर बेचारे रिप की परेशानियों का

उपहास कर रहे थे। क्या किया जाए? सुबह बीतती जा रही थी और रिप नाश्ता न मिलने के कारण भूख से बेहाल था। उसे अपने कुत्ते और बंदूक के जाने का दु:ख था। वह अपनी बीवी से मिलने से डर रहा था। उसने अपने सिर को झटका दिया, जंग लगी पथरकला बंदूक को कंधे पर रखा और परेशान व चिंतित मन से अपने कदमों को घर की तरफ मोड़ दिया।

जब वह गाँव के पास पहुँचा तो उसे कई लोग मिले, लेकिन उनमें से एक भी उसकी पहचान का नहीं था, जिससे उसे थोड़ा आश्चर्य हुआ; क्योंकि वह सोचता था कि वह आस-पास के देहात में सभी को जानता था। उनके कपड़े भी उन पोशाकों से अलग तरह के थे, जिन्हें वह देखता आया था। वे लोग भी उसे उतने ही चकित होकर देख रहे थे, और जब उनकी नजर उस पर पड़ी तो उसका हाथ अपनी ठुड्डी पर चला गया और उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उसके एक फीट लंबी दाढ़ी उग आई थी!

अब वह गाँव के अंचल में प्रवेश कर चुका था। अजनबी बच्चों की एक टोली उसके पीछे-पीछे भाग रही थी। ये बच्चे उसकी खिल्ली उड़ा रहे थे और उसकी सफेद दाढ़ी की तरफ इशारा कर रहे थे। कुत्ते भी उस पर भौंक रहे थे —और उनमें से भी वह किसी को नहीं पहचानता था। पूरा गाँव ही बदल गया था। यह पहले से बड़ा हो गया था और इसकी आबादी भी बढ़ गई थी। वहाँ ऐसे-ऐसे मकानों की कतारें थीं, जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था। पुराने मकान अब गायब हो चुके थे। दरवाजों पर अजीब नाम थे, खिड़कियों पर अजीब चेहरे थे—सबकुछ अजीब था। अब उसका दिमाग चकराने लगा। उसे संदेह होने लगा कि कहीं उस पर और उसके आस-पास की दुनिया, दोनों पर ही किसी ने जादू तो नहीं कर दिया! यह तो तय था कि यह उसका अपना ही गाँव था, जिसे वह अभी परसों ही छोड़कर गया था। यहाँ वही काट्साकिल पर्वत थे—वहीं कुछ दूरी पर बहती हडसन नदी थी। यहाँ हरेक पहाड़ी और घाटी ठीक वैसी की वैसी थी, जैसी यह हमेशा रही थी। रिप बहुत परेशान हो गया—'पिछली रात की वह सुराही!' उसने सोचा, 'उसने मेरे बेचारे दिमाग को भ्रष्ट कर दिया है!'

उसे थोड़ी कठिनाई तो हुई, लेकिन उसने अपने खुद के मकान का रास्ता ढूँढ़ लिया और खामोशी से भय-मिश्रित विस्मय के साथ उसके पास पहुँचा। हर पल वह श्रीमती वान विंकल की आवाज सुनने की अपेक्षा कर रहा था। उसे अपना मकान जर्जर हालत में मिला। उसकी छत गिर गई थी, खिड़कियाँ टूट-फूट गई थीं और दरवाजे अपनी चूलों से अलग हो गए थे। वुल्फ जैसा एक मरियल कुत्ता वहाँ दुबकता फिर रहा था। रिप ने उसे नाम लेकर बुलाया, लेकिन वह पिल्ला अपने दाँत निकालकर गुर्राया और वहाँ से आगे चला गया। यह सचमुच एक बेरहम कुत्ता था।

''मेरा अपना कुत्ता ही!'' बेचारा रिप आह भरकर बोला, ''मुझे भूल गया है!''

वह उस मकान में घुसा, जिसे श्रीमती वान विंकल सचमुच साफ-सुथरा रखती थीं। अब यह खाली और उजाड़ था और यह स्पष्ट था कि इसमें कोई रहता नहीं था। यह सूनापन उसके मन में बसे बीवी के तमाम डर पर हावी हो गया। उसने जोर-जोर से अपनी बीवी और बच्चों को आवाज दी। एकांत कमरों में उसकी आवाज एक पल को गूँजी और सबकुछ फिर शांत हो गया।

अब वह फुरती से निकला और जल्दी-जल्दी अपने पुराने अड्डे यानी सराय की तरफ बढ़ा; लेकिन वह भी वहाँ नहीं थी। उसकी जगह लकड़ी की एक बड़ी जर्जर इमारत खड़ी थी। उसमें बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ थीं, जिनमें से कुछ टूटी हुई थीं और पुराने टोपों व पेटीकोटों से उनकी मरम्मत की गई थी और दरवाजे पर लिखा था—'दि यूनियन होटल, बाई जोनथन डुलिटिल'। पहले यहाँ छोटी सी शांत डच सराय के ऊपर जो बड़ा सा पेड़ साया डाले रहता था वहाँ एक खंभा था। इस खंभे के शीर्ष पर लाल लाइटकैप जैसी कोई चीज थी जिस पर एक झंडा लहरा

रहा था। इस झंडे पर सितारे और धारियाँ बनी थीं। यह सब अजीब और अबूझ था। बहरहाल, उसे निशान पर बना सम्राट् जॉर्ज का अरुणाभ चेहरा पहचान में आ गया, जिसके नीचे बैठकर उसने कितने ही शांत पाइप पिए थे। लेकिन फिर इसका भी एकदम कायाकल्प हो चुका था। लाल कोट की जगह नीला और धूमिल पीले रंग का कोट आ गया था। हाथ में राजदंड की जगह तलवार आ गई थी—सिर पर एक बाँकी टोपी शोभायमान थी और नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, 'जनरल वॉशिंगटन।'

दरवाजे पर हमेशा की तरह लोगों की भीड़ जमा थी, लेकिन रिप को उनमें से कोई भी पहचान में नहीं आ रहा था। लोगों का पूरा स्वभाव ही बदला लग रहा था। अब उनमें उस देखी-परखी मुर्दानगी और अलसाई शांति की जगह व्यस्तता, चहल-पहल और चख-चखवाला लहजा था। उसने व्यर्थ ही चौड़े मुँह, दोहरी ठुड्डी और खासे लंबे पाइपवाले साधु निकोलस वेडर की तलाश की, जो निठल्ले भाषणों की जगह तंबाकू के धुएँ के छल्लों में बोलता था। उसने स्कूल मास्टर वान ब्रमेल को ढूँढ़ा, जो किसी प्राचीन अखबार से खबरें पढ़कर सुनाया करता था। उनकी जगह एक दुबला-पतला, चिड़चिड़ा-सा आदमी जेबों में परचे लिये नागरिकों के अधिकार—चुनावों—कांग्रेस के सदस्यों—स्वतंत्रता—बंकर्स हिल—छिहत्तर के नायकों—और दूसरे शब्दों के बारे में जोरदार तकरीर कर रहा था, जो बदहवास वान विंकल के लिए बिलकुल बेबीलोन की भाषा थी।

अपनी लंबी सफेद दाढ़ी, जंग लगी शिकारी बंदूक, अपनी अनोखी वेश-भूषा और पीछे आते बच्चों व औरतों के झुंड के कारण रिप जल्दी ही सराय के इन राजनीतिज्ञों के आकर्षण का केंद्र बन गया। वे उसे घेरकर खड़े हो गए और बड़ी उत्सुकता से उसे सिर से पैर तक घूरने लगे। जो आदमी भाषण दे रहा था, वह उसके पास आकर उसे थोड़ा अलग को ले गया और उससे पूछने लगा, ''तुमने किस तरफ वोट दिया?'' रिप मूर्खों की तरह उसे घूरने लगा। एक और ठिगने किंतु व्यस्त आदमी ने उसका हाथ पकड़ खींचते हुए और पंजों के बल उचकते हुए उसके कान में पूछा, ''वह फेडरल था या डेमोक्रेट?'' रिप इस सवाल को भी नहीं समझ पाया। तभी एक बाँकी टोपी पहने एक जानकार और अपने आपको कुछ समझनेवाला बूढ़ा भद्र पुरुष वहाँ जमा लोगों को अपनी कोहनियों से दाहिने-बाएँ धकियाता हुआ भीड़ में से रास्ता बनाकर रिप वान विंकल के सामने आकर खड़ा हो गया। उसका एक हाथ छड़ी पर था और दूसरा उसने अपने कूल्हे पर रख लिया। उसकी उत्सुक आँखें और नुकीली टोपी जैसे उसकी आत्मा को ही बींध रही थी। उसने कड़ककर पूछा, ''अपने कंधे पर बंदूक और अपने पीछे भीड़ लेकर वह चुनाव में किस मकसद से आया है? और क्या वह गाँव में दंगा कराना चाहता है?''

''अफसोस, सज्जनो!'' रिप चिल्लाया। वह कुछ-कुछ हताश हो रहा था, ''मैं एक गरीब, शांत आदमी हूँ, यहाँ का मूल बाशिंदा; सम्राट् का वफादार नागरिक हूँ मैं। परमेश्वर उन्हें आशीष दे!''

तभी वहाँ खड़े लोग एक साथ चिल्लाने लगे—''टोरी है! टोरी! जासूस! शरणार्थी! धक्के मारो उसे! भगाओ यहाँ से!''

अपने आपको कुछ समझनेवाला बाँकी टोपी पहने वह आदमी बड़ी मुश्किल से स्थिति को सँभाल पाया। उसने दस गुना कड़ककर इस अनजान मुजरिम से फिर पूछा कि वहाँ क्यों आया था और किसे ढूँढ़ रहा था? गरीब रिप ने विनम्रता से उसे जवाब दिया कि उसका किसी को नुकसान पहुँचाने का कोई इरादा नहीं था, बल्कि वह तो यहाँ अपने कुछ पड़ोसियों की तलाश में आया था, जो सराय के आस-पास रहते थे।

''अच्छा, कौन हैं वे लोग? उनके नाम बताओ।''

रिप ने एक पल को सोचा और फिर पूछा, ''निकोलस वेडर कहाँ है?''

थोड़ी देर के लिए खामोशी छा गई। फिर एक बूढ़े आदमी ने पतली व सुरीली आवाज में जवाब दिया, ''निकोलस

वेडर? अरे, उसे मरे हुए तो अब अठारह साल हो गए! चर्च के कब्रिस्तान में उसके नाम की एक लकड़ी की समाधिशिला थी, जिस पर उसके बारे में सबकुछ लिखा था। लेकिन अब वह भी सड़कर खत्म हो चुकी है।''

''ब्रॉम डचर कहाँ है?''

''ओह, वह तो लड़ाई की शुरुआत में फौज में चला गया था। कुछ लोग कहते हैं कि वह स्टोने पॉइंट की चढ़ाई में मारा गया। औरों का कहना है कि वह एंटनीज नोज की तलहटी में एक तूफानी बारिश में डूब गया था। तुझे पता नहीं—वह फिर कभी वापस नहीं आया?''

''वह स्कूल मास्टर वान ब्रमेल कहाँ है?''

''वह भी लड़ाई में चला गया था। वहाँ वह बड़ा फौजी जनरल बन गया और आजकल कांग्रेस में है।''

अपने घर और दोस्तों की बाबत इन दु:खद बदलावों की बात सुनकर और अपने आप को दुनिया में इस तरह अकेला पाकर रिप का दिल डूब गया। हर जवाब पर वह भी चकराता रहा। समय के इतने बड़े अंतराल और उन मामलों ने उसे चक्कर में डाल दिया, जो उसकी समझ से परे थे : लड़ाई—कांग्रेस—स्टोनी पॉइंट! उसमें अब इतनी हिम्मत नहीं थी कि और किसी दोस्त के बारे में पूछे, बल्कि वह निराशा में चिल्लाया, ''क्या यहाँ रिप वान विंकल को कोई नहीं जानता?''

''ओह, रिप वान विंकल!'' दो-तीन लोगों ने चौंककर कहा, ''अरे, हाँ वो! वहाँ वह पेड़ से टिका रिप वान विंकल ही तो है।''

रिप ने उधर निगाह डाली तो उसे ठीक अपनी ही प्रतिमूर्ति दिखाई दी, जब वह पहाड़ों पर जा रहा था, वह स्पष्ट तौर पर उतना ही सुस्त और निश्चय ही उतना ही फटेहाल था। बेचारा रिप अब बिलकुल ही चकरा गया। उसे अपनी ही पहचान पर संदेह होने लगा कि वह वही था या और कोई आदमी था! वह अभी हैरान-परेशान हो ही रहा था कि बाँकी टोपीवाले आदमी ने उससे पूछ लिया कि वह कौन है और उसका नाम क्या है?

''ईश्वर जाने!'' बौखलाए हुए रिप ने कहा, ''मैं खुद मैं नहीं हूँ—मैं कोई और हूँ—वह वहाँ मैं खड़ा हूँ—नहीं—वह कोई और है, जो मेरे जूते पहने है! पिछली रात मैं खुद मैं था, लेकिन मैं पहाड़ पर सो गया और उन लोगों ने मेरी बंदूक बदल दी है और सबकुछ बदल दिया है, और मैं बदल गया हूँ, और मैं बता नहीं सकता कि मेरा नाम क्या है या मैं कौन हूँ!''

अब वहाँ खड़े लोग एक-दूसरे को देखने लगे, सिर हिलाने लगे, अर्थपूर्ण अंदाज में आँख मारने लगे और अपनी उँगलियों से अपने माथे को ठोंकने लगे। वहाँ यह कानाफूसी भी होने लगी कि इस बूढ़े आदमी की बंदूक ले ली जाए और उसे कोई शैतानी हरकत न करने दी जाए। यह बात उठते ही बाँकी टोपीवाला और अपने आपको कुछ समझनेवाला वह आदमी बड़ी फुरती से वहाँ से चला गया। ठीक उसी समय एक सुंदर औरत भीड़ में से रास्ता बनाती हुई सफेद दाढ़ीवाले उस आदमी की एक झलक देखने के लिए वहाँ आई। उसकी गोद में एक गोल-मटोल बच्चा था, जो रिप को देखकर डर गया और रोने लगा।

''चुप हो जाओ, रिप!'' वह चिल्लाई, ''चुप हो जाओ, बेवकूफ; यह बूढ़ा आदमी तुम्हें नहीं मारेगा।'' बच्चे का नाम, माँ के हाव-भाव, उसके लहजे, इन सभी ने मिलकर बूढ़े रिप के मन में यादों का सिलसिला उठा दिया।

''तुम्हारा नाम क्या है, मेरी बेटी?'' उसने पूछा।

''जूडिथ गार्डनियर।''

''और तुम्हारे बाप का नाम?''

''आह, बेचारे वह! रिप वान विंकल नाम था उनका, लेकिन वह बीस साल पहले अपनी बंदूक लेकर घर से

निकले थे और आज तक उनकी कोई खबर नहीं मिली। उनका कुत्ता उनके बिना ही घर आ गया था; लेकिन यह किसी को नहीं पता कि उन्होंने खुद को गोली मार ली या इंडियन उन्हें पकड़कर ले गए। तब मैं बहुत छोटी बच्ची ही थी।''

रिप को बस एक और सवाल पूछना था; लेकिन उसने अटकते हुए यह सवाल किया, ''तुम्हारी माँ क हाँ है?''

''ओह, वह भी उसके कुछ दिनों बाद मर गई; न्यू इंग्लैंड के एक फेरीवाले से टंटा करते समय उसकी एक नस फट गई।''

इस जानकारी से उसे कम-से-कम थोड़ी सी तसल्ली तो मिली। अब वह ईमानदार आदमी अपने आपको और ज्यादा नहीं रोक सका। उसने अपनी बेटी और उसके बच्चे को बाँहों में भर लिया। ''मैं तुम्हारा बाप हूँ!'' वह रो पड़ा—''कभी जो जवान रिप वान विंकल था, आज वो बूढ़ा रिप वान विंकल है। क्या कोई भी गरीब रिप वान विंकल को नहीं जानता?''

सभी लोग ठगे-से खड़े रह गए। फिर एक बुढिया डगमगाती हुई भीड़ से निकलकर आई। उसने अपने माथे पर हाथ रखा और उसके नीचे से एक पल को रिप की शक्ल देखती रही और फिर बोल पड़ी, ''अरे हाँ तो! यह तो रिप वान विंकल ही है—यह वही है। घर में तुम्हारा फिर से स्वागत है, बूढ़े पड़ोसी। अरे, तुम इन बीस सालों में कहाँ रहे?''

रिप ने अपनी कहानी जल्दी ही सुना डाली, क्योंकि ये पूरे बीस साल उसके लिए बस एक रात के बराबर थे। पड़ोसियों ने जब यह सुना तो वे उसे घूरने लगे। कुछ लोग एक-दूसरे को आँख मारते और कुछ-कुछ बोलते देखे गए और अपने आपको कुछ समझनेवाला और बाँकी टोपीवाला वह आदमी, जो खतरा टल जाने के बाद वापस मैदान में आ गया था, अपने होंठों के किनारों को भींचता हुआ अपना सिर हिलाने लगा, जिसके बाद पूरी भीड़ में लोग अपने-अपने सिर हिलाने लगे।

बहरहाल, यह ठान लिया गया कि बूढ़े पीटर वांडरडोंक की राय ली जाए, जो धीरे-धीरे सड़क पर आता दिखाई दे रहा था। वह इसी नाम के एक इतिहासकार का वंशज था, जिसने इस प्रांत का एक प्राचीनतम इतिहास लिखा था। पीटर इस गाँव का सबसे पुराना बाशिंदा था और इस इलाके की सभी अद्‌भुत घटनाओं और परंपराओं की उसे अच्छी जानकारी थी। उसे रिप की एकदम याद आ गई और उसने उसकी कहानी की अत्यंत संतोषजनक ढंग से पुष्टि की। उसने वहाँ जमा लोगों को आश्वस्त किया कि यह एक सच्चाई थी, जो उसके पूर्वज इतिहासकार के समय से चली आ रही थी कि काट्‌सकिल पर्वतों पर हमेशा ही विचित्र जीवों का डेरा रहा है। यह भी पुष्टि की गई कि इस प्रदेश और यहाँ बहनेवाली नदी का पहला अन्वेषक हेंड्रिक हडसन वहाँ हाफमून के अपने चालक दल के साथ हर बीस सालों में एक तरह की चौकसी करता था और इस तरह उसे अपने उद्यम के स्थलों को फिर से देखने का और उसके नाम से मशहूर महान् शहर और नदी पर संरक्षक के रूप में निगाह रखने का अवसर मिल जाता था। उसके पिता ने एक बार उन्हें उनकी पुरानी डच पोशाकों में पहाड़ की एक खोखली जगह में नाइनपेंस का खेल खेलते देखा था; और यह भी कि उसने खुद एक बार गरमियों में एक दोपहर बाद उनकी गेंदों की आवाज सुनी थी, जैसे दूर कहीं बिजली कड़क रही हो या बादल गरज रहे हों!

संक्षेप में कहें तो भीड़ छँट गई और लोग चुनाव के अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण कार्यों में वापस लग गए। रिप की बेटी उसे अपने साथ रहने के लिए अपने घर ले गई। उसके पास एक आरामदेह, अच्छी सजावटवाला घर था और पति के रूप में एक तगड़ा हँसमुख किसान था, जिसके बारे में रिप को याद आया कि वह उन छोकरों में से था, जो उसकी पीठ पर चढ़ जाया करते थे। जहाँ तक रिप के बेटे का सवाल है, वह पेड़ से टिककर खड़ा था, उसे

खेत पर काम में लगा दिया गया था; लेकिन उसमें वही पुश्तैनी स्वभाव दिखाई दिया कि वह अपने काम के अलावा और कुछ भी करने को तैयार रहता था।

रिप ने अब पहले की तरह घूमना शुरू कर दिया और उन्हीं आदतों को फिर से अपना लिया। जल्दी ही उसे अपने पुराने साथी मिल गए, हालाँकि वे सभी वक्त के थपेड़े खाकर बदतर हो गए थे। अब उसने नई पीढ़ी के लोगों में अपने दोस्त बनाने में ज्यादा दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी और जल्दी ही उनका बेहद प्रिय हो गया।

अब उसके पास घर में तो करने को कोई काम नहीं था और वह उस सुखद उम्र पर पहुँच गया था, जब आदमी निरापद होकर निठल्ला हो सकता है। इसलिए रिप ने एक बार फिर सराय के दरवाजे के सामने पड़ी बेंच पर अपनी जगह ले ली और उसे गाँव के एक पुराखा और 'लड़ाई से पहले के' पुराने जमाने के एक इतिहासकार के रूप में इज्जत दी जाने लगी। उसे कुछ समय लगा और फिर उसके बाद ही वह नियमित गपशप में लग सका, या उन अजीब घटनाओं को समझने-समझाने लायक हो सका, जो उसकी तंद्रा की स्थिति में घटी थीं। इस बीच एक क्रांतिकारी लड़ाई हो चुकी थी—कि प्रदेश ने पुराने इंग्लैंड का जुआ उतार फेंका था—और कि सम्राट् जॉर्ज तृतीय का नागरिक होने के बजाय वह अब संयुक्त राज्य (अमेरिका) का एक स्वतंत्र नागरिक था। दरअसल, रिप कोई राजनीतिज्ञ नहीं था। राज्यों और साम्राज्यों के बदलावों का उस पर नहीं के बराबर असर हुआ था; लेकिन एक किस्म की तानाशाही थी, जिसके तले काफी अरसे तक उसने यातना सही थी—वह थी पेटीकोट सरकार! खुशी की बात यह थी कि अब उसका खात्मा हो चुका था। अब वह श्रीमती वान विंकल के अत्याचार के भय से मुक्त होकर जहाँ चाहे आ-जा सकता था। लेकिन जब भी उसकी पत्नी का नाम लिया जाता, वह अपना सिर हिलाता, कंधे उचकाता और ऊपर की तरफ देखने लगता था; जिसे उसके भाग्य के प्रति उसकी उदासीनता या उसकी मुक्ति के प्रति उसकी प्रसन्नता भी समझा जा सकता था।

वह मि. डूलिटिल के होटल में आनेवाले हरेक अजनबी को अपनी कहानी सुनाया करता था। पहले तो यह देखने में आता था कि हर बार उसकी कहानी में कोई-न-कोई अंतर होता था, जिसका कारण निस्संदेह यह था कि वह अभी हाल ही में तो जागा था। अंत में जाकर उस कहानी ने यह रूप लिया, जिसे मैंने यहाँ वर्णित किया है और इलाके के एक-एक आदमी, औरत और बच्चे को यह रटी हुई थी। कुछ लोग तो हमेशा इसे सही न मानने का ढोंग करते थे और कहते थे कि रिप की खोपड़ी घूम गई थी और यह एक बात थी, जिस पर वह हमेशा डाँवाँडोल रहता था। लेकिन पुराने डच बाशिंदों में लगभग सभी-के-सभी इस पर पूरा विश्वास करते थे। आज भी, जब कभी वे गरमियों में दोपहर बाद काटस्किल पर तूफानी गरज सुनते हैं तो यही कहते हैं कि हेंड्रिक हडसन और उसके चालक दल के लोग नाइनपिंस का खेल-खेल रहे हैं, और जब उस इलाके के जोरू के गुलाम पतियों के लिए जिंदगी दूभर हो जाती है तो वे सब-के-सब यही कामना करते हैं कि काश, उन्हें भी रिप वान विंकल की सुराही से एक शांत करनेवाली घूँट पीने को मिल जाए!

टिप्पणी

किसी को यह संदेह हो सकता है कि उपयुक्त कहानी श्री निकर बॉकर के दिमाग में फ्रेडरिक डेर रोटबार्ट और किप-हाउजर पर्वत के बारे में फैले एक छोटे से अंधविश्वास को लेकर आई होगी; लेकिन उसने कहानी के साथ यह जो संलग्न टिप्पणी जोड़ी थी, वह यह दरशाती है कि यह एक पूर्ण सत्य है, जिसे उसने अपनी सामान्य निष्ठा के साथ वर्णित किया है—

''रिप वान विंकल की कहानी कई लोगों को अविश्वसनीय लग सकती है, लेकिन फिर भी मैं इस पर पूरा

विश्वास करता हूँ; क्योंकि मैं जानता हूँ कि हमारी पुरानी डच बस्तियों के इलाके में हैरतअंगेज घटनाएँ और दृश्य देखने को मिलते हैं। वास्तव में, मैंने हडसन के किनारे बसे गाँवों में इससे भी ज्यादा अजीब कई कहानियाँ सुनी हैं, जिनमें से सभी इतनी प्रामाणिक थीं कि उन पर संदेह नहीं किया जा सकता। मैंने पहले-पहल उसे देखा था तो वह एक कमजोर बूढ़ा आदमी था, और इतना सूझ-बूझवाला और तमाम दूसरी बातों में इतना सुसंगत था कि मैं समझता हूँ, कोई भी विवेकशील व्यक्ति इसे मानने से इनकार नहीं करेगा; यहीं नहीं, मैंने देहात के एक न्यायाधीश के सामने इस विषय पर दिया गया एक प्रमाण-पत्र देखा है, जिस पर खुद न्यायाधीश ने अपने हस्तलेख से एक क्रॉस के साथ हस्ताक्षर किए हैं। इसलिए, यह कहानी संदेह से परे है।''

—'डी. के.'

❑

महत्त्वाकांक्षी मेहमान

-मथैनिएल हॉथॉर्न

1 सितंबर की रात एक परिवार के लोग अपने अगिहाने को घेरकर बैठ गए और उन्होंने उसमें पहाड़ी जलधाराओं के साथ बहकर आई लकड़ियों, चीड़ के सूखे शंकुओं और विशाल वृक्षों की टूटी छिपटियों का अंबार लगा दिया, जो खड़ी चट्टान से गिरकर नीचे आ गई थीं। आग हहराकर चिमनी में उठी और कमरा उसकी चौड़ी लपट में दमक उठा। पिता और माँ के चेहरों पर गंभीर प्रसन्नता थी, जबकि बच्चे हँस रहे थे। सत्रह साल की सबसे बड़ी बेटी सुख की साक्षात् मूर्ति थी और सबसे गरम जगह में बैठी बुनाई कर रही बूढ़ी दादी भी सुख की साक्षात् मूर्ति थी, जो अब बुढ़ा गई थी। उन्हें पूरे न्यू इंग्लैंड की इस सबसे वीरान जगह में 'दिल के चैन की बूटी' मिल गई थी। यह परिवार ह्वाइट हिल्स के नॉच (सँकरा दर्रा) में रहता था, जहाँ हवा पूरे साल तेज और सर्दियों में भीषण रूप से ठंडी होती थी और साको की घाटी में उतरने से पहले उनकी कुटिया को अपनी समस्त नई उग्रता दे जाती थी। वे लोग एक ठंडी और खतरनाक जगह पर रहते थे, क्योंकि एक पहाड़ उनके सिरों पर इतना सीधा खड़ा था कि अकसर ही इस पर से चट्टानें लुढ़ककर नीचे आती रहतीं और बीच रात में उन्हें चौंका देती थीं।

बेटी ने अभी-अभी कोई हलका चुटकुला छोड़ा था और वे सब खुशी से भरे हुए थे, कि तभी हवा सँकरे दर्रे से होकर आई और ऐसा लगा जैसे वह उनकी कुटिया के आगे आकर ठिठकी हो और फिर चीत्कार व विलाप के स्वर में दरवाजे को भड़भड़ाकर वह घाटी में चली गई। एक क्षण को तो इसने उन्हें उदास कर दिया, हालाँकि इन ध्वनियों में कुछ भी असामान्य नहीं था। लेकिन परिवार के लोग एक बार फिर खुश हो गए, जब उन्होंने देखा कि उनकी सिटकनी को किसी मुसाफिर ने हटाया था। दरअसल इस मुसाफिर के कदमों की आहट वे उस अशुभ धमाके के बीच नहीं सुन पाए थे, जिसने उसके आगमन की सूचना दी थी और उसके अंदर आते समय विलाप किया था और फिर सिसकारता हुआ दरवाजे से आगे निकल गया था ।

हालाँकि ये लोग इतने एकांत में रहते थे, फिर भी दुनिया के साथ उनका हर दिन वार्त्तालाप होता था। नॉच का यह रूमानी दर्रा एक बड़ी धमनी है, जिसमें होकर आंतरिक वाणिज्य का जीवन-रक्त एक ओर मेन तो दूसरी ओर ग्रीन पर्वत शृंखला और सेंट लॉरेंस के तटों के बीच निरंतर स्पंदन कर रहा है। डाक-बग्घी इस कुटिया के दरवाजे के आगे हमेशा रुकती थी। अकेला राहगीर, जिसकी साथी बस उसकी लाठी होती थी, यहाँ रुककर दो-चार बातें कर लेता था, ताकि पहाड़ की दरार को पार करने या घाटी में पहले मकान तक पहुँचाने से पूर्व अकेलेपन का अहसास उस पर बेहद हावी न हो जाए। और पोर्टलैंड के बाजार की तरफ जाता हुआ जोतवान यहाँ रात काटने के लिए रुकता था और अगर वह कुँआरा हुआ तो सोने का समय हो जाने के बाद और एक घंटा बैठा रहता था, ताकि उठते समय पहाड़ीवाला का आनंद चुराने को मिल जाए। यह उस किस्म की आदिम सराय थी, जहाँ मुसाफिर केवल खाने और ठहरने के पैसे देता है, लेकिन उसे यहाँ घर जैसी वह उदारता मिलती है जिसका कोई मोल नहीं होता। तो, जब बाहरी और भीतरी दरवाजों के बीच कदमों की आहट सुनाई दी तो सारा परिवार, दादी, बच्चे और सभी ऐसे उठकर खड़े हो गए, मानो वे किसी ऐसे व्यक्ति का स्वागत करनेवाले हों, जो उनका अपना था और जिसका भाग्य उनके भाग्य से बँधा था!

दरवाजा एक नौजवान ने खोला। पहले तो उसके चेहरे पर उस व्यक्ति की व्यग्रता, लगभग निराशा के भाव

दिखाई दिए, जो रात होते समय एक जंगली और सुनसान सड़क पर अकेले यात्रा करता है, लेकिन जब उसे अपने स्वागत की उदार गर्मजोशी दिखाई दी, तो जल्दी ही उसका चेहरा चमक उठा। उसे लगा कि अपने एप्रेन से कुरसी पोंछती बूढ़ी औरत से लेकर उसकी तरफ हाथ बढ़ानेवाले नन्हे बच्चे तक, सभी से मिलने के लिए उसका दिल उछल रहा था। एक नजर और मुसकान ने अजनबी और सबसे बड़ी लड़की के बीच एक मासूम पहचान कायम कर दी।

''वाह! यह आग सही चीज है!'' वह चिल्लाया, ''खासकर तब जब इसके चारों तरफ इतने खुशमिजाज लोगों का घेरा है! मैं तो बिलकुल सुन्न हो गया हूँ, क्योंकि नॉच तो बिलकुल किसी बड़ी धौंकनी की नली की तरह है। बार्टलेट से यहाँ तक पूरे रास्ते इसने मेरे मुँह पर भयंकर थपेड़े मारे हैं।''

''तो तुम वरमांट की तरफ जा रहे हो?'' घर के मालिक ने नौजवान के कंधों से एक हलका थैला उतारने के लिए हाथ बढ़ाते हुए कहा।

''हाँ, बार्लिंगटन को, और उससे भी बहुत आगे।'' नौजवान ने जवाब दिया।

''आज रात मुझे ईथन क्रॉफर्ड में होना था, लेकिन इस तरह की सड़क पर पैदल चलनेवाला पिछड़ ही जाता है। कोई बात नहीं; क्योंकि जब मैंने यह बढ़िया आग और आप सबके खुशमिजाज चेहरों को देखा तो मुझे लगा कि आपने जान-बूझकर इसे मेरे लिए जलाया था और मेरे आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। इसलिए मैं आप लोगों के बीच में बैठूँगा और यहाँ घर जैसा अनुभव करूँगा। ''

इस बेतकल्लुफ अजनबी ने अभी आग के पास अपनी कुरसी खींची ही थी कि बाहर एक आवाज सुनाई दी, जैसे किसी के भारी कदम की आहट हो! फिर यह आवाज पहाड़ की खड़ी ढलान की तरफ बढ़ गई, जैसे किसी ने लंबे-लंबे और तेज डग बढ़ाए हों और कुटिया को पार करने में उसने ऐसी छलाँग लगाई कि सामनेवाली खड़ी चट्टान से टकरा गई। परिवार के लोगों ने अपनी साँस थम ली, क्योंकि वे इस आवाज को पहचानते थे, लेकिन उनके मेहमान की साँस अनायास ही थाम गई।

''बूढ़े पहाड़ ने हम पर इस डर से एक पत्थर फेंका है कि हम उसे भूल न जाएँ।'' कुटिया के मालिक ने अपने आपको सँभालते हुए कहा, ''वह कभी-कभी अपना सिर हिलाता है और नीचे आने की धमकी देता है, लेकिन हम पुराने पड़ोसी हैं और कुल मिलाकर हमारे बीच अच्छी सहमति है। इसके अलावा, अगर यह सचमुच नीचे आने ही लगे तो हमारे पास शरण लेने के लिए पास ही एक अच्छी जगह है।'' चलिए, अब हम यह मान लेते हैं कि अजनबी ने भालू के मांस का भोजन कर लिया और अपने सहज प्रफुल्ल व्यवहार के बल पर उस पूरे परिवार के साथ उदारतापूर्ण संबंध स्थापित कर लिया था। इस तरह वे लोग आपस में इस तरह खुलकर बात कर रहे थे, जैसे वह उनकी पहाड़ी नस्ल का ही हो। वह अभिमानी किंतु सज्जन था और अमीर व बड़े लोगों के बीच दंभी और खामोश बनकर रहता था; लेकिन वह कुटिया के नीचे दरवाजे के आगे अपना सिर झुकाने और गरीब आदमी के अगिहाने पर एक भाई या बेटे की तरह जाने को हमेशा तैयार रहता था। नॉच के इस घर-बार में उसे भावनाओं की गरमी और सरलता, न्यू इंग्लैंड की व्याप्त बुद्धिमत्ता और देसी किस्म की एक कविता देखने को मिली थी, जिसे उन्होंने पर्वत-शिखरों और दरारों से अपने रूमानी व खतरनाक आवास की दहलीज पर ही तब एकत्र किया था, जब उन्होंने इस बारे में सोचा भी नहीं था। नौजवान ने दूर-दूर और अकेले सफर किया था; वास्तव में उसका पूरा जीवन ही एक एकाकी पथ रहा था, क्योंकि अपने स्वभाव की ऊँची सतर्कता के साथ उसने अपने आपको उन लोगों से अलग रखा था, जो अन्यथा उसके साथी होते। यह परिवार भी हालाँकि उदार और सत्कार करनेवाला था, फिर भी उनमें आपस में एकता की वह चेतना और शेष दुनिया से अलगाव का वह बोध था, जिसके अनुसार प्रत्येक घर में

अभी भी एक ऐसा पवित्र स्थान होना चाहिए, जहाँ कोई अजनबी न घुस सके। लेकिन इस शाम एक पैगंबरी सहानुभूति ने उस सुसंस्कृत और शिक्षित नौजवान को इन सरल पर्वतवासियों के आगे अपने दिल की बात कहने को बाध्य कर दिया था, और उन्हें बाध्य कर दिया था कि वे उसी निर्बंध आत्म-विश्वास के साथ उसे जवाब दें। और ऐसा ही होना भी चाहिए था। एक समान निर्यात का बंधन क्या जन्म के बंधन के मुकाबले अधिक घनिष्ठ संबंध नहीं है?

नौजवान के चरित्र का रहस्य तो एक ऊँची और अमूर्त महत्त्वाकांक्षा में निहित था। वह एक गुमनाम जिंदगी जीना तो सहन कर सकता था, लेकिन कब्र में भुला दिया जाना नहीं। गहन इच्छा ने आशा का रूप ले लिया था और देर तक सहेजी गई आशा एक निश्चिंतता की तरह हो गई थी कि इस समय वह जो गुमनामी में सफर कर रहा था तो एक महिमा उसके पूरे मार्ग को प्रकाशित करेगी। हालाँकि शायद उस दौरान नहीं, जब वह यात्रा कर रहा होगा। लेकिन उसकी विद्यमानता में वे उसके कदमों की उस चमक को देखेंगे, जो कमतर महिमाओं के मद्धिम पड़ने के साथ आलोकित होगी और वे यह स्वीकार करेंगे कि एक प्रतिभावान् व्यक्ति अपने पालने से निकलकर अपनी कब्र तक गया था और उसे पहचाननेवाला कोई नहीं था।

''अभी तक...'' अजनबी ने जोर से कहा। उसके गाल दहक रहे थे और उसकी आँखें उत्साह से चमक रही थीं —''अभी तक मैंने कुछ भी नहीं किया है। अगर कल मुझे इस धरती से गायब होना पड़े तो कोई भी मेरे बारे में इतना जाननेवाला नहीं होगा, जितने आप लोग—कि एक अनाम युवक दिन ढलने पर साको की घाटी से आया और रात में उसने आपके सामने अपने दिल की बात कही और सूर्योदय होने तक नॉच से निकल गया और फिर वह कभी दिखाई नहीं दिया। एक बंदा भी नहीं पूछेगा, 'कौन था वह? कहाँ गया वह यायावर?' लेकिन मैं तब तक नहीं मर सकता जब तक अपनी नियति को प्राप्त न कर लूँ; फिर मौत भले ही आ जाए; मैं अपना स्मारक बना चुकूँगा।''

सहज भावना का एक निरंतर प्रवाह अमूर्त कल्पना के बीच वेग से चलता रहा, जिससे वह परिवार इस नौजवान की भावनाओं को समझ सका। हालाँकि ये उनकी अपनी भावनाओं से बहुत भिन्न थीं। हास्यास्पद समझदारी के साथ वह उस आवेश पर झेंपकर रह गया, जिसमें वह धकेल दिया गया था।

''तुम मुझ पर हँस रही हो!'' उसने सबसे बड़ी बेटी का हाथ लेकर खुद भी हँसते हुए कहा, ''तुम मेरी महत्त्वाकांक्षा को मूर्खतापूर्ण समझ रही हो, मानो मैं वाशिंगटन पर्वत की चोटी पर ठिठुरकर अपनी जान देने जा रहा हूँ, जिससे कि आस-पास के देहाती इलाके के लोग मुझे देखें! और सचमुच एक व्यक्ति के बुत के लिए यह एक बढ़िया आधारस्तंभ होगा।''

''बेहतर तो यह है कि यहाँ इस आग के पास बैठा जाए।'' लड़की ने शरमाते हुए कहा, ''और आराम से और संतुष्ट रहा जाए, हालाँकि कोई हमारे बारे में नहीं सोचता।''

''मैं सोचता हूँ,'' उसके पिता ने चिंतन के एक दौर के बाद कहा, ''नौजवान जो कह रहा है, उसमें कोई सहज बात नहीं है। और अगर मेरा दिमाग उस तरफ गया होता तो मैंने भी ठीक ऐसा ही महसूस किया होता। यह अजीब बात है बेगम, कि उसकी बातों ने मेरे दिमाग को ऐसी बातों की तरफ घुमा दिया है, जो निश्चित तौर पर कभी होनेवाली नहीं हैं।''

''शायद हो जाएँ,'' पत्नी ने कहा, ''क्या हजरत यह सोच रहे हैं कि विधुर हो जाने के बाद वह क्या करेंगे?''

''नहीं, नहीं!'' झिड़की भरी उदारता के साथ इस विचार क को खारिज करते हुए आदमी ने जोर से कहा, ''जब मैं तुम्हारी मौत के बारे में सोचता हूँ एस्तर, तो मैं अपनी मौत के बारे में भी सोचता हूँ। लेकिन मैं यह कामना कर

रहा था कि हमारे पास बार्टलेट या बेतहहेम या लिटिलटन या ह्वाइट माउंटेन्स के आस-पास किसी दूसरे कस्बे में एक अच्छा सा फार्म होता, लेकिन वहाँ नहीं, जहाँ ये लुढ़ककर हमारे सिरों पर आ पाते। मैं तो यही चाहता कि मैं अपने पड़ोसियों के साथ अच्छी स्थिति में होता और सामंत कहलाता और एक-दो सत्र के लिए जनरल कोर्ट में भेजा जाता; क्योंकि एक सीधा-सादा, ईमानदार आदमी वहाँ किसी वकील जितना ही अच्छा काम कर सकता है। और जब मैं काफी बूढ़ा हो जाता और तुम बुढिया हो जातीं, जिससे कि हम देर तक अलग नहीं रहते, तो मैं अपने बिस्तर पर सुख से मर सकता और तुम सबको अपने चारों तरफ रोता-बिलखता छोड़ जाता। मेरी कब्र पर स्लेट का पत्थर भी मेरे लिए उतना ही ठीक रहता, जितना संगमरमर और उस पर केवल मेरा नाम व उम्र और किसी भजन का एक छंद; और ऐसा कुछ लिखा होता जिससे लोगों को यह पता चलता कि मैं एक ईमानदार आदमी बनकर जिया और एक ईसाई की मौत मरा।''

''यह बात!'' अजनबी बोला, ''स्मारक की इच्छा करना हमारे स्वभाव में होता है। चाहे वह स्लेट हो या संगमरमर, चाहे ग्रेनाइट का खंभा और चाहे मनुष्य के सार्वभौमिक हृदय में एक गौरवशाली स्मृति हो।''

''आज हम एक अजीब स्थिति में हैं।'' पत्नी ने आँखों में आँसू भरकर कहा, ''लोग कहते हैं कि जब लोगों के मन इस तरह भटकने लगते हैं तो यह बात का सूचक होता है। जरा बच्चों की बातें सुनो!''

और वे सुनने लगे। छोटे बच्चों को एक-दूसरे कमरे में सुलाया गया था, लेकिन बीच में एक खुला दरवाजा था, ताकि उन्हें आपस में घुट-घुटकर बातें करते सुना जा सके। लगता था, उन सभी को अगिहाने से चारों तरफ घेरा डाले लोगों से छूत लग गई थी और वे एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर सिरफिरी कामनाएँ कर रहे थे और बाल-सुलभ योजनाएँ बना रहे थे, कि जब वे बड़े हो जाएँगे तो क्या करेंगे! अंत में एक छोटे लड़के ने अपने भाइयों और बहनों से कहने के बजाय अपनी माँ क को पुकारा—

''मैं तुम्हें बताऊँगा माँ, कि मैं क्या चाहता हूँ?'' वह चिल्लाया, ''मैं चाहता हूँ कि तुम और पापा और दादी, और हम सभी, और अजनबी भी अभी यहाँ से निकलें और चलकर 'फ्लूम' के थाले से थोड़ा पिएँ।''

वे लोग बच्चे के इस खयाल पर हँसे बिना नहीं रह सके कि सब गरम बिस्तर छोडें और एक खुशनुमा आग से हटकर फ्लूम के थाले पर जाएँ, जो नॉच में काफी अंदर खड़ी चट्टान के ऊपर बहनेवाला झरना है।

लड़के ने अभी अपनी बात पूरी की ही थी कि एक छकड़ा सड़क पर खड़खड़ाता हुआ आया और दरवाजे के आगे एक पल को रुका। उसमें दो-तीन आदमी सवार लगते थे, जो समवेत स्वर में एक गीत गा रहे थे। उनका यह बेसुरा गीत चट्टानों के बीच टूटे सुरों में गूँजकर रह गया, जबकि वे गायक अभी इसी बात पर हिचकिचा रहे थे कि अपना सफर जारी रखें या रात यहाँ बिताएँ!

''पापा,'' लड़की बोली, ''वे लोग आपका नाम लेकर बुला रहे हैं।''

लेकिन नेक आदमी को संदेह था कि उन्होंने सचमुच उसे बुलाया भी था। वह यह नहीं दिखाना चाहता था कि वह अपने घर में मेहमानों को बुलाकर कमाई करने को उतावला था। इसलिए वह दौड़कर दरवाजे पर नहीं पहुँचा; और जल्दी ही चाबुक की फटकार पड़ी और वे मुसाफिर उसी तरफ गाते-हँसते नॉच में चले गए, हालाँकि उनका संगीत और खुशी पहाड़ के अंत:स्थल से उदासी में टकराकर लौट आए।

''ऐ माँ!'' लड़का फिर चिल्लाया, ''वे लोग हमें फ्लूम तक ले जा रहे थे।''

एक बार फिर वे लोग रात में मटरगश्ती करने की बच्चे की हठी कल्पना पर हँस पड़े। लेकिन तभी ऐसा हुआ कि एक हलकी बदली लड़की की आत्मा के ऊपर होकर निकल गई। उसने गंभीर होकर आग को देखा और एक साँस खींची, जो आह जैसी ही थी। हालाँकि उसने इसे रोकने की थोड़ी कोशिश की थी, फिर भी यह जबरन निकल गई।

फिर चौंककर और शरमाते हुए उसने वहाँ बैठे लोगों पर तेजी से नजर डाली, मानो उन्होंने उसके दिल के अंदर झाँक लिया था। अजनबी ने उससे पूछा कि वह किस बारे में सोच रही थी?

''किसी भी बारे में नहीं।'' उसने उदासी में मुसकराते हुए कहा, ''ओह, मेरे अंदर हमेशा से यह प्रतिभा रही है कि मैं दूसरे लोगों के मन की बात जान लेता हूँ।'' उसने आधी गंभीरता से कहा, ''क्या मैं तुम्हारे मन की बात बताऊँ? क्योंकि मुझे पता है कि जब कोई जवान लड़की एक गरम अगिहाने के पास बैठकर काँपती है और अपनी माँ की बगल में बैठकर अकेलेपन की शिकायत करती है, तो क्या सोचना चाहिए! क्या मैं इन भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करूँ?''

''अगर इन्हें शब्दों में ढाल दिया गया तो फिर ये एक लड़की की भावनाएँ नहीं रह जाएँगी।'' पहाड़ी अप्सरा ने हँसते हुए, लेकिन अजनबी से नजर बचाते हुए कहा।

यह सब अलग से कहा गया था, जो इतना पवित्र था कि स्वर्ग का एक अंकुर पनप रहा था, जो इतना पवित्र था कि स्वर्ग में ही प्रस्फुटित हो सकता था, क्योंकि यह पृथ्वी पर परिपक्व नहीं हो सकता था; क्योंकि औरतें अजनबी की जैसी विनीत गरिमा की पूजा करती हैं और अभिमानी, चिंतनशील, फिर भी उदार जीव अकसर इस लड़की की जैसी सरलता से मोहित हो जाते हैं! लेकिन जब वे कोमल स्वरों में बात कर रहे थे और वह एक कुआँरी कन्या की लजीली लालसाओं और कमनीय छायाओं को देख रहा था, तो नॉच में बहती हवा और भी गहरी तथा विषादपूर्ण आवाज करने लगी। कल्पनाशील अजनबी के शब्दों में यह झँझावात की उन आत्माओं के समवेत सुर की तरह थी, जो इंडियनों के पुराने जमाने में इन पर्वतों में निवास करती थीं और उनकी ऊँचाइयों और खोहों को एक पवित्र क्षेत्र बनाए हुए थीं। सड़क पर ऐसा क्रंदन था, जैसे कोई जनाजा निकल रहा हो! इस उदासी को तोड़ने के लिए परिवार के लोग अपनी आग पर तब तक चीड़ की डालियाँ फेंकते रहे जब तक सूखी पत्तियाँ चटकने नहीं लगीं और उसमें से लपटें उठने लगीं। इस तरह एक बार फिर वहाँ शांति और विनीत सुख का वातावरण बन गया। रोशनी उनके पास प्यार से मँडराने लगी और उन सभी को दुलराने लगी। उधर अपने न्यारे बिस्तर से झाँकते बच्चों के नन्हे चेहरे थे और इधर पिता की शक्तिशाली काठी थी, माँ की नम्र और सतर्क मुखाकृति थी, उच्च बुद्धिजीवी नौजवान था, होनहार लड़की थी और सबसे गरम जगह में अभी भी बुनाई करती नेक बूढ़ी दादी थी।

बूढ़ी औरत ने बुनाई करते-करते ही नजर उठाकर देखा और इस बार बोलने की बारी उसकी थी। लेकिन उसकी उँगलियाँ चलती ही रहीं।

''बूढ़े लोगों के अपने खयाल होते हैं।'' वह बोली, ''जैसे जवानों के होते हैं। तुम लोग तब से कामनाएँ कर रहे हो और योजनाएँ बना रहे हो और अपने दिमाग को एक से दूसरी चीज पर दौड़ा रहे हो, और अब तुमने मेरे दिमाग को भी भटका दिया है। अब, कोई बूढ़ी औरत किस चीज की कामना कर सकती है, जबकि वह एक-दो कदम के बाद ही अपनी कब्र में जानेवाली है? बच्चों, जब तक मैं तुम्हें बता नहीं दूँगी, यह रात-दिन मेरा पीछा करती रहेगी।''

''कौन सी बात, माँ?'' पति-पत्नी एकदम बोल पड़े ।

फिर बूढ़ी औरत ने इस रहस्यमय अंदाज में अपनी बात कही कि वे लोग आग के और भी पास सिमट आए। बूढ़ी औरत ने उन्हें बताया कि उसने अपने कफन वगैरह का इंतजाम कई साल पहले कर लिया था। इनमें उम्दा सूती कपड़े की चादर थी, मलमल के गुलूबंद के साथ एक टोपी थी और सभी कुछ इतना बढ़िया था कि उनसे बढ़िया कपड़े उसने अपनी शादी के दिन के बाद से कभी नहीं पहने थे। लेकिन आज की रात एक पुराना अंधविश्वास अजीब तरीके से उसे फिर याद आया था। उसकी जवानी के दिनों में यह कहा जाता था कि अगर लाश के साथ कुछ गड़बड़ हो जाए, अगर खाली गुलूबंद ही चिकना न हो तथा टोपी ही सही ढंग से न लगी हो तो लाश ताबूत में

और मिट्टी के ढेलों के नीचे अपने ठंडे हाथ उठाकर इन्हें ठीक करती है। इस खयाल से ही वह परेशान हो उठी।
''ऐसी बातें मत कीजिए, दादी।'' लड़की ने काँपते हुए कहा।
''अब,'' बूढ़ी औरत ने पूरी ईमानदारी के साथ कहना जारी रखा, हालाँकि वह अपनी ही मूर्खता पर अजीब ढंग से मुसकरा रही थी, ''मेरे बच्चो, मैं चाहती हूँ कि जब तुम्हारी माँ को कपड़े पहना दिए जाएँ और ताबूत में लिटा दिया जाए तो तुम में से कोई—मैं चाहती हूँ कि तुम में से कोई मेरे चेहरे के ऊपर आईना पकड़कर रखे। कौन जाने, मैं आईने में अपने ऊपर नजर डालूँ और देखूँ कि सबकुछ ठीक-ठाक है या नहीं!''
''बूढ़े और जवान, हम कब्रों और स्मारकों के सपने देखते हैं!'' अजनबी नौजवान बुदबुदाया, ''मुझे यह हैरानी होती है कि जब जहाज डूब रहा होता है और नाविक, अज्ञात और गुमनाम, उस विशाल और अनाम कब्र यानी समुद्र में एक साथ समाधिस्थ होनेवाले होते हैं, तो उन्हें कैसा महसूस होता है?''

एक पल को बूढ़ी औरत के खौफनाक खयाल ने उसके श्रोताओं को इतना तन्मय कर दिया कि बाहर रात में झंझावात के गर्जन जैसी उठती एक आवाज व्यापक, गहरी और भयंकर हो गई और उन्हें पता भी नहीं चला। वह मकान और उसके अंदर की हर चीज थरथराने लगी। ऐसा लगा जैसे पृथ्वी की बुनियाद ही हिल गई हो, जैसे यह भयंकर आवाज (प्रलय के दिन की) अंतिम तुरही का नाद हो! जवानों और बूढ़ों ने एक बदहवास दृष्टि से एक-दूसरे को देखा और एक क्षण को उनके चेहरे पीले पड़ गए और वे डरकर रह गए। न वे कुछ बोल पाए और न ही उनमें हिलने-डुलने की ताकत रही। फिर उनके होंठों से एक साथ यही चीख निकली—
''पहाड़ गिर रहा है ! पहाड़ गिर रहा है!''

ये बेहद मामूली से शब्द उस महा विपदा की भयावहता का संकेत तो दे सकते हैं, लेकिन उसकी सही तसवीर नहीं पेश कर सकते। ये प्रभावित लोग अपनी कुटिया से भागे और उन्होंने अपनी समझ से एक सुरक्षित जगह में शरण ले ली, जहाँ इस तरह की आपात् स्थिति का विचार करके एक तरह का अवरोधक खड़ा कर दिया गया था। लेकिन अफसोस! उन लोगों ने अपनी सुरक्षित स्थली को छोड़ दिया था और सीधे विनाश की राह में दौड़ गए थे। पहाड़ का एक पूरा-का-पूरा हिस्सा तबाही के एक विशाल झरने की तरह नीचे आ गया। मकान तक पहुँचने से ठीक पहले यह दो शाखाओं में बँट गया। इसने वहाँ एक भी खिड़की को नहीं कँपाया, बल्कि पूरे इलाके को ही अपनी चपेट में ले लिया। सड़क को अवरुद्ध कर दिया। इस भयंकर शैलपात की गरजदार आवाज पहाड़ों में गूँजनी बंद होने से बहुत पहले ही मौत का दर्द सहा जा चुका था औार प्रभावित लोग शांत थे। उनके शव कभी नहीं मिले।

अगली सुबह लोगों ने देखा, हलका धुआँ कुटिया की चिमनी से निकलकर ऊपर पहाड़ पर होता हुआ उठ रहा था। अंदर अगिहाने में अभी आग सुलग रही थी और उसके चारों तरफ एक घेरे में कुर्सियाँ रखी थीं, मानो इस घर में रहनेवाले बस पहाड़ गिरने से हुई तबाही को देखने गए हों और अपने चमत्कारी ढंग से बच जाने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद कहने को जल्दी ही लौट आएँगे! वे सभी अलग-अलग निशानियाँ छोड़ गए थे, जिन्हें देखकर इस परिवार को जाननेवालों ने हरेक के लिए आँसू बहाए। उनका नाम किसने नहीं सुना है? यह कहानी दूर-दूर तक सुनाई गई है और हमेशा इन पहाड़ों की गाथा बनी रहेगी। कवियों ने उनकी ख्याति के गीत गाए हैं।

कुछ ऐसी परिस्थितियाँ थीं, जिनसे कुछ लोग यह मानने को बाध्य हो गए कि एक अजनबी का इस कुटिया में उस भयंकर रात में स्वागत-सत्कार हुआ था और उसमें रहनेवाले तमाम व्यक्तियों के साथ ही वह उस आपदा का शिकार हो गया था। लेकिन दूसरे लोगों का कहना था कि इस तरह के अनुमान के लिए पर्याप्त आधार नहीं थे। अफसोस लौकिक अमरता के सपनेवाले अति उत्साही युवक के लिए! उसका नाम और व्यक्तित्व बिलकुल

अज्ञात, उसका इतिहास, उसकी जीवन-शैली, उसकी योजनाएँ, कभी न सुलझनेवाला रहस्य, उसकी मृत्यु और उसका अस्तित्व भी उतना ही संदेहपूर्ण! किसको थी मृत्यु के उस क्षण की पीड़ा?

❑

शराब का पीपा

-एडगर ऐलन पो

फोर्टूनाटो के दिए हजार घाव तो मैं बहुत अच्छी तरह से सह गया था, लेकिन उसने मेरा अपमान करना शुरू कर दिया तो मैंने भी बदला लेने की ठान ली। आप मेरा स्वभाव तो जानते ही हैं, लेकिन आप यह नहीं सोचेंगे कि मैंने उसे खुलकर कोई धमकी दी। अंत में मेरा बदला पूरा हो जाएगा, यह बात निश्चित तौर पर तय हो गई थी। लेकिन इसे जिस निश्चितता के साथ तय किया गया था, उसमें जोखिमवाली कोई गुंजाइश नहीं रह गई थी। मुझे न केवल सजा देनी थी, बल्कि इस तरह सजा देनी थी कि जिसमें खुद मेरे लिए कोई खतरा न हो। कोई गलती तब अनसुधरी रह जाती है जब इसका दंड इसे सुधारनेवाले पर हावी हो जाता है। यह तब भी उतनी ही अनसुधरी रह जाती है जब बदला लेनेवाला गलती करनेवाले के सामने अपने आपको इस रूप में पेश करने में असफल रह जाता है।

यह समझ लेना चाहिए कि मैंने अपनी कथनी या करनी से फोर्टूनाटो को ऐसा कोई कारण नहीं दिया था कि वह मेरी सदाशयता पर संदेह करता। मैं अपने स्वभाव के अनुरूप उसके मिलने पर मुसकराता था और वह यह नहीं समझ पाया कि अब मेरा मुसकराना उसके वध के खयाल पर होता था।

इस फोर्टूनाटो की एक कमजोरी थी, हालाँकि दूसरे मामलों में वह एक सम्माननीय और भयानक आदमी था। उसे शराब का पारखी होने पर गर्व था। बहुत कम इतालवियों में सच्ची पारखी भावना होती। उनका अधिकांश समय तो अंग्रेज और ऑस्ट्रियाई लखपतियों को ठगने के लिए सही समय और अवसर की तलाश में लग जाता है। चित्रकारी और रत्नों के काम में तो फोर्टूनाटो अपने देशवासियों की तरह ही अधकचरा था, लेकिन पुरानी शराबों के मामले में वह ईमानदार था। इस मामले में मैं उससे अलग नहीं था। मैं खुद इतालवी शराबों को परखने में माहिर था। और जब भी मुझे मौका मिलता, मैं ढेरों शराब खरीद लेता था।

मेले की धूमधाम के बीच एक शाम झुटपुटे में मेरी भेंट मेरे दोस्त से हुई। वह मुझे बेहद गर्मजोशी से मिला, क्योंकि वह खूब पिए हुए था। वह बेढब कपड़े पहने था। वह अलग-अलग रंग की धारियोंवाली तंग पोशाक पहने था और उसके सिर पर तिकोनी टोपी और घंटियाँ थीं। उसे देखकर मुझे इतनी खुशी हुई कि मैं सोचने लगा कि मुझे उसका हाथ कभी नहीं मरोड़ना चाहिए था।

मैंने उससे कहा, ''प्यारे फोर्टूनाटो, अच्छा हुआ तुम मिल गए। आज तुम कितने अच्छे लग रहे हो! लेकिन आज मुझे शराब का एक पीपा मिला है, जो आमोंतीलादो बताई गई है और मुझे संदेह हो रहा है।''

''कैसे?'' वह बोला, ''आमोंतीलादो? एक पीपा? असंभव! वह भी मेले के बीच में?''

''मुझे संदेह है।'' मैंने जवाब दिया, ''और मैंने कभी ऐसी बेवकूफी भी कि तुमसे सलाह लिये बिना ही आमोंतीलादो की पूरी कीमत भी चुका दी। तुम मिले ही नहीं और मुझे डर था कि कहीं हाथ से यह सौदा न निकल जाए।''

''आमोंतीलादो!''

''मुझे संदेह है।''

''आमोंतीलादो!''

''और मुझे अपना संदेह दूर करना है।''

''आमोंतीलादो!''

''तुम तो व्यस्त हो, इसलिए मैं लूकेसी के पास जा रहा हूँ। अगर कोई पारखी है तो बस वही है। वह मुझे बता

देगा।''
''लूकेसी तो आमोंतीलादो और शेरी में भी फर्क नहीं कर सकता।''
''और फिर भी कुछ बेवकूफ समझते हैं कि वह शराब का स्वाद परखने के मामले में तुम्हारे जितना ही माहिर है।''
''आओ, चलें।''
''किधर?''
''तुम्हारे भूमिगत सुरागार में।''
''नहीं मेरे दोस्त, मैं तुम्हारी भलमनसाहत से धोखा नहीं करूँगा। मैं समझता हूँ, तुम्हें कोई काम है। लूकेसी—''
''मुझे कोई काम नहीं है, आओ।''
''नहीं, मेरे दोस्त। बात काम की नहीं है। मैं देख रहा हूँ कि भयंकर जुकाम तुम्हें परेशान किए हुए है। सुरागार बेहद सीले हैं। उन पर नाइटर (शेरा) की पपड़ी जमी है।''
''कुछ भी हो, चलो चलें। जुकाम तो बिलकुल मामूली है। आमोंतीलादो! तुम्हारे साथ ठगी हुई है, और जहाँ तक लूकेसी का सवाल है, वह तो शेरी और आमोंतीलादो में भी फर्क नहीं कर सकता ।''

यह कहते हुए फोर्टूनाटो ने मेरा हाथ पकड़ लिया। मैंने काले रेशम का मुखौटा पहना और लबादे को अपने शरीर पर समेटकर ओढ़ा और कोई प्रतिरोध नहीं किया, जब वह मुझे जल्दी-जल्दी मेरी हवेली की तरफ ले जाने लगा।

मेरे घर में उस समय कोई भी नौकर नहीं था। वे इस समय एक सम्मान में खुशियाँ मनाने के लिए गायब हो गए थे। मैंने उनसे कह दिया था कि मैं सुबह तक नहीं लौटूँगा और उन्हें साफ-साफ आदेश दे दिए थे कि वे यहाँ से हिलें नहीं। मुझे अच्छी तरह पता था कि मेरे इतना कह देने भर से वे सब-के-सब मेरी पीठ फिरते ही फौरन वहाँ से रफू-चक्कर हो जाएँगे।

मैंने उनके चिरागदानों से दो मशालें लीं और उनमें से एक फोर्टूनाटो को दे दी। फिर मैं कई कमरों से होते हुए उसे मेहराबदार दरवाजे पर ले गया, जिससे सुरागार में पहुँचा जाता था। मैं एक लंबी और घुमावदार सीढ़ी से नीचे उतरने लगा और उससे मैंने अनुरोध किया कि वह मेरे पीछे-पीछे सावधानी से आए। अंत में हम नीचे पहुँचे और मोंत्रेसर के भूमिगत सुरागारों की सीली जमीन पर इकट्ठे खड़े हो गए।
मेरे दोस्त की चाल में लड़खड़ाहट थी और उसकी टोपी के ऊपर लगी घंटियाँ उसके चलने से बज रही थीं।
''पीपा?'' वह बोला।
''वह और आगे है।'' मैंने कहा, ''उन सफेद जालियों को देखो, जो इस गुफा की दीवारों से चमक रही हैं।''
वह मेरी तरफ घूम गया और सीधे मेरी आँखों में दो झीने गोलों से देखने लगा, जो नशे से नम हो रहे थे।
''शोरा?'' अंत में उसने पूछा।
''शोरा।'' मैंने जवाब दिया, ''तुम्हें यह खाँसी कब से है?''
''उफ! उफ! उफ!—उफ! उफ! उफ!—उफ! उफ! उफ!—उफ! उफ! उफ!—उफ! उफ! उफ!''
मेरा बेचारा दोस्त कई मिनट तक जवाब नहीं दे पाया।
''कुछ भी नहीं है यह।'' अंत में वह बोला।
''आओ।'' मैंने निर्णयात्मक स्वर में कहा, ''हम वापस चलते हैं। तुम्हारी सेहत कीमती है। तुम अमीर हो, सम्माननीय हो। लोग तुम्हारी प्रशंसा करते हैं। तुम्हें चाहते हैं। तुम सुखी हो, जैसे कभी मैं हुआ करता था। तुम्हारी कमी लोगों को बहुत सताएगी। मेरे लिए यह बात कोई अहमियत नहीं रखती। हम वापस चलेंगे; तुम बीमार हो जाओगे और मैं यह जिम्मेदारी नहीं ले सकता। और फिर, लूकेसी भी तो है?''

''बहुत हो गया,'' वह बोला, ''यह खाँसी बिलकुल मामूली है। इससे मैं मरूँगा नहीं। मैं खाँसी से नहीं मरूँगा।''
''सही है, सही है।'' मैंने जवाब दिया, ''और हाँ, सच जानो मेरा तुम्हें अकारण डराने का कोई इरादा नहीं। मेडॉक (लाल फ्रांसीसी शराब) की एक घूँट हमें इस सीलन से बचाने को काफी होगी।''
यह कहकर मैंने बोतलों की लंबी कतार से एक बोतल निकाली और उसकी गरदन को तोड़ दिया।
''पियो।'' मैंने उसे शराब देते हुए कहा।
वह तिरछी नजर फेंकते हुए उसे अपने होंठों तक ले गया। उसने एक बार मेरी तरफ जाने-पहचाने अंदाज में सिर हिलाया। इस बीच उसकी घंटियाँ टुनटुनाती रहीं।
''यह जाम,'' वह बोला, ''उन मृतकों के नाम जो हमारे चारों तरफ विश्राम कर रहे हैं।''
''और मेरा जाम तुम्हारी लंबी जिंदगी के नाम।''
उसने फिर से मेरा हाथ पकड़ लिया और हम आगे चल दिए।
''ये कब्रें,'' वह बोला, ''बहुत बड़ी हैं।''
''मोंत्रेसरों का परिवार,'' मैंने जवाब दिया, ''महान् और बड़ा था।''
''मैं तुम्हारा खानदानी निशान भूल रहा हूँ।''
''एक विशाल इनसानी पाँव, एक आसमानी खेत में; पाँव एक दुर्दांत सर्प को कुचल रहा है, जिसके दाँत एड़ी में गड़े हैं।''
''और आदर्श वाक्य?''
''कोई मुझ पर निरापद होकर आक्रमण करने का दु:साहस न करे।''
''बढ़िया!'' उसने कहा।
शराब उसकी आँखों में चमक रही थी और घंटियाँ टुनटुना रही थीं। मेरी अपनी कल्पना भी मेडॉक पीने से प्रचंड हो गई थी। हम हड्डियों के ढेर की दीवारों को पार कर गए थे, जहाँ छोटे-बड़े पीपे एक-दूसरे में मिले हुए रखे थे। इस तरह हम कब्रों की कतारों की सबसे अंदरूनी खाली जगह में पहुँच गए। मैं एक बार फिर ठहर गया और इस बार मैंने हिम्मत करते हुए फोर्टूनाटो के हाथ को कोहनी के ऊपर से पकड़ लिया।
''शोरा!'' मैंने कहा, ''देखो, यह बढ़ रहा है। यह तहखानों पर काई की तरह लटका हुआ है। हम नदी के पाट के नीचे हैं। नमी की बूँदें हड्डियों के बीच टपकती हैं, आओ, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, हम लौट चलते हैं। तुम्हारी खाँसी?''
''यह कुछ भी नहीं है।'' वह बोलो, ''चलो, आगे चलें। लेकिन पहले मेडॉक की एक और घूँट हो जाए।'' मैंने द ग्राव की एक सुराही तोड़कर उसे पकड़ा दी। वह एक साँस में इसे खाली कर गया। उसकी आँखों में एक भयंकर रोशनी चमक उठी। वह हँस पड़ा और फिर हाथ नचाते हुए उसने बोतल को ऊपर उछाल दिया। मैं कुछ नहीं समझ पाया।
मैं चकित होकर उसे देखने लगा। उसने एक बार फिर वही हरकत की—वही अजीबो-गरीब हरकत!
''नहीं समझे तुम?'' वह बोला।
''नहीं।'' मैंने जवाब दिया।
''तब तुम बिरादरी के नहीं हो।''
''कैसे?''
''तुम राजगीरों में से नहीं हो।''

''हाँ, हाँ,'' मैं बोला, ''हाँ, हाँ।''
''तुम? असंभव! एक राहगीर?''
''एक राहगीर।'' मैंने जवाब दिया।
''कोई निशानी।'' वह बोला।
''यह रही।'' मैंने अपने लबादे की परतों के नीचे से एक कन्नी निकालते हुए जवाब दिया।
''तुम मजाक कर रहे हो।'' उसने कुछ कदम पीछे हटते हुए कहा, ''लेकिन चलो, हम आमोंतीलादो की तरफ चलते हैं।''
''ऐसा ही होगा।'' मैंने कन्नी को फिर से लबादे के नीचे रखते हुए और फिर से उसे अपना हाथ पकड़ाते हुए कहा। उसने अपना पूरा बोझ मेरे हाथ पर डाल दिया और हम आमोंतीलादो की तलाश में अपने रास्ते पर आगे बढ़ते रहे। हम नीची मेहराबों की एक कतार से निकले, नीचे उतरे, आगे बढ़े और एक बार फिर नीचे उतरकर उस गहरे तलघर में पहुँचे, जहाँ की गंदी हवा में हमारी मशालें दहकने के बजाय टिमटिमाने लगीं।

तलघर के सबसे दूर वाले छोर में एक और तलघर दिखाई दिया, जो पहले वाले तलघर से छोटा था। इसकी दीवारों से सटकर इनसानों की हड्डियाँ रखी हुई थीं, जो पेरिस की बड़ी-बड़ी भूमिगत कब्रों की तरह ऊपर सुरागार तक चली गई थीं। चौथी दीवार से हड्डियों को नीचे फेंक दिया गया था और वे जमीन पर इस तरह बेतरतीब पड़ी हुई थीं कि एक जगह आकर उनका एक टीला-सा बन गया था। हड्डियों के इस तरह हट जाने से जो दीवार दिखने लगी थी, उसमें हमें एक ओर अंदरूनी खाली जगह दिखाई थी। यह कोठरी चार फीट गहरी, तीन फीट चौड़ी और छह या सात फीट ऊँची थी। देखने से ऐसा लगता था कि अपने आप में यह किसी खास उपयोग के लिए नहीं बनाई गई थी, बल्कि भूमिगत कब्रों की छत को सँभालें दो विशाल खंभों के बीच बस एक अंतराल का काम कर रही थी और इसके पीछे ग्रेनाइट की उन ठोस दीवारों में से एक थी, जो उस जगह को घेरे हुएथीं।

फोर्टूनाटो ने व्यर्थ ही उस खाली जगह की गहराइयों में अपनी मद्धिम मशाल से देखने की कोशिश की। इसके अंतिम बंद छोर को मद्धिम रोशनी में हम देख नहीं पाए।
''आगे बढ़ो।'' मैंने कहा, ''इसी में आमोंतीलादो है। जहाँ तक लूकेसी का...''
''वह तो बुद्धू है।'' मेरे दोस्त ने लड़खड़ाकर आगे बढ़ते हुए कहा, और मैं बिलकुल उसके पीछे चला आया। एक पल में ही वह उस खाली जगह के छोर पर पहुँच गया और जब उसने देखा कि चट्टान उसका रास्ता रोके हुए है तो वह बौड़म सा हैरान होकर वहीं खड़ा रह गया। फिर एक पल बाद ही मैं उसे ग्रेनाइट में जकड़ चुका था। इसकी सतह में लोहे के दो छल्ले थे, जो एक-दूसरे से करीब दो फीट की दूरी पर अगल-बगल लगे थे। इनमें से एक छल्ले से एक छोटी-सी जंजीर लटकी हुई थी और दूसरे से एक ताला। उसकी कमर में जंजीर डालने के बाद उसे बंद करने में बस कुछ ही सेकंड लगे। वह इतना भौंचक्का हो रहा था कि विरोध भी नहीं कर पाया। मैंने चाबी निकाली और उस कोठरीनुमा खाली जगह से पीछे हट गया।
''अपने हाथ,'' मैंने उससे कहा, ''दीवार पर फिराओ। तुम्हें शोरे का स्पर्श जरूर पता चलेगा। सचमुच यह बहुत सीला है। एक बार फिर मैं तुमसे लौट चलने की याचना करूँगा। नहीं? तब तो मुझे सचमुच तुम्हें छोड़ना पड़ेगा। लेकिन पहले मैं अपनी सामर्थ्य से तुम्हारी सुध तो ले लूँ।''
''आमोंतीलादो!'' मेरा दोस्त झट से बोल पड़ा। वह अपनी भौंचक स्थिति से अभी भी उबर नहीं पाया था।
''सही कहा।'' मैंने जवाब दिया, ''आमोंतीलादो।''

यह बोलते हुए मैं उन हड्डियों के ढेर में व्यस्त हो गया, जिसके बारे में मैं पहले बता चुका हूँ। मैंने उन्हें एक

तरफ फेंकना शुरू किया और जल्दी ही उनके नीचे मुझे कुछ ईंटें और गारा मिल गया। इस सामग्री और अपनी कन्नी की मदद से मैं पूरे जोश से उस कोठरी में अंदर जाने के रास्ते को बंद करने में जुट गया। मैं वहाँ दीवार खड़ी कर रहा था।

मैंने अभी ईंट-गारे की पहली तह रखी ही थी कि मुझे पता चला कि फोर्टूनाटो का नशा काफी हद तक उतर चुका था। इसका पहला संकेत मुझे उस खाली जगह की गहराई से आती हलकी-हलकी कराह से मिला। यह किसी नशे में चूर आदमी की कराह नहीं थी। फिर वहाँ एक लंबी और दुराग्रही खामोशी छा गई। मैंने दूसरी तह रखी, फिर तीसरी और फिर चौथी; और फिर मुझे जंजीर को क्रोध में झनकारने की आवाज आई। यह आवाज कुछ मिनट तक आती रही और इस दौरान मैंने अपनी मेहनत रोक दी और हड्डियों पर बैठ गया, ताकि उस आवाज को और तसल्ली से सुन सकूँ। जब अंत में जंजीर की झनकार थमी तो मैंने फिर से अपनी कन्नी चलाई और बिना रुके पाँचवीं, छठी और सातवीं तह पूरी कर ली। दीवार अब लगभग मेरे सीने की ऊँचाई तक आ गई थी। मैंने एक बार फिर काम रोक दिया और मशाल को अधबनी दीवार के ऊपर पकड़कर अंदर बंद उस आकृति पर कुछ मद्धिम-सी किरणें डालीं।

जंजीर से बँधी उस आकृति के गले से अचानक ऐसी तेज और पतली चीखें लगातार निकलीं कि मुझे लगा, ये मुझे जोर से पीछे धकेल देंगी। एक क्षणांश को मैं हिचकिचाया। मैं काँप गया। मैंने म्यान से अपनी कटारी निकाली और उस कोठरी में उसे लहराने लगा; लेकिन एक पल के विचार ने मुझे आश्वस्त कर दिया। मैंने भूमिगत कब्रों की ठोस सतह पर हाथ फिराया तो मैं संतुष्ट हो गया। मैं फिर उस दीवार की तरफ गया। मैंने अंदर से चिल्लानेवाले की चीखों का जवाब दिया। मेरी आवाज गूँजकर फिर वापस आई—मैं फिर चीखा। मेरी आवाज उन आवाजों से ज्यादा तेज और दमदार रही। मैंने यह सब किया तो चिल्लानेवाला शांत हो गया। अब आधी रात हो चुकी थी और मेरा काम खत्म होने को था। मैंने आठवीं, नौंवी और दसवीं तह पूरी कर ली थी। मैंने आखिरी और ग्यारहवीं तह का एक हिस्सा पूरा कर लिया था; अब केवल पत्थर लगाकर उसपर पलस्तर करना बाकी रह गया था। मैं इसके वजन से जूझता रहा। मैंने इसे थोड़ा सा इसकी नियत जगह पर रखा। लेकिन तभी उस कोठरी के अंदर से किसी के हलके से हँसने की आवाज आई और मेरे सिर के बाल खड़े हो गए। उसके बाद एक उदासी भरी आवाज आई, जिसे नेक फोर्टूनाटो की आवाज के रूप में पहचानने में मुझे दिक्कत नहीं हुई। वह आवाज कह रही थी—

''हा! हा! हा!—ही! ही! ही! सचमुच बहुत अच्छा मजाक है—बहुत ही बढ़िया मजाक है। हवेली में हम इस पर खूब ही हँसेंगे—ही! ही! ही!''

''आमोंतीलादो!'' मैं बोला।

''ही! ही! ही!—ही! ही! ही!—हाँ, आमोंतीलादो। लेकिन हमें देर नहीं हो रही क्या? क्या वे लोग हवेली में हमारा इंतजार नहीं कर रहे होंगे, बेगम फोर्टूनाटो और बाकी सब? चलो, हम चलें।''

''हाँ।'' मैंने कहा, ''चलो, हम चलें।''

''ईश्वर के प्रेम की खातिर, मोंत्रेसर!''

''हाँ,'' मैं बोला, ''ईश्वर के प्रेम की खातिर!''

लेकिन मैं व्यर्थ ही इन शब्दों का जवाब सुनने को कान लगाए रहा। मैं अधीर हो उठा। मैंने जोर से पुकारा, ''फ कोर्टूनाटो !''

अब भी कोई जवाब नहीं आया। बाकी बचे छेद से मैंने एक मशाल अंदर घुसेड़ी और उसे अंदर गिर जाने दिया। मेरा दिल डूबने लगा—भूमिगत कब्रों की सीलन के कारण। मैंने जल्दी से अपने काम को खत्म करने का उपक्रम

किया। मैंने आखिरी पत्थर को जबरदस्ती उसकी जगह में रख दिया। फिर मैंने उस पर पलस्तर कर दिया। इस नई दीवार के सामने मैंने हड्डियों का वह पहलेवाला परकोटा फिर से खड़ा कर दिया। पचास सालों से किसी इनसान ने उन्हें छेड़ा नहीं है। ईश्वर उसकी आत्मा को शांति प्रदान करे!

❑

किस्सा नीलकंठ

-मार्क ट्वेन

यह सच है कि जानवर आपस में बातें करते हैं। इसमें किसी तरह का कोई संदेह नहीं हो सकता; लेकिन मैं सोचता हूँ कि बहुत कम लोग ही ऐसे हैं, जो उनकी बातें समझ सकते हैं। मुझे अभी तक बस एक आदमी ऐसा मिला है, जो उनकी बोली समझ सकता है। वैसे मुझे भी इस बात का पता इसलिए चला, क्योंकि उसी ने मुझे बताया था। वह एक अधेड़ उम्र का सीधा-सच्चा खदानकर्मी था, जो कई साल कैलिफोर्निया के एक एकांत कोने में जंगलों और पहाड़ों के बीच रहा था, और उसने अपने एकमात्र पड़ोसियों यानी जानवरों और पक्षियों के तौर-तरीकों का अध्ययन किया था; और अंत में उसे विश्वास हो गया था कि वह उनकी कही किसी भी बात का बिलकुल सही अनुवाद कर सकता है। उसका नाम जिम बेकर था। जिम बेकर के अनुसार कुछ जानवरों का शब्दभंडार काफी बड़ा होता है, भाषा पर उनका अच्छा अधिकार होता है और वे हाजिरजवाबी से फटाफट बोलते चले जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप ऐसे जानवर बहुत ज्यादा बोलते हैं; उन्हें यह अच्छा लगता है। उन्हें अपनी प्रतिभा का पता होता है और उन्हें 'दिखावा करने' में मजा आता है। बेकर का कहना था कि काफी समय तक ध्यान से देखने के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचा था कि पक्षियों और जानवरों में सबसे ज्यादा वाक्पटु नीलकंठ होते हैं। उसने कहा था—

''और किसी भी प्राणी के मुकाबले नीलकंठ में बोलने की अधिक क्षमता है। उसमें दूसरे प्राणियों के मुकाबले अधिक मनोस्थितियाँ और भावनाओं की अधिक विविधता देखने को मिलती है; और यह समझ लो कि नीलकंठ जो कुछ भी महसूस करता है, उसे वह भाषा में व्यक्त कर सकता था। और वह आम भाषा का भी इस्तेमाल नहीं करता, बल्कि खरी-खरी किताबी भाषा बोलता है—और वह भी रूपकों से भरपूर—बस भरपूर! और जहाँ तक भाषा पर अधिकार का सवाल है, तो कोई नीलकंठ आपको कभी भी किसी शब्द के लिए अटकता नहीं मिलेगा। शब्द तो जैसे उसके अंदर से फूटे पड़ते हैं! और एक और बात, मैंने बहुत ध्यान से देखा है और ऐसा कोई पक्षी या गाय या और कोई भी चीज नहीं है, जो नीलकंठ जैसे अच्छे व्याकरण का प्रयोग करती हो। आप कह सकते हैं कि बिल्ली अच्छे व्याकरण का प्रयोग करती है; लेकिन एक बार जरा किसी बिल्ली को रात में शेड के ऊपर किसी दूसरी बिल्ली के साथ नोंचा-खसोटी करते देखिए, तब आपको ऐसी व्याकरण सुनने को मिलेगी कि आपके जबड़े ही जकड़ जाएँगे। अज्ञानी लोग सोचते हैं, लड़ती हुई बिल्लियाँ जो शोर करती हैं, वही इतना उत्तेजक होता है, लेकिन ऐसा नहीं है; उत्तेजक तो उनकी उकताऊ व्याकरण होती है। अब मैंने तो एक-दो मौकों को छोड़कर कभी किसी नीलकंठ को खराब व्याकरण का इस्तेमाल करते नहीं सुना और जब कभी वे खराब व्याकरण का इस्तेमाल करते हैं तो वे इनसानों की तरह ही शर्मिंदा भी होते हैं। वे अपना मुँह बंद कर लेते हैं और वहाँ से चले जाते हैं।

''आप नीलकंठ को पक्षी कह सकते हैं। हाँ, एक हद तक वह है भी; क्योंकि उसके शरीर पर पंख होते हैं और वह किसी चर्च का शायद सदस्य भी नहीं होता; लेकिन इसके अलावा वह आपके जितना ही इनसान होता है और मैं आपको बताऊँगा कि ऐसा क्यों है। एक नीलकंठ की प्रतिभाएँ, भावनाएँ और रुचियाँ सबकुछ समेट लेती हैं। नीलकंठ किसी नेता से अधिक सिद्धांतवादी नहीं होता। नीलकंठ झूठ बोल लेता है, नीलकंठ अपने सबसे गंभीर वादे से मुकर भी जाता है। अहसान की पवित्रता एक ऐसी चीज है, जिसे आप किसी भी नीलकंठ के दिमाग में घुसेड़ नहीं सकते। अब इन सबसे भी बढ़कर एक और बात है : एक नीलकंठ गरियाने के मामले में खदानों में काम करनेवाले किसी भी बंदे को मात दे सकता है। आप सोचते हैं कि बिल्ली गरिया सकती है। हाँ, बिल्ली गरिया

सकती है; लेकिन आप किसी नीलकंठ को ऐसा विषय देकर देखिए, जिसमें उसकी 'रिजर्व' क्षमताओं की जरूरत पड़े और फिर बताइए, कहाँ रह जाती है आपकी बिल्ली? मुझसे बात मत कीजिए—इस बारे में मैं बहुत ज्यादा जानता हूँ। और एक और भी बात है : डाँटने-डपटने के मामले में—एक नीलकंठ किसी को भी पछाड़ सकता है, चाहे वह इनसान हो या देवता। जी हाँ, नीलकंठ में वह सबकुछ है, जो एक इनसान में होता है। नीलकंठ रो सकता है, नीलकंठ हँस सकता है, नीलकंठ लज्जित हो सकता है, नीलकंठ तर्क कर सकता है और योजना बना सकता है तथा चर्चा कर सकता है। नीलकंठ को गपशप और अफवाह अच्छी लगती है, नीलकंठ में हास्य-बोध होता है, नीलकंठ जब गधापन करता है तो उसको ठीक आपकी ही तरह पता होता है—शायद आपसे भी अच्छी तरह। अगर नीलकंठ इनसान नहीं है तो वह उसका निशान ले ले, बस। अब मैं आपको एक बिलकुल सच्चा तथ्य बताने जा रहा हूँ, जो कुछ नीलकंठों के बारे में है—

''जब मैंने पहली बार नीलकंठ की भाषा को ठीक तरह से समझना शुरू किया था तो यहाँ एक छोटी सी घटना घटी थी। सात साल पहले की बात है, मुझे छोड़कर इस इलाके का आखिरी आदमी यहाँ से चला गया था। वह रहा उसका मकान—तभी से खाली पड़ा है; लट्ठों का मकान है, तख्तों की छतवाला—बस एक बड़ा सा कमरा है, उससे ज्यादा और कुछ नहीं; कोई अंदरूनी छत नहीं है। शहतीरों और फर्श के बीच कुछ नहीं है। हाँ तो, एक इतवार की सुबह मैं वहाँ बाहर अपनी कोठरी के सामने बैठा हुआ था। मेरे साथ मेरी बिल्ली थी। मैं धूप ले रहा था और नीली पहाड़ियों को देख रहा था तथा पेड़ों में अकेले सरसराती पत्तियों की आवाज सुन रहा था, और दूर संयुक्त राज्य अमेरिका में अपने घर के बारे में सोच रहा था, तभी एक नीलकंठ उस मकान पर आकर उतरा, जिसके मुँह में एक बाँजफल (ऐकॉर्न) का दाना था। वह बोला, 'ओ हो, लगता है मुझे कुछ मिल गया है यहाँ!' जब उसने यह कहा तो दाना उसके मुँह से निकलकर लुढ़कता हुआ छत से नीचे चला गया। लेकिन उसने कोई परवाह नहीं की। उसका दिमाग तो पूरा उसी चीज पर लगा था, जो उसे मिली थी, यह छत में बना एक छेद था। उसने अपने सिर को एक तरफ मोड़ा, एक आँख बंद की और दूसरी आँख उस छेद पर लगा दी, जैसे कोई ओपोसम (एक पशु विशेष) एक जग में झाँक रहा हो! फिर उसने अपनी चमकीली आँखें उठाकर देखा और एक-दो बार अपने पँख फड़फड़ाए—जो संतुष्टि का सूचक है, समझे आप,—और बोला, 'यह तो छेद जैसा दिखता है, यह छेद जैसा बना है। मुझे मानना ही होगा कि यह एक छेद है!'

फिर उसने अपना सिर नीचे की तरफ मोड़ा और एक बार फिर देखा। इस बार उसने आँख उठाई तो बड़ा खुश था। उसने अपने पंख और दुम दोनों फड़फड़ाए और बोला, 'अरे नहीं, मैं सोचता हूँ, यह कोई मोटा छेद नहीं है! जरूर मेरा भाग्य तेज है! अरे, यह तो बिलकुल शानदार छेद है!' इसलिए, वह उड़कर नीचे पहुँचा और वह दाना उठा लाया और इसे उस छेद में डाल दिया। वह अपने चेहरे पर अत्यंत अलौकिक मुसकान लिये अभी अपने सिर को पीछे किए झुका ही रहा था कि अचानक वह सुनने की मुद्रा में जड़ीभूत हो गया और उसके चेहरे से वह मुसकान ऐसे गायब हो गई, जैसे उस्तरे के आगे साँस हो जाती है और उसकी जगह आश्चर्य का विचित्र भाव आ गया। फिर वह बोला, 'अरे, मैंने इसके गिरने की आवाज नहीं सुनी!' उसने फिर से अपनी आँख को छेद पर जमाया और देर तक उसमें देखता रहा। फिर वह उठ गया और उसने अपना सिर एक बार फिर देखा, और फिर अपना सिर हिलाया। थोड़ी देर तक वह जायजा लेता रहा, और फिर विस्तार से समझने लगा। वह छेद के चक्कर काट-काटकर कुतुबनुमा के हर कोण से उसकी छानबीन करता रहा। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अब वह छत के शिखर पर चिंतन की मुद्रा में आ गया और उसने एक मिनट के लिए अपने दाहिने पैर से अपने सिर के पीछे खुजाया और अंत में बोला, 'ओह, यह मेरे लिए बहुत ज्यादा है, यह निश्चित है। जरूर बहुत लंबा छेद होगा।

बहरहाल, मेरे पास इतना समय नहीं है कि यहाँ फालतू दिमाग मारूँ, मुझे अपना काम भी देखना है। मैं सोचता हूँ, यह बिलकुल सही है—फिर भी, कोशिश करके देखता हूँ।'

''इसलिए वह वहाँ से उड़कर गया और एक और दाना (ऐकॉर्न) ले आया और उसे उस छेद में गिरा दिया और उसने जल्दी से अपनी आँख छेद पर लगा दी, कि देखें उसका क्या हुआ, लेकिन फिर भी उसे बहुत देर हो चुकी थी। उसने करीब एक मिनट तक अपनी आँख को वहाँ जमाए रखा; फिर वह उठ गया और ठंडी साँस भरकर बोला, 'मेरी समझ में तो यह चीज आती नहीं दिखती; बहरहाल, मैं फिर से इसे समझने की कोशिश करूँगा।' वह एक और दाना ले आया और यह देखने की उसने भरसक कोशिश की कि उसका क्या हुआ, लेकिन वह नहीं देख पाया। वह बोला, 'अब से मैंने पहले ऐसा छेद कभी नहीं देखा। मेरी यह राय है कि यह बिलकुल नई किस्म का छेद है।' फिर वह पागल होने लगा। वह थोड़ी देर के लिए रुका और छत के शिखर पर इधर से उधर अपना सिर हिलाते और मुँह-ही-मुँह में बड़बड़ाते हुए टहलने लगा; लेकिन इस समय उसकी भावनाएँ उसपर हावी हो गईं और वह ताबड़-तोड़ अपने आपको भला-बुरा कहने लगा। मैंने किसी पक्षी को इतनी छोटी सी बात पर इतना परेशान होते नहीं देखा। जब वह बक चुका तो फिर चलकर छेद तक गया और आधा मिनट तक फिर उसमें झाँकता रहा; फिर वह बोला, 'ओह, तुम एक लंबा छेद हो और एक गहरा छेद, और कुल मिलाकर जबरदस्त छेद हो; लेकिन मैंने तुम्हें भरना शुरू कर दिया है और लानत होगी मुझ पर, अगर मैं तुम्हें भरूँ नहीं, चाहे इसमें सौ साल लग जाएँ!'

''और इतना कहकर वह वहाँ से चला गया। आपने अपने पैदा होने के बाद से आज तक किसी पक्षी को इतनी मेहनत करते नहीं देखा होगा। वह अपने काम में एक हब्शी की तरह जुट गया और इस तरह करीब ढाई घंटे तक उसने उस छेद में ऐकॉर्न के दाने भरे। वह एक ऐसा रोमांचक और आश्चर्यजनक दृश्य था, जो मैंने पहले कभी नहीं देखा। अब वह छेद में झाँकने के लिए बिलकुल नहीं रुका। वह बस दानों को छेद में डालता और फिर और दाने लेने चला जाता। और, अंत में वह इतना पस्त हो गया कि अपने पंख फड़फड़ाने लायक भी नहीं रहा। एक बार फिर वह उड़ता हुआ नीचे आया। वह बर्फ से भरी सुराही की तरह पसीने-पसीने हो रहा था। छेद में दाना गिराकर वह बोला, 'अब मैं सोचता हूँ कि अब तक तो मैंने तुम्हारा पेट फुला दिया होगा!' इसलिए वह देखने को नीचे झुका। आप मेरा विश्वास नहीं करेंगे, जब उसने फिर से अपना सिर उठाया तो वह गुस्से से लाल-पीला हो रहा था। वह बोला, 'मैंने वहाँ इतने दाने गिराए हैं कि उसमें पूरा परिवार तीस साल तक खा लेगा। और अगर मुझे उनमें से एक का भी निशान मिल जाए तो मैं तो यही कामना करूँगा कि मैं दो मिनट में बुरादे से भरा पेट लेकर किसी म्यूजियम में जा उतरूँ!'

''उसमें बस इतनी शक्ति बची थी कि वह धीरे-धीरे छत के शिखर पर जाकर चिमनी से पीठ टिकाकर बैठ गया और फिर उसने अभी तक के अपने विचारों को इकट्ठा किया और अपने दिमाग को खोलने लगा। मैंने एक मिनट में ही देख लिया कि मैंने जिसे गलती से खदानों में ईश-निंदा समझा था, वह तो कुछ भी नहींथा।

''एक और नीलकंठ वहाँ से जा रहा था और उसने उसे भजन करते सुना तो रुककर उससे पूछने लगा कि क्या हो रहा है? पहले नीलकंठ ने उसे सारी बात बताई और कहा, 'अब वहाँ रहा वह छेद और अगर तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं हो तो जाकर खुद देख लो।' इसलिए उस बंदे ने जाकर देखा और वापस आकर बोला, 'तुम कितने दाने बता रहे हो कि तुमने वहाँ डाले थे?'

'दो टन से कम नहीं थे।' पीड़ित नीलकंठ ने कहा। दूसरे नीलकंठ ने फिर जाकर देखा। उसे शायद कुछ समझ में नहीं आया, इसलिए उसने शोर मचा दिया और तीन और नीलकंठ वहाँ आ गए। उन सबने उस छेद की जाँच की। उन सबने मिलकर इस बारे में विचार-विमर्श किया और उसके बारे में उतने ही मूर्खतापूर्ण विचार व्यक्त किए,

जितने इनसानों की एक औसत भीड़ व्यक्त कर सकती थी।

''उन्होंने और भी नीलकंठों को बुला लिया; फिर और, फिर और नीलकंठ आते गए कि जल्दी ही पूरा इलाका जैसे नीले रंग में रँग गया। पाँच हजार नीलकंठ तो जरूर रहे होंगे, और इस बार जो बक-बक और बहस, चख-चख तथा गाली-गलौज हुई, वह आपने कभी नहीं सुनी होगी। इस पूरे झुंड के एक-एक नीलकंठ ने उस छेद पर अपनी आँख जमाई और हरेक ने अपने से पहलेवाले नीलकंठ के मुकाबले इस रहस्य के बारे में कुछ ज्यादा मूर्खतापूर्ण विचार व्यक्त किए। उन्होंने मकान की भी नए सिरे से छानबीन कर डाली। दरवाजा आधा खुला था और अंत में एक बूढ़ा नीलकंठ वहाँ जाकर उतरा और उसने अंदर झाँककर देखा। सच, इससे उस रहस्य पर से एक सेकंड में परदा उठ गया। वहाँ ऐकॉर्न के दाने चारों तरफ बिखरे पड़े थे। उसने अपने पंख फड़फड़ाए और चिल्ला पड़ा—'यहाँ आओ!' वह बोला, 'यहाँ आओ, सारे-के-सारे; सारे-के-सारे नीलकंठ एक नीले बादल की तरह झपटते हुए नीचे आ गए और जब एक ने दरवाजे पर उतरकर अंदर नजर डाली तो पहले नीलकंठ की कारस्तानी का बेहूदापन उसके सामने आ गया और वह पीठ के बल लेटकर हँसी के मारे लोट-पोट हो गया, और फिर उसकी जगह दूसरा नीलकंठ आया तो वह भी हँसते-हँसते दोहरा हो गया। इस तरह वे सारे-के-सारे हँस-हँसकर पागल हो गए।

''तो साहब, वे यहाँ मकान की छत पर और पेड़ों पर एक घंटे तक डेरा डाले रहे और उस बात पर इनसानों की तरह ठहाके लगाते रहे। मुझसे यह कहने का कोई फायदा नहीं होगा कि नीलकंठों में हास्य-बोध नहीं होता, क्योंकि मैं बेहतर जानता हूँ। और उनकी याददाश्त भी तेज होती है। वे तीन साल तक हर गरमी में पूरे संयुक्त राज्य (अमेरिका) से नीलकंठों क को इस छेद के अंदर देखने के लिए लाते रहे। दूसरी चिड़ियों को भी और उन सभी की समझ में असली बात आ गई, सिवाय एक उल्लू के, जो नोवा स्कोशा से था, सेमिटी देखने के लिए आया था। उसने वापसी में इस किस्से को सुना था। उसका कहना था कि उसे इसमें कुछ भी हास्यास्पद नहीं दिखाई दिया था। लेकिन फिर उसे तो सेमिटी ने भी बहुत निराश किया था।''

❑

बहिष्कृत

-ब्रेट हार्ट

जब जुआरी जॉन ओकहर्स्थ महोदया ने 23 नवंबर, 1850 की सुबह पोकर फ्लैट की मुख्य गली में कदम रखा तो उन्हें इस बात का अहसास था कि पिछली रात से यहाँ के नैतिक माहौल में कुछ बदलाव आ गया था। वहाँ जो दो-तीन आदमी आपस में घुल-मिलकर बातें कर रहे थे, वे उनके पहुँचते ही चुप हो गए और एक-दूसरे की तरफ अर्थपूर्ण दृष्टि से देखने लगे। हवा में सबध (साप्ताहिक विश्राम का दिन) की खामोशी थी, जो सबध के प्रभावों की अनभ्यस्त इस बस्ती में अपशकुन-सी लग रही थी।

ओकहर्स्ट महोदय के शांत व खूबसूरत चेहरे पर इन संकेतों को लेकर कोई चिंता दिखाई नहीं दी। यह एक अलग सवाल है कि उन्हें किसी पूर्वयोगी कारण का अहसास था या नहीं। ''मुझे लगता है, वे किसी के पीछे हैं!'' उन्होंने सोचा, ''शायद वह मैं ही हूँ।'' उन्होंने वह रूमाल अपनी जेब में वापस रख लिया, जिससे वह अपने साफ जूतों पर से पोकर फ्लैट की लाल मिट्टी पोंछ रहे थे और उन्होंने अपने दिमाग से आगे के किसी भी अनुमान को जल्दी से झटक दिया।

सच यही था कि पोकर फ्लैट 'किसी के पीछे' ही था। उसने हाल ही में कई हजार डॉलर, दो कीमती घोड़ों और एक प्रमुख नागरिक का नुकसान उठाया था। उसपर सदाचारी प्रतिक्रिया का दौरा पड़ रहा था, जो उतना ही निरंकुश और बेलगाम था जितना वह कोई भी काम, जिसने इसे भड़काया था। एक गुप्त समिति ने संकल्प किया था कि वह कस्बे को सभी गलत व्यक्तियों से छुटकारा दिलाकर रहेगी। दो आदमियों के मामले में तो यह काम स्थायी तौर पर कर दिया गया था, जो अब गल्च (पहाड़ी दर्रा) में एक गूलर के पेड़ की शाखाओं से लटक रहे थे और अस्थायी तौर पर कुछ महिलाओं को जलावतन कर दिया गया था। वैसे यह उनके औरत होने के कारण ही कहा जाएगा कि उनकी गलती व्यावसायिक थी और केवल बुराई के आसानी से स्थापित हो जानेवाले इन स्तरों में ही पोकर फ्लैट न्याय करने को उद्यत होता था।

ओकहर्स्ट महोदय का यह अनुमान सही था। उन्हें भी इस श्रेणी में शामिल किया गया था। समिति के कुछ सदस्यों ने यह आग्रह किया था कि उन्हें फाँसी पर लटका दिया जाए, क्योंकि इस तरह से एक तो वह दूसरों के लिए उदाहरण बन सकेंगे और दूसरे उन्होंने इन लोगों से जो रकम जीती थी, उसे उनकी जेब से निकालने का यह अचूक तरीका भी होगा। 'यह इनसाफ के खिलाफ है,' जिम ह्वीलर ने कहा था, 'कि हम रोरिंग कैंप के इस जवान आदमी को, जो नितांत अजनबी है, हमारा पैसा ले जाने दें।' लेकिन जो लोग ओकहर्स्ट महोदय से पैसे जीतने में भाग्यशाली रहे थे, उनके दिलों में बसी समानता की अपरिपक्व भावना इस संकीर्ण स्थानीय पूर्वग्रह पर हावी रही।

ओकहर्स्ट महोदया ने अपनी सजा को दार्शनिक शांति के साथ कबूल किया, इसपर भी शांति के साथ कि उन्हें अपने न्यायाधीशों की हिचकिचाहट के बारे में पता था। वह ऐसे बड़े जुआरी थे कि अपनी नियति को तो अस्वीकार कर ही नहीं सकते थे। उनके लिए जिंदगी तो एक अनिश्चित खेल थी और वह यह भी मानते थे कि आमतौर पर प्रतिशत पत्ते बाँटनेवाले के पक्ष में ही होता है।

कुछ हथियारबंद आदमी पोकर फ्लैट की इस निर्वासित दुष्टता के साथ बस्ती के बाह्यांचल तक गए। इस बहिष्कृत टोली में ओकहर्स्ट महोदय तो थे ही, जिन्हें धमकाने के लिए ही हथियारबंद आदमियों को साथ लगाया गया था, उनके अतिरिक्त इस टोली में एक जवान औरत भी थी, जिसे लोग 'डचेस' के नाम से जानते थे। एक और

औरत थी, जिसे लोगों से 'मदर शिप्टन' का खिताब मिला हुआ था और 'अंकल बिली' थे, जो एक संदिग्ध स्लूस लुटेरे और असंदिग्ध पियक्कड़ थे (सोने के खनन के संदर्भ में 'स्लूस' एक कृत्रिम चैनल होता है, जहाँ साने को हलकी मिट्टी और बजरी से अलग किया जाता है)। इस काफिले पर किसी तमाशबीन ने कोई फिकरा नहीं कसा और हथियारबंद आदमियों ने भी एक शब्द नहीं बोला। जब पोकर फ्लैट की नितांत बाहरी सीमा का प्रतीक पहाड़ी दर्रा आ गया, तब जाकर हथियारबंद दस्ते के नायक ने बहुत थोड़े शब्दों में बस काम की बात कही। निर्वासितों को मनाही थी कि वे लौटने की कोशिश न करें, नहीं तो उनकी जान को खतरा हो सकता था।

जब हथियारबंद आदमी आँखों से ओझल हो गए तो इन बहिष्कृतों की दबी भावनाएँ अलग-अलग रूप में फूट पड़ीं। डचेस ने बेतहाशा आँसू बहाए तो 'मदर शिप्टन' ने कुछ भला-बुरा कहा और अंकल बिली ने गालियों की झड़ी लगा दी। अकेले दार्शनिक ओकहर्स्ट ही खामोश रहे। 'मदर शिप्टन' की इच्छा हो रही थी कि किसी का दिल चीरकर निकाल लें। डचेस बार-बार यह कहे जा रही थी कि वह सड़क पर ही मर जाएगी और चेतानेवाली कसमें तो जैसे आगे बढ़ते अंकल बिली के मुँह से जबरदस्ती बाहर आ रही थीं। ओकहर्स्ट महोदय शांत होकर यह सबकुछ सुनते रहे। अपने तबके के सहज हास्य-बोध का परिचय देते हुए उन्होंने अपने घोड़े 'फाइव स्पॉट' को डचेस के दयनीय खच्चर से बदलने का आग्रह कर दिया। लेकिन उनकी इस हरकत ने भी इस दल में एक-दूसरे के लिए कोई अधिक घनिष्ठ सहानुभूति नहीं पैदा की। जवान औरत ने अपने कुछ-कुछ लिथड़े सजावटी पंखों को बेदम और हलके नखरे के साथ फिर से ठीक किया। मदर शिप्टन ने 'फाइव स्पॉट' के मालिक को वैमनस्य की दृष्टि से देखा और अंकल बिली ने पूरे दल को ही एक सपाट शॉप में समेट लिया।

सैंडी बार एक ऐसा शिविर था, जो अभी तक पोकर फलैट के पुनरुद्धारक प्रभावों से अछूता था, और इसलिए वह प्रवासियों को कुछ आमंत्रण देता-सा लगता था। और इस सैंडी बार तक जानेवाली सड़क खड़ी चढ़ाईवाली एक पर्वत शृंखला के ऊपर थी। सैंडी बार एक दिन के भीषण सफर की दूरी पर था। उस चढ़े मौसम में बहिष्कृतों का यह दल जल्दी ही पहाड़ी की तलहटी के नम व शीतोष्ण प्रदेशों से निकलकर सीएरा पर्वत शृंखला की सूखी, ठंडी आनंदप्रद हवा में आ गया। मार्ग सँकरा और दुर्गम था। दोपहर को डचेस अपनी काठी से लुढ़ककर जमीन पर आ गई और उसने अपना इरादा जता दिया कि अब वह और आगे नहीं जाएगी। बस, बहिष्कृतों का दल वहीं रुक गया।

यह स्थान नितांत जंगली तथा मनोहारी था। यहाँ नंगे मकराना पत्थर की खड़ी चट्टानों से तीन ओर से घिरी एक वनाच्छादित रंगशाला थी, जो एक और खड़ी चट्टान की चोटी की तरफ हलकी ढलान बना रही थी, जहाँ से घाटी दिखाई देती थी। यह निस्संदेह डेरा डालने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान था, बशर्ते कि यहाँ डेरा डालना उचित होता। किंतु ओकहर्स्ट महोदय को पता था कि अभी सैंडी बार की आधी दूरी भी मुश्किल से तय हुई थी और उनके पास इतना साज-सामान या राशन नहीं था कि वे विलंब का खतरा मोल लेते। उन्होंने यह सच्चाई अपने साथियों के आगे दो-टूक शब्दों में रख दी और 'खेल खत्म होने से पहले ही अपने हाथ खड़े कर देने' की मूर्खता पर भी एक दार्शनिक टिप्पणी कर डाली। लेकिन उनके पास शराब थी, जो संकट की घड़ी में उनके लिए भोजन, ईंधन, विश्राम और दूरदृष्टि की स्थानापन्न थी। ओकहर्स्ट महोदय की तमाम दलीलों के बावजूद उन लोगों को शराब के असर में आते ज्यादा देर नहीं लगी। अंकल बिली तो फौरन ही झगड़ालूपन से मदहोशी की हालत में आ गए। डचेस जज्बाती हो गई और मदर शिप्टन खर्राटे भरने लगी। अकेले ओकहर्स्ट महोदय थे, जो अभी भी सीधे थे और एक चट्टान से टिके उन सबको देख रहे थे।

ओकहर्स्ट महोदय पीते नहीं थे। इससे उनके व्यवसाय में दखल पड़ता था, जिसमें चित्त की शांति, धीरज और

मानसिक सतर्कता की जरूरत होती थी और उनके ही शब्दों में यह उनके 'बूते की बात नहीं थी'। जब वह इस तरह अपने निढाल साथी निर्वासितों को देख रहे थे तो उनके इस अछूत धंधे, उनकी जिंदगी की आदतों और उनकी बुराइयों से उपजे एकाकीपन ने पहली बार उन्हें गंभीरता से प्रताड़ित किया। उन्होंने अपनी जड़ता को तोड़ते हुए अपने काले कपड़ों को झाड़ा, हाथ-मुँह धोया और ऐसे अन्य काम किए, जो उनकी सायास स्वच्छ आदतों के परिचायक थे और एक क्षण को वह अपनी नाराजगी को भूल गए। अपने अपेक्षाकृत कमजोर और दयनीय साथियों को छोड़कर चले जाने का खयाल तो शायद उनके मन में कभी आया ही नहीं। फिर भी वह उस रोमांच की कमी को महसूस किए बिना नहीं रह सके, जो उस शांतचित्तता को बनाने में सबसे अधिक सहायक था, जिसके लिए वह कुख्यात थे। उन्होंने अपने चारों तरफ खड़े चीड़ वृक्षों के एक हजार फीट ऊपर जाती मनहूस दीवारों को देखा, अनिष्ट के मेघों से घिरे आसमान को देखा और नीचे उस घाटी को देखा, जो पहले ही छाया में गहरा रही थी, और ऐसा करते हुए उन्होंने अचानक किसी को उनका नाम पुकारते सुना।

एक घुड़सवार धीरे-धीरे उस मार्ग से चढ़कर आ रहा था। उस नवागंतुक के ताजगी भरे, खुले चेहरे में ओकहर्स्ट महोदय ने सैंडी बार के टॉम सिमसन को पहचाना, जिसे लोग वैसे 'इनोसेंट' (मासूम) कहते थे। उससे उनकी मुलाकात कुछ महीने पहले एक 'छोटे से खेल' में हुई थी और उन्होंने पूरे धीरज के साथ खेलते हुए उस भोले-भाले नौजवान से उसकी सारी पूँजी—करीब 40 डॉलर की रकम—जीत ली थी। जब खेल खत्म हो गया तो ओकहर्स्ट महोदय ने उस जवान जुआरी को दरवाजे के पीछे ले जाकर इस तरह समझाया था—''टॉमी, तुम एक भले आदमी हो; लेकिन तुम्हें पाई भर भी जुआ खेलना नहीं आता। अब कभी जुआ खेलने की कोशिश मत करना।'' यह कहकर उन्होंने उसका सारा पैसा उसे लौटा दिया था और उसे शराफत से कमरे के बाहर कर दिया था और इस तरह से उन्होंने टॉम सिमसन को अपना समर्पित गुलाम बना लिया था।

उसने ओकहर्स्ट महोदय का लड़कपन और जोशीले अंदाज में अभिवादन किया तो उसमें इस घटना की याद थी। उसने बताया कि वह अपना भाग्य आजमाने पोकर फ्लैट के लिए निकला था। ''अकेले नहीं?'' नहीं, बिलकुल अकेले तो नहीं; दरअसल (हँसते हुए), वह पाइनी वुड्स को भगाकर ले आया था। क्या ओकहर्स्ट महोदय को पाइनी की याद नहीं थी? वही पाइनी, जो टेंपरेंस हाउस में बेट्रस थी? वे दोनों काफी समय से प्रणय-सूत्र में बँधे हुए थे, लेकिन बुढ़ऊ जेक वुड्स को इसमें एतराज था, इसलिए वे भाग लिये थे और शादी करने पोकर फ्लैट जा रहे थे; और यह कितने सौभाग्य की बात थी कि उन्हें डेरे के लिए एक जगह मिल गई थी, और इतने लोगों का साथ भी। 'इनोसेंट' ने यह सब बड़ी जल्दी-जल्दी कह डाला था। जबकि पंद्रह साल की गठीली व सुंदर कन्या पाइनी चीड़ वृक्ष के पीछे से निकलकर आई, जहाँ छिपी हुई वह शरमा रही थी। वह घोड़े पर चढ़ी अपने प्रेमी की बगल में आकर खड़ी हो गई।

ओकहर्स्ट महोदय भावनाओं को लेकर क भी परेशान नहीं होते थे, सही-गलत के बारे में तो और भी नहीं; किं तु उन्हें अस्पष्ट-सा आभास हो रहा था कि स्थिति भाग्यपूर्ण नहीं थी। बहरहाल, बिली को टाँग मारकर सावधान किया, क्योंकि वह कुछ कहने ही जा रहे थे। और अंकल बिली अभी इतने धुत भी नहीं थे कि ओकहर्स्ट महोदय की लात में उस उच्चतर शक्ति को न पहचानते, जो किसी क्षुद्रता को बरदाश्त करनेवाली नहीं थी। फिर उन्होंने टॉम सिमसन को समझाने की कोशिश की कि वह और देर न करे, लेकिन वह नहीं माना। उन्होंने उसे यह तक बता दिया कि यहाँ डेरा डालने के लिए न तो उनके पास राशन था और न ही कोई साधन। लेकिन दुर्भाग्य से 'इनोसेंट' ने इस एतराज के जवाब में उन लोगों को यह आश्वासन दे डाला कि उसके पास खाने-पीने के सामान से लदा एक फालतू खच्चर था और उसने यह भी बताया कि मार्ग के पास लट्ठों का एक मकान भी था। ''पाइनी तो मिसिज

ओकहर्स्ट के पास रह सकती है,'' इनोसेंट ने डचेस की तरफ इशारा करते हुए कहा, ''और मैं अपना जुगाड़ खुद कर सकता हूँ।''

अंकल बिली इस बात पर ठहाका मारकर हँसने ही वाले थे, लेकिन ओकहर्स्ट महोदय की फटकारती लात ने ही उन्हें ऐसा करने से रोका। सच में तो अंकल बिली को दर्रे में जाकर अपनी हँसी पर काबू करना पड़ा । वहाँ उन्होंने यह लतीफा लंबे चीड़ वृक्षों को अपनी टाँग पर हाथ मार-मारकर मुँह बना-बनाकर और अपनी आम गालियों के साथ सुनाया। लेकिन जब वह लौटकर उस टोली के पास आए तो उन्होंने उन लोगों को आग के पास बैठा पाया; क्योंकि हवा में अजीब ठिठुरन आ गई थी और आसमान में बादल घिर आए थे—और वे घुल-मिलकर बातें कर रहे थे। पाइनी वास्तव में लड़कियों जैसी तरंग में डचेस से बात कर रही थी, जो बड़ी दिलचस्पी और उमंग के साथ उसकी बातें सुन रही थी। यह दिलचस्पी और यह उमंग डचेस ने कई दिनों से नहीं दिखाई थी। 'इनोसेंट' भी प्रकट में उसी प्रभाव के साथ ओकहर्स्ट महोदय और मदर शिप्टन के साथ बढ़-चढ़कर बातें कर रहा था, और मदर शिप्टन वास्तव में आंतरिक सौमनस्य में तनाव मुक्त हो रही थीं।

''यही है तुम्हारी कमबख्त पिकनिक?'' अंकल बिली ने इस वन्य समूह, आग की चिलकती रोशनी और अग्रभूमि में बँधे हुए पशुओं पर दृष्टि घुमाते हुए एक आंतरिक तिरस्कार के साथ कहा। अचानक शराब की भभक के साथ एक खयाल घुल-मिल गया और इसने उनके दिमाग को परेशान कर दिया। यह खयाल अवश्य ही मजाकिया किस्म का रहा होगा, क्योंकि अंकल बिली फिर से अपनी टाँग पर हाथ मारने क को मजबूर हो गए और उन्होंने अपनी मुट्ठी अपने मुँह में ठूँस ली।

छायाएँ पहाड़ के ऊपर धीरे-धीरे सरकने लगीं और उसके साथ ही एक हलकी हवा चीड़ वृक्षों के शिखरों को झकझोरने लगी और उनके लंबे-अँधियारे गलियारों में कराहती घूमने लगी। टूटी-फूटी कुटिया पर जगह-जगह चीड़ की डालियाँ लगा दी गई थीं और उसे औरतों के लिए अलग कर दिया गया था। जब प्रेमी-प्रेमिका एक-दूसरे से अलग हुए तो उन्होंने इस सबसे अप्रभावित रहते हुए एक-दूसरे का चुंबन लिया। चुंबन इतनी ईमानदारी और निश्छलता से लिया गया था कि इस झूमते चीड़ वृक्षों के ऊपर सुना जा सकता था। कमजोर डचेस और वैमनस्यपूर्ण मदर शिप्टन शायद इतनी अधिक स्तब्ध थीं कि वे सरलता के इस अंतिम प्रमाण पर कुछ भी नहीं बोल पाईं। आग में और लकड़ियाँ डाल दी गईं, आदमी लोग दरवाजे के आगे लेट गए और कुछ ही मिनटों में सो गए।

ओकहर्स्ट महोदय कच्ची नींद सोते थे। सुबह होते-होते वह उठ गए। उनका शरीर सुन्न था और वह ठंडे पड़ रहे थे। उन्होंने बुझती आग को कुरेदा तो अब तेज हो गई हवा ने उनके गाल पर ऐसी चीज का थपेड़ा मारा कि वहाँ से खून की सुर्खी ही गायब हो गई—बर्फ थी यह तो!

वह चौंककर खड़े हो गए। वह सोनेवालों को जगाना चाहते थे, क्योंकि अब और समय गँवाया नहीं जा सकता था। लेकिन जब वह उस तरफ मुड़े, जहाँ अंकल बिली लेटे हुए थे तो उन्होंने देखा कि वह नहीं थे। उनके दिमाग में संदेह उभरा और उनके होंठों पर एक लानत। वह दौड़कर उस जगह पहुँचे, जहाँ खच्चर बँधे हुए थे—अब वहाँ खच्चर भी नहीं थे। पगडंडियाँ पहले ही तेजी से बर्फ में गायब हो रही थीं।

इस क्षणिक रोमांच ने ओकहर्स्ट महोदय को वापस आग के पास पहुँचा दिया। लेकिन उनकी हमेशा बनी रहनेवाली शांतचित्तता ने उनका साथ भी नहीं छोड़ा था और उनके हँसमुख चित्तीदार चेहरे पर मुसकान थी। कुँआरी पाइनी अपनी कमजोर बहनों के साथ इतने प्यारे तरीके से सो रही थी, मानो स्वर्गदूत उसकी रक्षा कर रहे हों; और ओकहर्स्ट महोदय ने अपने कंबल को अपने कंधों पर खींचते हुए अपनी मूँछों पर हाथ फेरा और भोर की प्रतीक्षा करने लगे। भोर धीरे-धीरे बर्फ के गालों के भँवरदार कुहासे में आई। अब देखने को जो कुछ बचा था, वह जादू से

बदला हुआ दिखाई दे रहा था। उन्होंने घाटी के पार देखा और वर्तमान तथा भविष्य को इन शब्दों में बाँध दिया —''बर्फ में घिर गए!''

ओकहर्स्ट महोदय ने खाने-पीने के उस सामान का हिसाब लगाया, जो टोली के भाग्य से कुटिया के अंदर रखा हुआ था और इसलिए अंकल बिली के धूर्त हाथों से बच गया था। काफी होशियारी से हिसाब लगाने पर यह सच्चाई सामने आई कि अगर बहुत सँभलकर और अक्लमंदी से चला जाए तो उसके सहारे दस दिन और काटे जा सकते थे।

''इसका मतलब है,'' ओकहर्स्ट महोदय ने धीमे से इनोसेंट से कहा, ''बशर्ते तुम हमें खाने का सामान देने को राजी हो। अगर तुम राजी नहीं हो—और शायद तुम्हें होना भी नहीं चाहिए—तो तुम अंकल बिली के राशन लेकर लौटने तक इंतजार कर सकते हो।''

किसी रहस्यमय कारणवश ओकहर्स्ट महोदय अपने आपको अंकल बिली की दुष्टता का भंडाफोड़ करने को तैयार नहीं कर पाए और इसलिए उन्होंने यह निराधार अनुमान सामने रख दिया कि अंकल बिली डेरे से भटक गए होंगे और दुर्योग से जानवरों को बिदका दिया होगा। उन्होंने डचेस और मदर शिप्टन को भी इस बारे में चेता दिया, जिन्हें अपने साथी की गद्दारी के बारे में सचमुच पता नहींथा।

''जब उन्हें किसी भी बात का पता चलेगा तो उन्हें हम सभी की सच्चाई का भी पता चल ही जाएगा।'' उन्होंने अर्थपूर्ण ढंग से कहा था, ''और उन्हें अभी डरा देना अच्छा नहीं रहेगा।''

टॉम सिमसन ने ओकहर्स्ट महोदय की खिदमत में अपना सारा सांसारिक भंडार ही पेश नहीं कर दिया, बल्कि उसे तो अपने इस जबरदस्ती के कश में भी जैसे मजा आ रहा था!

''हम एक हफ्ते के लिए डेरे का मजा लेंगे और फिर बर्फ पिघल जाएगी और हम सब साथ-साथ वापस चले जाएँगे।'' उस नौजवान की प्रफुल्लता और ओकहर्स्ट महोदय की शांतचित्तता ने दूसरों को भी अपने प्रभाव में ले लिया। 'इनोसेंट' ने चीड़ की डालियों से बिना छत की कुटिया के लिए फटाफट एक छप्पर तैयार कर डाला और डचेस ने पाइनी को हिदायत दे-देकर कुटिया को अंदर से इतनी सुरुचि और युक्ति के साथ सजा डाला कि उस देहाती कन्या की नीली आँखें पूरी फटी-की-फटी रह गईं—''मैं अब समझ गई कि आप पोकर फ्लैट में अच्छी चीजों की आदी हैं।'' पाइनी ने कहा। डचेस के गालों पर की व्यावसायिक रंगत को किसी ऐसे भाव ने लाल कर दिया, जिसे छिपाने के लिए वह एकदम से वहाँ से हट गई और मदर शिप्टन ने पाइनी से अनुरोध किया कि वह ''बातें न बनाए।'' लेकिन जब शिप्टन महोदय पगडंडी की तलाश से थक कर वापस आए तो उन्हें चट्टानों से सुखद हँसी गूँजने की आवाज सुनाई दी। वह थोड़ा चौंककर रुक गए और उन्हें सहज तौर पर सबसे पहले व्हिस्की का ही खयाल आया, जिसे उन्होंने होशियारी से छिपा दिया था।

''लेकिन यह फिर भी व्हिस्की जैसी आवाज तो नहीं लगती।'' उस जुआरी ने कहा। आर-पार दिखाई न देनेवाला तूफान अभी भी बना हुआ था और जब ओकहर्स्ट महोदय ने उसके पार धधकती आग और उसे घेरकर बैठी टोली को देख लिया, तब जाकर उन्हें यह विश्वास हुआ कि यह 'खरा मनोरंजन' ही था।

ओकहर्स्ट महोदय ने व्हिस्की के साथ क्या ऐसी चीज के रूप (ताश के) पत्तों को भी छिपाकर रख दिया था, जो समुदाय के लिए प्रतिबंधित होती है, यह तो मैं नहीं कह सकता। किंतु, मदर शिप्टन के शब्दों में, यह निश्चित था कि उन्होंने उस पूरी शाम एक बार भी 'पत्ते' शब्द नहीं बोला था। संयोगवश उनका समय एक एकार्डियन के सहारे कट गया, जिसे टॉम सिमसन ने कुछ दिखावे के साथ अपने सामान से निकाला था। इस बाजे को साधने में आई कुछ कठिनाइयों के बावजूद पाइनी वुड्स इससे कुछ अनचाही धुनें निकालने में सफल रही और उसके साथ

करताल पर 'इनोसेंट' ने संगत की। लेकिन उस शाम के उत्सव का उत्कर्ष तब आया जब उन्होंने इस बहिरंग सत्संग का अनगढ़-सा भजन शुरू किया, जिसे दोनों पेरमियों ने हाथ में हाथ डालकर बड़ी निश्छलता के साथ और खूब चिल्ला-चिल्लाकर गाया। मुझे शंका है कि किसी भक्तिमयता के कारण नहीं बल्कि इसके समवेत गान में 'कोविनेंटर' की लय और एक निश्चित ललकारवाली तान के कारण ही इसने दूसरों को भी जल्दी ही अपने प्रभाव में ले लिया (कोविनेंटर के सदस्य चर्च ऑव इंग्लैंड से अपने अलग होने का उत्सव जागरण-गीत गाकर मनाते थे), और अंत में वे भी इसकी टेक में शामिल हो गए—

''है मुझे अभिमान प्रभु की सेवा में जीने का,
और उसकी सेना में मैं मरकर रहूँगा।''

चीड़ वृक्ष झूम रहे थे, तूफान उस अभागी टोली के ऊपर हिलोरें-मार रहा था और वेदी की लपटें आकाश की ओर लपक रही थीं, मानो यह प्रतिज्ञा का प्रतीक हो।

आधी रात को तूफान थम गया, घुमड़ते बादल छँट गए और सितारे उस सोते शिविर के ऊपर तत्परता से चमकने लगे। ओकहर्स्ट महोदय की व्यावसायिक आदतों ने उन्हें ऐसा बना दिया था कि वह कम-से-कम नींद में भी जी लेते थे और जब टॉम सिमसन के साथ उन्होंने यह कहकर 'इनोसेंट' से बहाना बनाया कि वह अकसर एक-एक हफ्ता बिना सोए रहे हैं।

''क्या करने के लिए?'' टॉम ने पूछा।

''पोकर!'' ओकहर्स्ट ने सारगर्भित जवाब दिया।

''जब किसी व्यक्ति पर किस्मत मेहरबान होती है, अंधाधुंध किस्मत—तो वह थकता नहीं है। किस्मत पहले समर्पण करती है। तब किस्मत होती है।''

जुआरी ने मनन करते हुए कहा, ''एक जबरदस्त अजीब चीज होती है। आप इसके बारे में निश्चित तौर पर कुछ जानते हैं तो वह यह है कि इसका बदलना लाजिमी होता है। और यह कब बदलेगी, इसका पता लगाना ही आपको कुछ बना देता है। जब से हमने पोकर फ्लैट छोड़ा है, हम पर बदकिस्मती का दौर आया है—अब तुम आ गए हो और आते ही तुम भी इसमें फँस गए हो। अगर तुम अपने पत्ते सही ढंग से रखते हो तो तुम बिलकुल ठीक हो। क्योंकि''—जुआरी ने संदर्भ से कटकर खुशमिजाजी से आगे कहा—

''है मुझे अभिमान प्रभु की सेवा में जीने का,
और उसकी सेना में मैं मरकर रहूँगा।''

तीसरा दिन आया और सूरज ने सफेद आवरणवाली घाटी में झाँकते हुए उन बहिष्कृतों को धीरे-धीरे घट रहे उनके राशन के भंडार को सुबह के खाने के लिए बाँटते देखा। यह उस पहाड़ी जलवायु की एक विचित्रता थी कि इसकी किरणों ने उस सर्द भू-दृश्य पर एक सदयता बिखेर दी, मानो यह अतीत के प्रति सखेद शोक प्रदर्शन हो! लेकिन उससे कुटिया के चारों ओर बर्फ के ऊँचे-ऊँचे ढेर ही उजागर हुए—यह उन चट्टानी तटों के नीचे विद्यमान सफेदी का एक आस-रहित, अलंघित और मार्गरहित समुद्र था, जिनमें ये बहिष्कृत लोग अभी भी चिपके हुए थे। अद्भुत रूप से साफ हवा के पार पोकर फ्लैट के चरागाही गाँव का धुआँ मीलों दूर उठ रहा था। मदर शिप्टन ने इसे देखा और अपनी चट्टानी गढ़ी के एक सुदूर शिखर से उस दिशा में एक अंतिम गाली उछाल दी। यह उसका अंतिम भर्त्सनामय प्रयास था, और शायद इसी कारण उसमें उदात्तता का कुछ अंश भी था। जैसाकि उसने अकेले में डचेस से कहा, इससे उसे फायदा हुआ था।

''बस, तुम वहाँ बाहर निकलकर लानत भेजो और फिर देखो।'' फिर वह 'बच्ची' का दिल बहलाने के काम में

लग गई। वह और डचेस दोनों पाइनी को यही कहकर प्रसन्न होती थीं। पाइनी कोई बच्ची नहीं थी, लेकिन यह उन दोनों का एक सांत्वनादायक शाबाशी पाना चाहती थी। पाइनी गाली-गलौज नहीं करती थी और गलत भी नहीं थी।

जब तंग घाटियों से एक बार फिर रात चढ़ आई तो एकॉर्डियन के अस्पष्ट स्वर शिविर की लपलपाती आग के पास रुक-रुककर और लंबी आहों में उठते-गिरते रहे। लेकिन संगीत उस पीड़ामयी रिक्तता को पूरी तौर पर भरने में नाकाम रहा, जो अपर्याप्त भोजन के कारण बनी थी और पाइनी ने ध्यान बँटाने का एक उपाय सुझाया कि कहानी सुनी-सुनाई जाए; न तो ओकहर्स्ट महोदय और न ही उनकी महिला साथिनें अपने व्यक्तिगत अनुभवों को बताने के लिए तैयार थीं, इसलिए यह योजना भी नाकाम होने जा रही थी; लेकिन 'इनोसेंट' इसके लिए तैयार हो गया—अभी कुछ महीने पहले उसकी एक प्रति कहीं से मिल गई थी। अब वह उस काव्य की मुख्य घटनाओं को सैंडी बार की मौजूदा बोली में सुनाना चाह रहा था, क्योंकि उसकी विषय-वस्तु तो उसे पक्की तरह से याद हो गई थी, जबकि शब्दों को वह बिलकुल भूल गया था। इस तरह, उस सारी रात होमर के देवतुल्य चरित्र एक बार फिर धरती पर उतर आए। उपद्रवी ट्रॉयकसी और मायावी यूनानी हवाओं में गुत्थम-गुत्था होने लगी और दर्रों के विशाल चीड़ वृक्ष जैसे पिलियस के बेटे के क्रोध के आगे झुक गए। ओकहर्स्ट चुपचाप संतोष के साथ सुनते रहे। सबसे अधिक रुचि तो उन्हें 'चपल चरणोंवाले ओकहर्स्ट' की नियति में हो रही थी, जिसे 'इनोसेंट' बार-बार 'ऐश-हील्ज' कहे जा रहा था।

इस तरह, बहुत कम खाने और बहुत ज्यादा होमर और एकार्डियन में बहिष्कृतों के सिर पर से एक हफ्ता निकल गया। सूरज ने एक बार फिर उनका साथ छोड़ दिया और एक बार फिर धूसर आसमान से बर्फ के गाले जमीन पर बिछ गए। बर्फ का यह घेरा दिन-ब-दिन उनके और पास सिमटता गया और अंत में वह क्षण आया कि उन्होंने अपनी कारा से नजर उठाकर चौंधिया देनेवाली सफेद बर्फ की पटी दीवारों को देखा, जो उनके सिरों से 20 फीट ऊपर चली गई थी। अब उनके लिए उनके पास गिरे हुए उन पेड़ों से भी अपनी आग को जलाए रखना मुश्किल हो गया था, जो पटी हुए बर्फ में अब आधे छिप चुके थे और फिर भी उनमें से कोई शिकायत नहीं कर रहा था। प्रेमी युगल ने इस विषादमय दृश्य से मुड़कर एक-दूसरे की आँखों में देखा और वे खुश थे। ओकहर्स्ट महोदय ने शांतचित्त होकर अपने आपको इस हारती हुई बाजी में जमाया। डचेस ने पहले से अधिक खुशमिजाजी के साथ पाइनी की देखभाल का जिम्मा सँभाल लिय। बस, कभी टोली की सबसे मजबूत सदस्य होनेवाली एक मदर शिप्टन ही थी, जो बीमार और मुरझाई हुई दिख रही थी। दसवें दिन की आधी रात को उसने ओकहर्स्ट को अपने पास बुलाया।

''मैं जा रही हूँ,'' उसने शोकाकुल कमजोरी के स्वर में कहा, ''लेकिन इस बारे में कुछ कहना नहीं। बच्चों को जगाना नहीं। मेरे सिर के नीचे से यह पोटली निकालकर खोली। इसमें मदर शिप्टन का पिछले पूरे हफ्ते का राशन था। जो उसने छुआ भी नहीं था।

''यह बच्ची को दे देना।'' उसने सोती हुई पाइनी की तरफ इशारा करके कहा। ''लोग इसे यही बोलते हैं।'' औरत ने शोकाकुल स्वर में कहा और फिर से लेट गई और फिर दीवार की तरफ करवट लेकर चल बसी।

उस दिन एकार्डियन और करताल क को एक तरफ रख दिया गया और होमर को भुला दिया गया। जब मदर शिप्टन की देह को बर्फ में दफना दिया गया तो शिप्टन महोदय इनोसेंट को एक तरफ ले गए और उसे बर्फ पर चलने के एक जोड़े जूते दिखाए, जो उन्होंने पुरानी खुरजी से बनाए थे।

''अभी भी उसे बचाने की सौ में एक संभावना है।'' उन्होंने पाइनी की तरफ इशारा करते हुए कहा, ''लेकिन वह वहाँ है।'' उन्होंने पोकर फ्लैट की तरफ इशारा करते हुए आगे कहा।

''अगर तुम दो दिन में वहाँ पहुँच सको तो वह बच जाएगी।''
''और आप?'' टॉम सिमसन ने पूछा।
''मैं यहीं रुकूँगा।'' ओकहर्स्ट महोदय का दो टूक जवाब था।
प्रेमी युगल ने एक लंबे आलिंगन के साथ एक-दूसरे को विदा कहा।
''आप भी तो नहीं जा रहे न?'' डचेस ने ओकहर्स्ट महोदय को 'इनोसेंट' के साथ जाने की प्रतीक्षा में देखकर उनसे कहा।
''दर्रे तक जा रहा हूँ।'' उन्होंने जवाब दिया। फिर वह अचानक मुड़े और डचेस को चूम लिया। उसका पीला चेहरा सुर्ख हो गया और उसके काँपते हाथ-पाँव विस्मय से अकड़ गए।
रात आ गई, लेकिन ओकहर्स्ट महोदय नहीं आए। रात अपने साथ फिर से तूफान ले आई और बर्फ का भँवर भी। तब आग में लकड़ियाँ डालते समय डचेस ने देखा कि किसी ने कुटिया के पास चुपचाप इतनी लकड़ियाँ जमाकर रख दी थीं, जो कुछ दिन और ईंधन के लिए काफी होंगी। उसकी आँखों में आँसू आ गए, लेकिन उसने पाइनी से उन्हें छिपा लिया।
दोनों औरतें बहुत कम सो पाईं। सुबह एक-दूसरे के चेहरों में देखते हुए उन्होंने अपना भाग्य पढ़ने का उद्यम किया। दोनों में से किसी ने कुछ नहीं कहा, किंतु पाइनी अधिक मजबूत लड़की की स्थिति स्वीकारते हुए डचेस के पास आई और उसकी कमर में हाथ डाल दिया। शेष दिन भर वे इसी अवस्था में रहीं। उस रात तूफान अपने भीषणतम रूप में पहुँच गया और लताओं के सुरक्षा कवच को भेदते हुए कुटिया में ही घुस आया।

सुबह होते-होते उन्होंने आग में लक ड़ियाँ झोंकने में स्वयं को असमर्थ पाया और वह धीरे-धीरे बुझ गईं। अंगारे धीरे-धीरे काले पड़ने लगे तो डचेस फिर पाइनी के और पास सरक आई और उसने कई घंटों का मौन तोड़ते हुए कहा, ''पाइनी, तुम प्रार्थना कर सकती हो?''
''नहीं, मेरी जान!'' पाइनी ने सरलता से कहा। डचेस को पता नहीं क्यों राहत महसूस हुई और पाइनी के कंधे पर सिर रखकर वह खामोश हो गई। उनमें जो अपेक्षाकृत कमसिन और पवित्र थी, उसका कुआँरा सीना और उसकी दूषित बहन के लिए तकिया बन गया और इस तरह टिककर वे दोनों सो गईं।

हवा शांत हो गई, मानो डर रही हो कि कहीं वे जाग न जाएँ! बर्फ के गोल चीड़ की लंबी डालियों से झड़कर सफेद परिंदों की तरह उड़े और उन सोती हुई लड़कियों के आस-पास जम गए। छँटे बादलों के बीच से चाँद उस जगह को देख रहा था, जहाँ कभी शिविर हुआ करता था। लेकिन तमाम मानवीय कलंक, लौकिक पीड़ा के तमाम चिह्न उस अम्लान आवरण के नीचे छिप गए थे, जो दयापूर्वक ऊपर से फेंका गया था।

वे उस पूरे दिन सोती रहीं और उससे अगले दिन भी और जब आवाजों व पदचापों ने शिविर की खामोशी को तोड़ा, तब भी वे नहीं जागीं। और जब तरस खाती उँगलियों ने उनके विवर्ण चेहरों से बर्फ हटाई तो उनपर जो एक शांति सी पसरी थी, उसे देखकर आपके लिए भी यह बताना मुश्किल होता कि उनमें से वह लड़की कौन सी थी, जिसने पाप किया था। पोकर फ्लैट के कानून ने भी इस बात को माना और वह भी उन्हें एक-दूसरे की बाँहों में वैसे ही बँधा छोड़कर वहाँ से चला गया।
लेकिन दर्रे के शीर्ष पर एक सबसे बड़े चीड़ वृक्ष पर उन्हें उसकी छाल पर एक बड़े शिकारी छुरे से लगी चिड़ी की दुक्की मिली। इस पर सधे हाथों से पेंसिल से लिखा हुआ था—

'इस वृक्ष के नीचे
दफन है देह

जॉन ओकहर्स्ट
की,
जिसकी बदकिस्मती का दौर
23 नवंबर, 1850 को चला
और
जिसने अपने चेक
7 दिसंबर, 1850 को
सौंप दिए।'

और स्पंदनहीन व ठंडा, जिसकी बगल में थी एक पिस्तौल और सीने में गोली; फिर उतना ही शांतचित्त जितना जीवन में बर्फ के नीचे पड़ा था वह व्यक्ति, जो पोकर फ्लैट के बहिष्कृतों में एकदम सबसे मजबूत और फिर भी सबसे कमजोर था।

❑

चिकामॉगा

-एंब्रोज बीयर्स

पतझड़ के मौसम की एक धूपदार सुबह थी वह। एक छोटे से खेत के एक कच्चे घर में रहनेवाला एक बच्चा वहाँ से बिना किसी के देखे निकल गया और रास्ता भटक गया। वह एक जंगल में जा पहुँचा। स्वतंत्रता के इस नए माघैल में वह प्रसन्न था नई-नई चीजें देखने और रोमांच का यह मौका पाकर; क्योंकि इस बच्चे की आत्मा, अपने पूर्वजों के शरीरों में, हजारों साल तक अन्वेषण और विजय के स्मरणीय कारनामों में दीक्षित हुई थी—ऐसी जीतें युद्ध की, जिनके निर्णायक क्षण शताब्दियाँ रही थीं और जिनके विजेताओं के शिविर तराशे गए पत्थर के शहर थे। अपनी नस्ल के पालने से उसने विजय पताका फहराते हुए दो महाद्वीपों में होकर अपना रास्ता बनाया था और एक विशाल सागर को पार करते हुए तीसरे महाद्वीप में प्रवेश किया था व वहाँ युद्घ और प्रभुत्व की विरासत लेकर जन्म पाया था।

यह बच्चा लगभग छह वर्ष का एक लड़का था। वह एक गरीब किसान का बेटा था। अपनी जवानी के दिनों में उसका बाप एक सिपाही हुआ करता था। उसने नंगे जंगलियों से लड़ाई की थी और अपने देश के झंडे के पीछे सुदूर दक्षिण की एक सभ्य नस्ल की राजधानी में जा पहुँचा था। किसानी की शांत जिंदगी में उसके योद्धा की आग मरी नहीं थी। एक बार सुलग जाए तो यह कभी बुझती नहीं है। उसे फौजी किताबें व तसवीरें बहुत पसंद थीं और उसका लड़का भी इतना समझ गया था कि उसने अपने लिए लकड़ी की एक तलवार बना ली थी, हालाँकि उसके बाप को भी इस बात का इल्म नहीं था कि यह किसलिए थी! जैसे कि एक वीर नस्ल के बेटे को होना चाहिए, इस समय वह इस हथियार को बहादुरी के साथ उठाए हुए था। जंगल के धुपहले क्षेत्र में वह जब-तब ठहर जाता और थोड़े अतिरंजित ढंग में आक्रमण व बचाव की मुद्राएँ बना लेता था, जिन्हें उसने नक्काश की कला से सीखा था। अपना रास्ता रोकने की कोशिश करनेवाले अदृश्य दुश्मनों पर वह जिस आसानी से कामयाबी हासिल करता जा रहा था, उससे वह लापरवाह हो गया और इस लापरवाही में उसने एक आम फौजी गलती यह कर दी कि वह अपनी खोज में एक खतरनाक सीमा तक चला गया। इस तरह, अब वह एक चौड़े व छिछले झरने के किनारे पर खड़ा था और उसके तेज पानी ने उस भागते दुश्मन के खिलाफ उसकी सीधी बढ़त को रोक दिया, जो अबूझ आसानी के साथ उस झरने को पार कर गया था। लेकिन यह निडर विजेता परेशान नहीं हुआ। विशाल सागर को पार करनेवाली नस्ल की आत्मा उस नन्हे सीने में अजेय जल रही थी और वंचित होनेवाली नहीं थी। उसे एक ऐसी जगह मिल गई जहाँ धारा के तल में कु छ पत्थर एक कदम या एक छलाँग की दूरी पर रखे थे। वह उनपर पाँव रखकर पार चला गया और फिर से अपने काल्पनिक दुश्मन की पिछली पंक्ति पर टूट पड़ा और उसने उन सभी को अपनी तलवार से खत्म कर दिया।

अब जबकि लड़ाई जीती जा चुकी थी, तो अक्लमंदी का यह तकाजा था कि वह अपने सैनिक ठिकाने पर लौट जाए। मगर अफसोस, अनेक अधिक शक्तिशाली विजेताओं की तरह और सबसे शक्तिशाली विजेता की तरह वह —

'युद्ध-पिपासा को रोक (नहीं सका),
न सीख (सका) कि प्रलाभित भाग्य उच्चतम

नक्षत्र को देगा छोड़।'

खाड़ी के तट से आगे बढ़ते हुए उसने अपने आपको अचानक एक नए और अधिक भीषण दुश्मन के सामने पाया : जिस रास्ते पर वह जा रहा था, उसमें बैठा था सीधा तनकर, कान खड़े किए और पंजे आगे फैलाए—एक खरगोश! बच्चा चौंककर चिल्लाया और मुड़कर भाग खड़ा हुआ। उसे पता नहीं था वह किस दिशा में जा रहा था! वह बस अस्पष्ट आवाजों में चीखता हुआ अपनी माँ को पुकारता भागा जा रहा था। वह रोता हुआ गिरता-पड़ता चला जा रहा था। उसकी नरम त्वचा बेरहमी से कँटीली झाड़ियों ने चीर दी थी। उसका नन्हा दिल डर के मारे जोरों से धड़क रहा था। उसकी साँस उखड़ गई थी। आँसुओं के कारण उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वह जंगल में खो गया था! फिर, एक घंटे से भी ज्यादा समय तक वह उलझी झाड़ियों में भ्रांत कदमों से भटकता रहा और फिर अंत में थकान से चूर होकर धारा से कुछ ही गज की दूरी पर दो चट्टानों के बीच एक तंग जगह में लेट गया। वह अपनी खिलौना तलवार को अभी भी कसकर पकड़े था, जो अब हथियार की जगह एक साथी बन गई थी और इसी हालत में सिसकते-सिसकते वह सो गया। जंगली परिंदे उसके सिर के ऊपर खुशी में गा रहे थे, गिलहरियाँ अपनी शानदार पूँछ हिलाती और चिंचियाती हुई एक से दूसरे पेड़ पर भागी फिर रही थीं। उन्हें इस स्थिति की दयनीयता का भान नहीं था और दूर कहीं एक अजीब, दबी-दबी-सी गरज थी, मानो तीतर प्रकृति को अनादि काल से गुलाम बनानेवालों के पुत्र पर उसकी विजय का ढोल पीटकर उत्सव मना रहे हों! और उधर उस छोटे से बागान में, जहाँ घबराए हुए गोरे लोग और अश्वेत जन खेतों व बाड़ को अंधाधुंध तलाश रहे थे, एक माँ का दिल अपने खोए बेटे के लिए टूटा जा रहा था।

इस तरह घंटों बीत गए और फिर सोया हुआ नन्हा बालक उठकर खड़ा हो गया। शाम की ठिठुरन उसके हाथ-पाँवों में थी और अँधेरे का डर उसके दिल में था। लेकिन वह आराम कर चुका था और अब रो नहीं रहा था। किसी अदृश्य भाव ने उसे सक्रिय होने को बाध्य किया और वह अपने आस-पास खड़ी झाड़ियों के बीच जूझता हुआ आगे बढ़ने लगा और एक अधिक खुले मैदान में आ गया। उसके दाहिनी ओर झरना था, बाईं ओर एक हलकी चढ़ान थी, जिस पर इक्का-दुक्का पेड़ थे। सबके ऊपर झुट-पुटे का घिरता अंधकार था। एक पतली, भुतही धुंध पानी पर तिर रही थी। इसने उसे डरा दिया और उसका मन उससे दूर भागने को हुआ। अब उसने झरने को पार नहीं किया और उस तरफ नहीं गया जिधर से वह आया था, बल्कि उसने उस ओर अपनी पीठ कर ली और अँधेरे घिरे जंगल की तरफ आगे बढ़ गया। अचानक उसने अपने सामने एक अजीब चलती-फिरती चीज देखी, जिसे उसने कोई बड़ा जानवर समझ—कुत्ता, सुअर—उसे उसका नाम पता नहीं था; शायद यह भालू से मुठभेड़ की स्पष्ट कामना भी नहीं की थी। लेकिन इस चीज के रूप या चलने-फिरने में एक सा कुछ था—इसके आगे बढ़ने में ऐसा कुछ अटपटापन था कि वह समझ गया कि यह भालू नहीं था और भय ने उसकी उत्सुकता को रोक दिया। वह चुपचाप खड़ा हो गया और जैसे-जैसे यह जीव धीरे-धीरे आगे आता गया, हर पल उसमें हिम्मत आती गई; क्योंकि उसने देखा कि कम-से-कम इसके पास खरगोश जैसे बड़े-बड़े डरावने कान नहीं थे। शायद उसके कच्चे मन में कहीं यह भाव था कि इस जीव की डगमगाती, अटपटी चाल कुछ जानी-पहचानी- सी थी। अभी यह जीव इतना निकट नहीं आया था कि उसकी शंकाओं का समाधान होता कि तभी उसने उसके पीछे ऐसे ही अनेक जीव देखे। दाईं और बाईं ओर भी कई जीव थे। उसके आस-पास की खाली जगह उनसे भरी हुई थी। वे सभी झरने की ओर बढ़ रहे थे।

वे मनुष्य थे। वे अपने हाथों और घुटनों के बल रेंग रहे थे। वे केवल अपने हाथों का इस्तेमाल कर रहे थे और अपने पाँवों को घसीट रहे थे। वे केवल अपने घुटनों से काम ले रहे थे और उनकी बाँहें दोनों तरफ निष्क्रिय लटक

रही थीं। वे अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करते, लेकिन इस कोशिश में औंधे गिर जाते थे। वे कुछ भी सहजता से नहीं कर रहे थे और कुछ भी एक जैसा नहीं कर रहे थे, सिवाय इसके कि वे एक ही दिशा में पाँव-पाँव आगे बढ़ रहे थे। वे अकेले जोड़े में और छोटे-छोटे जत्थों में अँधेरे में से आ रहे थे। उनमें से कुछ रह-रहकर रुक जाते थे, जबकि दूसरे धीरे-धीरे रेंगते हुए उनसे आगे निकल जाते थे, और फिर से आगे बढ़ना शुरू कर देते थे और उनके पीछे खड़ा काला जंगल ऐसा लगता था जैसे कभी खाली ही नहीं होगा। वह मैदान ही जैसे जलधारा की तरफ चल रहा था। कभी-कभी ऐसा होता कि उनमें से जो रुक गया था, वह फिर आगे नहीं जाता था, बल्कि निश्चेष्ट पड़ा रह जाता था। वह मर जाता था। उनमें से कुछ तो रुककर अपने हाथों से अजीब मुद्राएँ बनाते थे। अपनी बाँहें खड़ी कर लेते और उन्हें फिर नीचे कर लेते थे, अपने सिर क को पकड़ लेते थे। अपनी हथेलियों को इस तरह ऊपर की ओर फैलाते थे, जैसे कभी-कभी आदमी लोग सार्वजनिक प्रार्थना में करते दिखाई देते हैं।

बच्चे ने इन सभी बातों पर गौर नहीं किया। यह सब तो कोई बड़ा व्यक्ति ही देख सकता था। बच्चे ने इसके सिवाय अधिक कुछ नहीं देखा कि ये आदमी थे, फिर भी शिशुओं की तरह रेंग रहे थे। आदमी होते हुए वे भयंकर नहीं थे, हालाँकि उनका पहनावा अजीब था। बच्चा आजादी से उनके बीच आ-जा रहा था। वह एक के बाद दूसरे के पास जाता और बच्चों की-सी उत्सुकता के साथ उनके चेहरों पर झाँकता। उन सभी के चेहरे बिलकुल सफेद थे और कई पर तो लाल रंग की धारियाँ व धब्बे थे। इसमें कुछ ऐसी बात थी—शायद उनके विचित्र हाव-भावों और चलने के ढंग से भी कुछ ऐसी बात थी—कि उसे पुते चेहरेवाले उस जोकर की याद हो आई, जिसे उसने पिछली गरमियों में सर्कस में देखा था और उसे देखकर वह खूब हँसा था। लेकिन वे रेंगते ही चले आ रहे थे ये विकलांग और लहूलुहान लोग और उसकी तरह वे भी उसकी हँसी और अपनी खुद की भयावह गंभीरता के नाटकीय अंतर के प्रति अनजान थे। बच्चे के लिए यह एक आनंददायक दृश्य था। उसने अपने बाप के हब्शियों को उसके मनोरंजन के लिए अपने हाथों और घुटनों के बल रेंगते देखा था—उनपर इस विश्वास के साथ सवारी की थी कि वे उसके घोड़े थे। इस समय भी वह इन रेंगते जीवों में से एक के पास पीछे से गया और उस पर फुरती से दानों पाँव इधर-उधर करके चढ़ गया। वह आदमी सीने के बल झुक गया, फिर उसने अपने आपको सँभालते हुए किसी अनसधे घोड़े की तरह छोटे बच्चे की तरफ मुँह में निचला जबड़ा नहीं था—उसके ऊपरी दाँतों से लेकर गले तक एक बड़ी सी लाल खाली जगह थी, जिसमें मांस और हड्डियों के टुकड़े लटक रहे थे। अस्वाभाविक रूप से बड़ी नाक, ठुड्डी गायब और आँखें डरावनी। इन सबके कारण वह आदमी एक बड़ा शिकारी परिंदा दिखाई दे रहा था, जिसके गले और सीने पर उसके शिकार के खून की लाली थी। वह आदमी अपने घुटनों पर खड़ा हो गया और बच्चा अपने पाँवों पर। आदमी ने बच्चे को घूँसा दिखाया। बच्चा आखिरकार डर गया और पास ही खड़े एक पेड़ की तरफ दौड़ा। वह पेड़ के दूर वाले हिस्से पर चढ़ गया और स्थिति को और गंभीर होकर देखने लगा। और इस तरह वह फूहड़ भीड़ धीरे-धीरे और दर्दनाक तरीके से एक वीभत्स स्वाँग के अंदाज घिसट-घिसटकर चलती रही—ढलान से नीचे की ओर, बड़े काले गुबरैलों की तरह। चलने की क कोई आवाज किए बिना आगे बढ़ती रही—गहन और पूर्ण नीरवता में।

वह भुतहा परिदृश्य अंधकारमय होने के बजाय उजला होने लगा। झरने के पार पेड़ों की कतारों में होकर एक अजीब-सी लाल रोशनी चमक रही थी और उसकी पृष्ठभूमि में पेड़ों के तने और शाखाएँ काली झालर बना रहे थे। यह प्रकाश उन रेंगते जीवों पर पड़ा और उनकी शैतानी छायाएँ बनने लगीं। रोशनी में नहाई घास पर इन छायाओं से उनकी हरकतों की हास्यास्पद छवियाँ बन रही थीं। रोशनी उनके चेहरों पर पड़ी तो उनकी सफेदी में गेरुआ रंग मिल गया और वे धब्बे और स्पष्ट हो गए, जिन्होंने उनमें से कई को चित्तीदार और गंदा कर रखा था। इस प्रकाश

में उनके कपड़ों पर लगे धातु के टुकड़े और बटन चमक गए। लड़का सहज ही इस बढ़ती आभा की ओर मुड़ा और अपने भयंकर साथियों के साथ ढलान से नीचे उतरने लगा। वह कुछ ही पलों में भीड़ में सबसे आगे चलनेवालों को पीछे छोड़ चुका था। उसकी बेहतर स्थितियों को देखते हुए यह कोई कमाल नहीं था। वह भीड़ की अगुआई करने लगा और गंभीरता से उस जुलूस के निर्देशन में लग गया। उसकी लकड़ी की तलवार अभी भी उसके हाथ में थी। वह उन लोगों की रफ्तार से कदम मिलाकर चलने लगा। कभी-कभी वह पीछे मुड़कर मानो यह देखता था कि उसकी सेना पीछे तो नहीं छूट गई। सच में इस तरह के किसी नेता के पास पहले कभी इस तरह के अनुयायी नहीं रहे थे।

पानी की ओर बढ़ते इस भयंकर जुलूस के अतिक्रमण के कारण जमीन अब धीरे-धीरे सँकरी होती जा रही थी और इस जमीन पर कुछ चीजें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं, जिनका इस नेता के विचार में आपस में कोई संबंध नहीं था। वहाँ कहीं एक कंबल था, जिसे लंबाई में कसकर लपेटकर दोहरा कर दिया गया था और उसके सिरों को डोरी से बाँधा हुआ था। कहीं पीठ पर लादनेवाला भारी थैला पड़ा था और कहीं कोई टूटी रायफल। संक्षेप में, वहाँ ऐसी चीजें बिखरी पड़ी थीं, जो वापस होती सेना अपने पीछे छोड़ जाती है। अपने शिकारियों से बचकर भागते आदमियों के निशान थे वे। यहाँ आकर जलधारा के पास कुछ निचली भूमि का हिस्सा था और इसके पास जमीन पर हर जगह गीली मिट्टी में आदमियों व घोड़ों के पाँव के निशान थे। अपनी आँखों का अच्छा इस्तेमाल करने में अधिक तजुरबा रखनेवाला कोई व्यक्ति होता तो यह गौर करता कि ये निशान दोनों दिशाओं में जा रहे थे। जमीन को दो बार पार किया गया था—आगे बढ़ते हुए और वापसी में। अभी कुछ घंटे पहले इन हताश, आहत आदमियों ने अपने अधिक भाग्यशाली और अब दूरस्थ साथियों के साथ हजारों की संख्या में जंगल में प्रवेश किया था। एक के बाद एक झुंड बनाकर और फिर कतारों में आनेवाली उनकी टोलियाँ बच्चे के चारों तरफ से गुजरी थीं। एक तरह से वे सोए बच्चे को रौंदती हुई चली गई थीं। उनके चलने के सरसराहट और भुनभुनाहट में भी उसकी नींद नहीं टूटी थी। वह जहाँ लेटा हुआ था वहाँ से बस थोड़ी ही दूर उन्होंने एक जंग लड़ी थी; लेकिन उसने बंदूकों की गरज, तोप के धमाके और 'क प्तानों की दपट और चिल्लाहट' को बिलकुल नहीं सुना था। इस सबके बीच वह अपनी छोटी सी लकड़ी की तलवार क को पकड़े सोता रहा था, बल्कि शायद अपने लड़ाकू परिवेश के साथ अचेतन सहानुभूति के चलते उसने तलवार को और भी कसकर पकड़ लिया था; किंतु वह संघर्ष उसकी भव्यता के प्रति उतना ही असावधान था, जितने कि वे मृतक जो गौरव के निर्माण के लिए मर गए थे।

जलधारा के दूर वाले हिस्से पर खड़े पेड़ों की कतारों के पार जलती आग, जो अपने ही धुएँ की छतरी से जमीन पर प्रतिबिंबित हो रही थी, अब पूरे परिदृश्य को घेर रही थी। इसने धुंध की लहराती रेखा को सोने की वाष्प में बदल दिया था। पानी पर जगह-जगह लाली चमक रही थी और सतह से ऊपर निकले अनेक पत्थर भी लाल हो रहे थे। लेकिन वह खून था। जो लोग कम घायल हुए थे उन्होंने पार करते समय इन पत्थरों पर ये धब्बे छोड़ दिए थे। उनको भी यह बच्चा अब उत्सुक पाँवों से पार कर रहा था। जब वह दूरवाले किनारे पर पहुँचा तो उसने वहाँ खड़े होकर अपने प्रयाण के साथियों को मुड़कर देखा। वे लोग धारा पर पहुँच रहे थे। उनमें से जो अधिक मजबूत थे, वे पहले ही तट पर आ गए थे और उन्होंने पानी में अपना मुँह डाल दिया था। तीन-चार आदमी, जो निश्चेष्ट पड़े थे, उनके जैसे सिर ही नहीं थे, यह देखकर बच्चे की आँखें आश्चर्य से फैल गईं। उसकी सत्कारी समझ भी इस तरह के ओज वाली परिघटना क को स्वीकार नहीं कर सकी। अपनी प्यास बुझाने के बाद उन आदमियों में इतनी ताकत नहीं रही थी कि वे पानी से पीछे हट जाते या अपने सिर क को उसे ऊपर रखते। वे डूब गए। उनके पीछे जंगल के खुले स्थानों में नेता क को अपनी विद्रूप कमान की उतनी ही निराकार आकृतियाँ दिखाई दीं, जितनी पहले-पहल

दिखाई दी थीं; लेकिन अब उसी संख्या में वे गतिमान नहीं थे। उसने उनका उत्साह बढ़ाने के लिए अपनी टोपी लहराई और मुसकराते हुए अपने हथियार से उस मार्गदर्शक रोशनी की ओर इशारा किया। इस विचित्र प्रस्थान के लिए आग का खंभा था वह।

अपनी सेना की वफादारी के प्रति आश्वस्त उस बालक ने अब पेड़ों की कतारों में प्रवेश किया। लाल प्रकाश में उसे आसानी से पार कर लिया। एक बाड़ पर चढ़ा। और एक खेत में होकर दौड़ने लगा। इस बीच वह बार-बार मुड़कर अपनी परछाईं के साथ खेलता जाता था, जो उसी की मुद्रा में उसका जवाब दे रही थी। और इस तरह वह एक बस्ती के जलते अवशेषों के पास पहुँच गया। हर तरफ सुनसान था! उस पूरे चमकते स्थल में एक भी प्राणी नजर नहीं आ रहा था। उसने इस बात की कोई परवाह नहीं की। यह दृश्य उसे सुखद लगा और वह लहराती लपटों के साथ-साथ खुशी में नाचने लगा। वह ईंधन लेने के लिए इधर-उधर दौड़ा; लेकिन उसे जो भी चीज मिली, वह इतनी भारी थी कि वह आग के पास जहाँ तक जा सकता था वहाँ से उस चीज को फेंकना उसके लिए संभव नहीं था। निराश होकर उसने अपनी तलवार ही आग में फेंक दी। यह प्रकृति की उच्चतर शक्तियों के आगे समर्पण था। उसका सैनिक जीवन समाप्त हो गया ।

उसने अपनी जगह बदली तो उसकी नजर कुछ नौकरों के मकानों पर पड़ी, जो अजीब ढंग से उसकी जानी-पहचानी लग रही थीं, मानो उन्हें उसने स्वप्न में देखा हुआ था। वह वहाँ खड़ा आश्चर्य के साथ उनके बारे में सोचने लगा कि तभी वह समूचा बागान अपने जंगल समेत जैसे एक धुरी पर घूमने लगा। उसका नन्हा संसार आधा घूम गया, कुतबनुमा की सुइयाँ उलटी हो गईं। उसने उस जलती इमारत को पहचान लिया—यह उसका अपना ही घर था!

इस रहस्योद्घाटन की शक्ति से स्तब्ध वह एक पल को खड़ा-का-खड़ा रह गया। फिर वह उस जली इमारत का आधा चक्कर काटता हुआ लड़खड़ाते पाँवों से भागा। वहाँ उस प्रचंड आग की रोशनी में एक औरत का निर्जीव शरीर साफ दिखाई दे रहा था। उसका सफेद चेहरा ऊपर की ओर मुड़ा हुआ था, हाथ फैले हुए थे और उनमें घास पकड़ी हुई थी। उसके कपड़े अस्त-व्यस्त थे और लंबे व काले बाल उलझे हुए थे और उनमें खून जमा था। माथे का बड़ा हिस्सा गायब था और वहाँ बने कटे-फटे छेद से उसका दिमाग बाहर निकल आया था। यह कनपटी से बाहर को फैल रहा था। भूरे रंग के झागदार पिंड के ऊपर गुच्छे लाल बुलबुले जमा थे। उसे गोली लगी थी।

बच्चे ने अपने छोटे-छोटे हाथों क को बदहवास, अनिश्चित-सी मुद्राओं में लहराया। उसने कई अस्पष्ट और अकथनीय चीखें निकालीं, जो किसी लंगूर की कच-कच और तुर्की मुर्ग की बाँग के बीच की आवाज था। यह एक चौंकानेवाली, निष्प्राण, अपावन ध्वनि थी। एक शैतान की भाषा थी यह। बच्चा गूँगा और बहराथा।
फिर वह निश्चेष्ट खड़ा उस विनाश को देखने लगा। उसके होंठ काँप रहे थे।

❑

नदी के पार

-केट शोपैन

नदी उस जगह पर आकर धनुष के आकार में मुड़ गई थी, जहाँ ला फॉले की कुटिया थी। नदी की धारा और कुटिया के बीच एक बड़ा सा उजाड़ मैदान था, जहाँ मवेशी उन दिनों में चरा करते थे, जब नदी में उनके लिए पर्याप्त पानी होता था। अनजान प्रदेशों तक फैले जंगलों में होकर इस औरत ने एक काल्पनिक रेखा खींच रखी थी और इस घेरे से आगे वह कभी पाँव नहीं रखती थी। बस, यही एक रूप था उसके पागलपन का।

अब वह पैंतीस से ऊपर की एक दीर्घकाय और दुबली-पतली काली औरत थी। उसका असली नाम तो जैकलीन था, मगर बागान में सभी लोग उसे 'ला फॉले' (पागल औरत) कहते थे, क्योंकि बचपन में एक बार वह इतना डर गई थी कि उसका दिमागी संतुलन बिगड़ गया था और फिर वह पूरी तौर पर कभी ठीक नहीं हो पाई थी।

यह तब की बात है जब जंगलों में सारा दिन झड़पें और गोलीबारी चला करती थी। उस समय शाम होनेवाली थी, जब छोटे मालिक लड़खड़ाते हुए जैकलीन की माँ की कुटिया में आए थे। वह काले बारूद व लाल खून में सने हुए थे और कुछ लोग उनका पीछा करते हुए आए थे। उसकी बाल बुद्धि में कुछ भी नहीं आया था और वह यह सब देखकर दंग रह गई थी।

वह अपनी एकांत कुटिया में अकेली ही रहती थी, क्योंकि बाकी के घर तो वहाँ से हटा दिए गए थे और वे उसकी आँखों व जानकारी से परे थे। उसके शरीर में अधिकांश मर्दों से कहीं ज्यादा ताकत थी और उसने अपने कपास व मक्का और तंबाकू के खेत को उनके सबसे अच्छे खेतों की तरह कर लिया था। लेकिन नदी पार की दुनिया के बारे में उसे लंबे समय से ही कुछ पता नहीं था। इस बारे में वह बस उतना ही जानती थी जितना उसकी विकृत कल्पना सोच पाई थी।

बेलीसीम के लोग उसके और उसकी आदत के आदी हो गए थे और इस बारे में वे खुद नहीं सोचते थे। यहाँ तक कि जब बड़ी मालकिन मरीं तो उन्हें इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ था कि ला फॉले नदी से आगे नहीं गई थी, बल्कि इसके किनारे खड़ी होकर रोती-पीटती रही थी।

छोटे मालिक अब बेलीसीम के मालिक बन गए थे। वह अब अधेड़ हो चुके थे। उनके परिवार में उनकी खूबसूरत बेटियाँ थीं और एक नन्हा बेटा भी, जिसे ला फॉले इस तरह प्यार करती थी, जैसे वह उसका अपना ही बेटा हो। वह उसे 'चेरी' (अर्थात् प्यारा) कहकर बुलाती थी और बाकी सब लोग भी उसे 'चेरी' कहकर बुलाते थे, क्योंकि वह जो उसे इस नाम से बुलाती थी।

चेरी के लिए उसके दिल में जो जगह थी, वह उन लड़कियों में से किसी के लिए कभी नहीं रही थी। उन सभी को उसके पास रहना बहुत अच्छा लगता था और उसकी उन अद्भुत कहानियों को सुनना भी, जिनमें सबकुछ हमेशा 'दूर, नदी के पार' घटता था।

लेकिन उनमें से किसी ने भी उसके काले हाथ को उस तरह नहीं थपथपाया था, जैसे चेरी थपथपाता था; न ही उसके घुटने पर इतने आत्मविश्वास के साथ अपने सिरों को टिकाया था, जैसे चेरी टिका देता था, और न ही उसकी बाँहों में इस तरह सोई थी, जैसे चेरी सो जाया करता था; क्योंकि चेरी अब ऐसा कुछ नहीं करता था। अब वह एक बंदूक का गर्वीला मालिक बन गया था और उसने अपनी काली घुँघराली लटों को कटवा लिया था।

उन गरमियों, जिन गरमियों चेरी ने ला फॉले को लाल फीते की गाँठ लगाकर दो काली लटें दी थीं, नदी में पानी

इतना कम हो गया था कि बेलीसीम में रहनेवाले छोटे बच्चे भी इसे पैदल-पैदल पार कर जाते थे और मवेशियों को नदी किनारे की चरागाह में चरने भेज दिया जाता था। जब मवेशी चले जाते थे तो ला फॉले बहुत दु:खी होती थी, क्योंकि उसे बेजुबान साथी बहुत अच्छे लगते थे और उनकी उपस्थिति का अहसास उसके लिए सुखद होता था, और उसे रात में अपने बाड़े में उनके आने की आहट अच्छी लगती थी।

वह शनिवार की दोपहर बाद का समय था, जब खेत सूने थे। मर्द लोग पास के एक गाँव में अपने साप्ताहिक व्यापार के लिए जमा हुए थे और औरतें घर के कामों में लगी थीं—ला फॉले भी और बाकी औरतें भी। यही समय था जब वह अपने मुट्ठी भर कपड़ों की मरम्मत करती और उन्हें धोती थी, अपने घर को झाड़ती-बुहारती और खाना-पकाना करती थी।

अपने इस आखिरी काम में वह चेरी को कभी नहीं भूलती थी। आज उसने चेरी के लिए बड़े खूबसूरत आकार के बिस्कुट बनाए थे। इसलिए जब उसने चेरी को कंधे पर अपनी नई चमकती राइफल उठाए पुराने खेतों में होकर आते देखा तो वह उसे खुशी पुकारने लगी, ''चेरी! चेरी!''

लेकिन चेरी को बुलाने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि वह तो सीधा उसकी तरफ आ रहा था। उसकी जेबें बादाम व मुनक्कों और संतरे से फूल रही थीं, जो उसने अपने पिता के घर में उस दिन हुए आलीशान भोज से ला-बचाकर ला फॉले के लिए रख लिये थे।

वह धूप के-से रंगवाला दस साल का एक लड़का था। जब उसने अपनी जेबें खाली कर दीं तो ला फॉले ने उसके गोल लाल गाल को थपथपाया, अपने एप्रेन पर उसके गंदे हाथ पोंछे और उसके बालों को सँवारा। फिर जब वह अपने केकों को हाथ में लेकर कुटिया के पीछे ला फॉले के कपास के खेत को पार कर जंगल में गायब हुआ तो उसे देखती रही।

उसने ला फॉले को बढ़-चढ़कर बताया था कि वह अपनी बंदूक से वहाँ क्या करने जा रहा था।

''क्या तुम सोचती हो कि जंगल में बहुत सारे हिरन हैं, ला फॉले?'' उसने एक शिकारी के अनुमानवाले अंदाज में उससे पूछा था।

''नहीं, नहीं!'' औरत ने हँसते हुए कहा था, ''तुम किसी हिरन-विरन के चक्कर में मत पड़ना, चेरी। वह तो बहुत बड़ा होता है। तुम तो कल फॉले के कल खाने के वास्ते उसके लिए एक अच्छी मोटी सी गिलहरी ला देना। वह उसी से संतुष्ट हो जाएगी।''

''एक गिलहरी तो कुछ भी नहीं होती। मैं तुम्हारे लिए एक से ज्यादा लेकर आऊँगा, ला फॉले।'' उसने जाते-जाते शान दिखाते हुए डींग मारी थी।

जब उस औरत ने, एक घंटे बाद, जंगल के छोर के पास लड़के की बंदूक की आवाज सुनी तो उसने इस बारे में कुछ भी नहीं सोचा होता, अगर उस आवाज के बाद उसे तेज आर्तनाद न सुनाई दिया होता।

उसने साबुनवाले पानी के टब में डूबे अपने हाथों को बाहर निकाला और उन्हें अपने एप्रेन से पोंछ डाला और फिर अपने काँपते पाँवों से जितनी जल्दी हो सकता था, उस तरफ दौड़ पड़ी, जहाँ से उसे वह मनहूस धमाका सुनाई दिया था।

उसे जो डर था, वही हुआ था। वहाँ उसने चेरी को जमीन पर पड़े देखा। उसकी बंदूक उसके पास पड़ी थी। वह करुण स्वर में कराह रहा था, ''मैं मर गया, ला फॉले! मैं मर गया! मैं गया!''

''नहीं, नहीं!'' उसने उसके पास घुटनों के बल बैठते हुए दृढ़ता से कहा। ''अपनी बाँहें ला फॉले के गले में डाल दो, चेरी! कुछ नहीं हुआ है; कुछ नहीं होगा।'' उसने चेरी को अपनी मजबूत बाँहों में उठा लिया।

चेरी अपनी बंदूक की नाल का मुँह नीचे की तरफ करके चल रहा था। फिर उसे पता नहीं चला कैसे वह लड़खड़ा गया। उसे बस इतना पता था कि एक गोली उसकी टाँग में कहीं घुस गई थी और उसने सोच लिया था कि उसका अंत निकट था। अब इस औरत के कंधों पर सिर रखकर वह दर्द व डर के मारे कराह और रो रहा था।

''ओह, ला फॉले! ला फॉले! बहुत बुरा दर्द हो रहा है! मुझसे सहा नहीं जाता, ला फॉले!''

''रो मत मेरे बच्चे, मेरे बच्चे, मेरे चेरी!'' वह तसल्ली देती रही और लंबे-लंबे डग भरती आगे बढ़ती रही। ''ला फॉले तुम्हें सँभालेगी। डॉक्टर बॉनफिल्स मेरे चेरी को फिर से ठीक कर देंगे।''

वह उजाड़ मैदान में पहुँच गई थी। जब वह अपना कीमती बोझ लेकर इसे पार करने लगी तो लगातार और बेचैन होकर इधर-उधर देखती रही। उसमें एक जबरदस्त भय समा गया था—नदी पार की दुनिया का भय, वह विकृत और पागल भय, जो उसमें बचपन से भरा हुआ था।

जब वह नदी के किनारे पहुँची तो वहाँ खड़ी हो गई और मदद के लिए चिल्लाने लगी, मानो एक जिंदगी उस पर निर्भर हो—

''ओह, छोटे मालिक! छोटे मालिक! यहाँ आइए, मदद कीजिए! मदद कीजिए!''

लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। चेरी के गरम आँसू ला फॉले की गरदन को झुलसा रहे थे। उसने वहाँ के एक-एक व्यक्ति को पुकार लिया, फिर भी कोई जवाब नहीं मिला।

वह चिल्लाती रही, चीखती रही; लेकिन चाहे उसकी आवाज किसी ने न सुनी हो, चाहे उस पर किसी ने ध्यान न दिया हो, फिर भी उसकी उन्मत्त पुकारों का कोई जवाब नहीं मिला। इधर चेरी लगातार कराहता और रोता रहा और उससे याचना करता रहा कि वह उसे उसकी माँ के पास ले चले।

ला फॉले ने हताश होकर अखिरी बार अपने आस-पास देखा। अतिशय आतंक ने उसे घेरा हुआ था। उसने बच्चे को अपने सीने से जोर से चिपटाया, जहाँ उसे एक कपड़ा लिपटे हथौड़े की तरह ला फॉले के दिल की धड़कन महसूस हो रही थी। फिर अपनी आँखें बंद करके वह अचानक नदी के पिछले किनारे में दौड़ पड़ी और दूसरे किनारे पर पहुँचकर ही रुकी।

उसने अपनी आँखें खोलीं और एक पल को वहाँ काँपती खड़ी रही। फिर वह पेड़ों के बीच पगडंडी में उतर गई। अब वह चेरी से बात नहीं कर रही थी, बल्कि लगातार बड़बड़ाती जा रही थी, ''हे प्रभु! ला फॉले पर रहम करना! हे प्रभु, मुझ पर रहम करना !''

सहज बुद्धि जैसे उसे रास्ता दिखा रही थी। जब रास्ता उसके आगे काफी साफ और सपाट हो गया तो उसने एक बार फिर उस अनजानी और भयंकर दुनिया की ओर से अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं।

जब वह बस्ती के पास पहुँची तो कुछ खरपतवारों में खेल रही एक बच्ची ने उसे देख लिया। वह डरकर चिल्ला पड़ी—

''ला फॉले!'' वह अपनी तेज व महीन आवाज में चीखी, ''ला फॉले ने नदी पार कर ली।''

और उसकी चीख तेजी से झोंपड़ियों की कतार में गूँज गई।

''ला फॉले ने नदी पार कर ली !''

बच्चे, बूढ़े, बूढ़ी औरतें, जवान औरतें अपनी गोद में बच्चे लिये उस विस्मयकारी दृश्य को देखने दरवाजों और खिड़कियों पर जमा हो गईं। उनमें से अधिकतर तो इस अंधविश्वासी भय से काँप रही थीं कि पता नहीं इसका क्या परिणाम होगा!

''वह चेरी को लेकर आ रही है!'' उनमें से कुछ ने चिल्लाकर कहा।

उनमें से जो कुछ अधिक दु:साहसी थे वे उसके आस-पास इकट्ठे हो गए और उसके पीछे-पीछे चलने लगे। लेकिन जब उसने अपना विकृत चेहरा उनकी तरफ घुमाया तो वे नए भय के साथ पीछे हट गए। उसकी आँखों में खून उतर रहा था और थूक उसके काले होंठों पर सफेद झाग बनकर जमा हो गया था।

उनमें से कोई उससे आगे दौड़कर वहाँ पहुँच गया था, जहाँ छोटे मालिक अपने परिवार और मेहमानों के साथ गलियारे में बैठे हुए थे।

''छोटे मालिक ! ला फॉले ने नदी पार कर ली है! उसे देखिए! उसे देखिए उधर चेरी को लिये हुए!'' औरत के आने की उन लोगों क को यह पहली सूचना मिली थी।

वह अब पास आ चुकी थी। वह लंबे-लंबे डग भरती आ रही थी। उसकी आँखें हताशा में उसके आगे जमी थीं और वह एक थके साँड़ की तरह हाँफ रही थी।

सीढ़ियों के नीचे पहुँचकर, जिसे वह चढ़ नहीं सकती थी, उसने लड़के को उसके पिता के हाथों में दे दिया। फिर जो दुनिया ला फॉले को लाल दिखाई दे रही थी वह अचानक काली हो गई—उस दिन की तरह, जब उसने बारूद और खून देखा था।

वह एक पल को घूम गई। इससे पहले कि कोई हाथ बढ़ाकर उसे सहारा देता, वह धम से जमीन पर गिर पड़ी।

जब वह होश में आई तो फिर से अपने घर में थी, अपनी कुटिया में और अपने ही बिस्तर पर। खुले दरवाजे और खिड़कियों से छनकर आती चाँद की किरणें उतनी रोशनी दे रही थीं जितनी रोशनी उस बूढ़ी काली आया के लिए काफी थी, जो मेज के पास खड़ी सुगंधित जड़ी-बूटियों का काढ़ा तैयार कर रही थी। देर बहुत हो चुकी थी।

दूसरे जो लोग वहाँ आए थे और जिन्होंने यह देखा था कि उसकी मूर्च्छा अभी भी टूटी नहीं थी, वे फिर से चले गए थे। छोटे मालिक वहाँ आए थे और उनके साथ डॉक्टर बॉनफिल्स भी, जिन्होंने कहा था कि ला फॉले मर भी सकतीहै।

लेकिन मौत उसे छोड़कर आगे निकल गई थी। उसने बहुत स्पष्ट और स्थिर स्वर में लिजेट काकी से कहा था, जो वहाँ कोने में अपना काढ़ा तैयार कर रहीथी।

''अगर तुम मुझे एक बढ़िया काढ़ा पीने को दोगी लिजेट काकी, तो मुझे विश्वास है कि मैं सो जाऊँगी।''

और वह सचमुच सो गई थी; इतनी गहरी और इतनी सेहतमंद नींद सोई थी वह कि लिजेट काकी बिना किसी दुविधा के चुपचाप वहाँ से खिसककर चाँदनी में नहाए मैदानों से होकर नई बस्ती में अपनी कुटिया में चल गई थी।

शीतल धूसर सुबह की पहली छुअन से ला फॉले जाग गई। वह शांति से उठी, मानो अभी कल ही किसी तूफान ने उसके अस्तित्व को झकझोर और खतरे में डाल नहीं दिया था।

उसने अपनी नई नीली कॉटनेड (एक रद्दी सूती कपड़ा) और सफेद एप्रेन पहनी, क्योंकि उसे याद था कि आज इतवार है। जब वह अपने लिए एक प्याला कड़क काली कॉफी बना चुकी और स्वाद ले-लेकर उसे पी चुकी तो वह कुटिया से निकली और पुराने जाने-पहचाने मैदान से होकर एक बार फिर नदी के किनारे की तरफ चल दी।

जैसे कि वह पहले हमेशा किया करती थी, इस बार वह वहाँ रुकी नहीं बल्कि लंबे-लंबे और जमाकर पाँव रखती हुई, नदी को पार कर गई मानो सारी जिंदगी वह यह करती आई हो।

जब वह दूसरे किनारे पर खड़े कॉटनवुड के झाड़दार पेड़ों की कतारों से होकर निकल चुकी तो उसने स्वयं को एक मैदान की सीमा पर पाया, जहाँ ओस की बँूदों से लदी चटकती सफे द कपास कई-कई एकड़ तक इस तरह गँछी हुई थी, जैसे भोर की इस वेला में तुषाराच्छादित चाँदनी हो!

ला फॉले ने इस पूरे प्रदेश पर दृष्टि दौड़ाई और एक लंबी गहरी साँस ली। वह धीरे-धीरे और अनिश्चितता में डूबी

बढ़ रही थी और इधर-उधर देखती जा रही थी। वह उस व्यक्ति की तरह हो रही थी, जिसे यह पता नहीं था कि यह सब कैसे हो रहा था।

कल जिन झोंपड़ियों से निकलकर अनेक आवाजों ने उसका पीछा किया था, आज वे खामोश थीं। अभी तक बेलीसीम में कोई उठा नहीं था। अभी तक केवल वे पक्षी ही जागे थे, जो झाड़ियों से इधर-उधर झपट रही थीं और अपने विहान-गीत गुनगुना रही थीं।

जब ला फॉले मकान के बाहर फैले चौड़े व मखमली घास के मैदान पर आई तो वह उस उछाल भरे लॉन पर धीरे-धीरे और खुशी-खुशी चलने लगी, जो उसके कदमों के नीचे मजेदार था।

वह यह पता करने को रुकी कि वे सुगंधें कहाँ से आ रही थीं, जो उसकी इंद्रियों पर सुदूर अतीत की स्मृतियों की बौछार कर रही थीं।

ये सुगंधें हरे-भरे बगीचों से झाँकते बनाफशा के हजारों नीले फूलों से निकल कर उस तक आ रही थी, ये सुगंधें उसके सिर के बहुत ऊपर मैग्नोलिया की मोमी घंटियों से और उसके आस-पास के चमेली के गुच्छों से बरस रही थीं।

वहाँ गुलाब भी थे, जिनकी कोई गिनती नहीं थी। उसके दाएँ-बाएँ चौड़े और खूबसूरत मोड़ों में ताड़ फैले हुए थे। यह सबकुछ ओस की चमकती आभा के नीचे किसी इंद्रजाल-सा दिखाई दे रहा था।

जब फॉले बरामदे तक जानीवाली कई सीढ़ियों को धीरे-धीरे और सँभल-सँभलकर पार कर चुकी तो वह उस खतरनाक चढ़ाई को देखने के लिए मुड़ी, जो उसने चढ़ी थी। तब उसे नदी दिखाई दी, जो बेलीसीम की तलहटी पर एक चाँदी के धनुष की तरह मुड़ रही थी। उसकी आत्मा आनंद-विभोर हो उठी।

ला फौले ने पास ही एक दरवाजे पर हलके से दस्तक दी। चेरी की माँ ने सावधानी बरतते हुए जल्दी ही दरवाजा खोल दिया। उन्होंने जल्दी से और होशियारी

दिखाते हुए अचंभे के उस भाव को निरस्त कर दिया, जो ला फॉले को देखकर उनमें उभरा था।

''आह, ला फॉले ! तुम, इतनी सुबह?''

''जी, मेम साहब। मैं यह पूछने आई थी कि आज सुबह मेरा बेचारा नन्हा चेरी कैसा है।''

''वह बेहतर महसूस कर रहा है शुक्रिया, ला फॉले, डॉक्टर बॉनाफिल्स ने कहा है कि कोई गंभीर बात नहीं है। अभी वह सो रहा है। वह जाग जाए, तब आ जाओगी ?''

''नहीं, मेम साहब। जब तक चेरी जाग नहीं जाता, मैं यहीं इंतजार करूँगी।'' यह कहकर ला फॉले बरामदे की सबसे ऊपरी सीढ़ी पर बैठ गई। उसके चेहरे पर विस्मय और गहन संतोष का भाव तिर आया। आज वह पहली बार सूरज को नदी पार की खूबसूरत दुनिया के उस पार उगता देख रही थी।

❑

वालपोल की सड़क पर

-मैरी विलकिंस फ्रीमैन

वालपोल एक चहल-पहलवाली छोटी सी देहाती मंडी थी। आस-पास के छोटे-छोटे गाँवों के लोग अपनी छोटी-मोटी जरूरत की चीजों की थोक खरीदारी के लिए वहाँ आते थे।

एक बार गरमियों में तीसरे पहर दो औरतें वहाँ से आनेवाली एक सड़क पर अपनी घोड़ागाड़ी में धीरे-धीरे चली जा रही थीं। पुराने ढंग की उनकी इस गाड़ी पर धूल जमी थी और उसके निचले हिस्से में पूरे कागज के बंडल भरे पड़े थे।

उनमें एक औरत सत्तर की रही होगी; लेकिन वह इतनी हट्टी-कट्टी थी कि देखने में कमसिन लगती थी। उसकी दोहरी, खसखसी ठुड्डी थी, उसकी भूरी आँखें उसके चश्मे के ऊपर से प्रफुल्लता में चमक रही थीं और वह पुआल का चौड़ा हैट पहने थी, जिसके किनारे के अंदर की तरफ बैगनी बो लगी थीं। दोपहर बाद की इस बेला में काफी गरमी थी। वह हाथों में काले दस्ताने पहने थी और एक हाथ में ताड़ के पत्ते का पंखा लिये थी, जिससे वह रह-रहकर अपने भारी सीने पर धीरे-धीरे हवा कर रही थी।

दूसरी औरत उससे छोटी थी—शायद चालीस की। वह साधारण रंग-रूप की एक उत्साही औरत थी। वह भूरे रंग की सर्ज की पोशाक और मटमैले सूती दस्ताने पहने थी। वह घोड़े की लगान को कसकर पकड़े थी। गाड़ी वही हाँक रही थी। वह जब-तब घोड़े की पीठ पर जोर से लगाम फटकार देती थी। घोड़ा भारी-भरकम था और उसने खेत पर खूब मेहनत का काम किया था। तीसरे पहर की इस गरमी में उसे धीरे-धीरे चलाया जा रहा था।

वहाँ काफी समय से बारिश नहीं हुई थी और हर चीज पर ढेरों धूल जमीं थी। इस सड़क पर ज्यादा आवाजाही नहीं होती थी और यहाँ पहियों से बने गड्ढों के बीच घास उग रही थी; लेकिन घोड़े के खुरों और पहियों से धुएँ की तरह मिट्टी उड़ रही थी। दोनों तरफ खड़ी पत्थर की दीवारों के ऊपर चढ़ी काली बदरी की लताओं और मीडो स्वीट (क्षेत्र नंदिनी) और हार्डहैक की झाड़ियों पर धूल की मोटी परत जमा थी और उनकी पत्तियाँ हरी न होकर भूरी थीं। जमीन से सटकर उगनेवाले बरडॉक जैसे बड़े पत्तोंवाले पौधों की शिराएँ धूल में उभरी हुई थीं।

दोनों औरतें एक तरह से शांतिपूर्ण ढंग से सवारी कर रही थीं। बूढ़ी औरत धीरे-धीरे पंखा झल रही थी और उससे कम उम्र वाली औरत घोड़े पर यंत्रवत् लगाम फटकार रही थी। जब तक वे एक पहाड़ी की चोटी पर अधिक खुली जगह में नहीं आ गईं, वे दोनों ही चुप रहीं। वहाँ उन्हें उत्तर पश्चिम के आसमान पर निर्बाध दृश्य दिखाई दिया। पहले यह पेड़ों के कारण छिपा हुआ था।

''मैं कहती हूँ, ऐलमाइरी,'' बूढ़ी औरत बोली, ''गरज के साथ बारिश पड़ने वाली है।''

''हमारे घर पहुँचने तक तो यह आएगी नहीं।'' दूसरी औरत ने जवाब दिया, ''और दस में से एक संभावना यही है कि यह उत्तर दिशा में निकल जाएगी और हमें छुएगी भी नहीं। यहाँ पचास फीसदी यही होता है। अगर ऐसा काला बादल मुझे वहाँ दिखाई देता जहाँ मैं रहा करती थी तो मैं पक्का मान लेती कि भारी तूफान आएगा; लेकिन यहाँ तो इस बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। फिर भी मिस ग्रीन, अगर यह हमारे घर पहुँचने से पहले आ भी जाए तो भी मुझे चिंता नहीं है; हमारा घोड़ा बिजली से नहीं डरता।''

बूढ़ी औरत ने हास्यास्पद तरीके से मुँह बनाया।

''वह तो किसी भी चीज से नहीं डरता, क्यों ऐलमाइरी ?''

''नहीं,'' उसकी साथिन ने घोड़े को जोर से फटकारते हुए जवाब दिया, ''उसे इतनी जानकारी भी नहीं है कि वह डरे, यह सच है। मुझे नहीं लगता कि जिब्रील फरिश्ते की तुरही के अलावा और कोई चीज उसे थोड़ा सा भी चौंका सकती है।''

''मेरा खयाल है, तुम्हें इस तरह नहीं बोलना चाहिए, ऐलमाइरी।'' बूढ़ी औरत ने कहा, ''मुझे तो यह पवित्र चीजों का मजाक बनाने जैसा लगता है, लेकिन तुम जब यह कह रही हो तो मुझे नहीं लगता कि उससे भी चौंकेगा। वैसे मैं तुमसे एक बात कहूँगी, ऐलमाइरी! मैं नहीं मानती कि जिब्रील की तुरही में ऐसी कोई डरने वाली बात होगी। मैं तो सोचती हूँ कि यह वैसी ही सुहानी होगी जैसी कि वसंत में रोबिन चिड़िया या फूलों की आमद होती है। दूसरी तमाम चीजों में मिठास और सहजता के साथ घुलती-सी।''

''पवित्र किताब में तो ऐसा कहीं नहीं लिखा।'' ऐलमाइरी ने मजबूती से कहा।

''मेरी किताब में लिखा है। मैं तुम्हें बताती हूँ, ऐलमाइरी। अभी तक की जिंदगी में मैंने एक बात जानी है और वह यह है कि इस दुनिया में जो चीजें हैं, उनमें इतना फर्क नहीं है जितना फर्क उन्हें देखनेवाले लोगों में है। मैं किताबों को देख रही हूँ और तुम भी किताबों को देख रही हो, ऐलमाइरी! और तुम कुछ और देखती हो तो मैं कुछ और देखती हूँ, और मैं दावे से कह सकती हूँ कि अधिकतर हम दोनों ही गलत देखती हैं। उसमें थोड़ा-बहुत सही भी मिला हो सकता है और तब तक हमें सचमुच पता नहीं चलेगा कि इसमें कितना सही है, जब तक हम इसे नए यरूशलम की रोशनी में नहीं पढ़ेंगे।''

''हाँ, अगर मैं मर्द होती तो पादरी ही होती; मैं हमेशा सोचती थी कि मैं पादरी ही बनूँगी। लेकिन मुझे लगता है कि तभी परमेश्वर ने सोचा कि एक औरत की अधिक जरूरत है, जो बच्चों को पालने, खाना पकाने और बरतन धोने का काम करे। हो सके तो थोड़ा तेज गाड़ी चलाओ, ऐलमाइरी।''

ऐलमाइरी ने लगाम को जोर से झटक दिया और घोड़ा हाँकने की आवाज निकाली, लेकिन घोड़े पर कोई असर नहीं हुआ और वह वैसे ही मजे में चलता रहा।

''कोई फायदा नहीं है,'' वह बोली, ''इससे तो पत्थर के किसी खंभे को चलाना कहीं आसान होगा।''

''देखो, शायद बारिश आएगी ही नहीं।'' बूढ़ी औरत ने कहा और पीछे टिककर खामोशी से पंखा झलने लगी।

''उस बादल को देखकर मुझे आंट रिबेका के अंतिम संस्कार की याद हो आई है।'' अचानक वह बोल पड़ी, ''मैंने इसके बारे में कभी तुम्हें बताया, ऐलमाइरी ?''

''नहीं, मुझे तो शायद तुमने कभी नहीं बताया, मिस ग्रीन।''

''देखो, अब हम लोग धीरे-धीरे चल रहे हैं तो शायद तुम इसे सुनना पसंद करोगी। इससे हम इस बेचारे, बेजुबान घोड़े पर ज्यादा जुल्म करने से भी बच जाएँगे।''

''तो ऐलमाइरी, आंट रिबेका मेरी मौसी थीं—मेरी माँ की सबसे बड़ी बहन, और मुझे वह हमेशा ही अच्छी लगीं। यह बीस साल या उससे भी पहले की बात है, तब इस्राइल भी जिंदा थे। वह बिलकुल अपनी जैसी लगती थीं और बीमारों की सेवा करने में तो उनका सानी ही नहीं था। माँ के मरने के बाद अगले साल जब मुझे टाइफस बुखार हुआ तो उन्होंने ही मेरी देखभाल की थी, उसे मैं कभी नहीं भूल सकती। मैं अचानक ही बीमार पड़ गई थी। रोते-बिलखते चार छोटे-छोटे बच्चों को देखनेवाला इस्राइल को दूर-दूर तक कोई नहीं मिला था। वह लायंज खानदान की उस नाकारा औरत को मदद के लिए ले आए थे। जब आंट रिबेका ने यह सुना तो वह सबकुछ छोड़-छाड़कर हमारे यहाँ चली आई थीं। उन्होंने लायंज खानदान की उस औरत को बोरिया-बिस्तर समेत रवाना कर दिया था और घर को ऐसे सँभाल लिया था जैसे बस वही कर सकती थीं। मुझे हमेशा यह अहसास रहा कि अगर वह नहीं होतीं

तो मैं मर ही जाती।

''वह भी इसी सड़क पर दस मील दूर रहती थीं; लेकिन हम हमेशा उनके घर आते-जाते रहते थे। मुझसे आंट रिबेका को देखे बिना रहा नहीं जाता था और मैं अकसर ही उनसे मिलने पहुँच जाया करती थी। उनसे मिले बगैर मैं बहुत अकेली महसूस करती थी और मुझे घर की याद सताती थी।

''इसलिए, यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है कि जब उस सुबह मैंने सुना कि वह मर गई हैं तो मुझे बहुत गहरा दु:ख हुआ था। उन्होंने वहाँ से गुजरते एक आदमी से संदेश भिजवा दिया था। वह आदमी यहाँ घोड़ा बेचने आ रहा था और उसने सबसे पहले रुककर हमें यह खबर दी थी। बहुत अच्छा आदमी था वह। वह कॉमस्टॉक में एक दुकान चलाता था। मैंने इस्राइल को बाहर सड़क पर खड़े हुए उस आदमी से बात करते देखा तो मैं नहीं समझ पाई कि क्या बात हो सकती है। लेकिन जब उन्होंने अंदर आकर मुझे बताया कि आंट रिबेका मर गई हैं तो मुझे बड़ा धक्का लगा और मैं वहीं बैठ गई। अगर मेरी माँ मरी होतीं तो मुझे इतना खराब नहीं लगता। और कितना अचानक हुआ था यह सब! अरे, अभी पिछले हफ्ते ही तो उनसे मिली थी मैं, तब तो वह इतनी चुस्त-दुरुस्त दिख रही थीं, मैं सोचने लगी थी। अगर यह खबर अंकल ईनोस यानी उनके पति के बारे में होती तो मुझे कोई ताज्जुब नहीं होता। वह कई साल से दिल के मरीज थे और हम सोचते थे कि वह किसी पल भी चल बसेंगे; लेकिन आंट रिबेका के बारे में सोचना!

''मैं इस्राइल को देखती ही रह गई। मुझे इतना बुरा लग रहा था कि मैं रो भी नहीं पाई। मेरी रुलाई तब फूटी जब मैंने उस एप्रेन को देखा, जिसे मैं पहने हुए थी। यह एप्रन उनकी एक पोशाक की तरह थी। उनके पास थोड़ा कपड़ा बच गया था, जो उन्होंने ऐप्रन के लिए मुझे दे दिया था। उसे देखकर मैं सुबकने लगी।

''हे प्रभु!' मैंने कहा, 'यह ऐप्रन मुझे उन्होंने दिया था ! उफ! उफ!'

'' 'सैरा,' इस्राइल बोले, 'प्रभु की यही इच्छा थी।'

'' 'मुझे पता है,' मैंने कहा, 'लेकिन वह तो मर ही गईं और यह ऐप्रन मुझे उन्हीं ने दी थी, कितनी अच्छी महिला थीं!' और मैं रोती ही चली गई, हालाँकि इस्राइल ने मुझे चुप कराने की कोशिश की। जब-जब मैं उस ऐप्रन को देखती, मुझे लगता कि मैं डर जाऊँगी।

''इस्राइल बोले कि उन्हें ज्यादा कुछ मालूम नहीं था। जिस आदमी ने यह खबर दी थी। उसे बस इतना पता था कि जब वह वहाँ से निकल रहा था तो सामने वाली एक खिड़की से एक औरत ने उसे बुलाया था और कहा था कि वह रुककर हमें इस बारे में बता दे। मैंने अंदाजा लगाया कि उसे बुलानेवाली औरत मिस सिमंस रही होगी। वह एक विधवा थीं, जो व्यस्त घंटों में आंट रिबेका के लिए काम कर रही थीं।

''बहरहाल, इस्राइल ने एक तरह से मुझे जल्दी तैयार होने को कहा। कफन-दफन के लिए दो बजे का समय तय किया गया था और हमारे पास जो घोड़ा था, वह इस घोड़े की तरह ही सुस्त था, जिसे इस समय तुम हाँक रही हो।

''इसलिए मैंने जितनी जल्दी हो सकता था, अपना सबसे बढ़िया काला गाउन पहन लिया। मेरे पास एक अच्छी काली शॉल और काली टोपी भी थी, इसलिए इन कपड़ों में मैं बहुत अच्छी दिख रही थी। मैं खुश थी कि मेरे पास ये कपड़े थे। ये कपड़े मैंने माँ के मरने पर पहने थे। मुझे यह समझ में नहीं आ रहा कि वह टोपी मेरे पास कैसे बनी रह गई थी! मैंने इतनी हड़बड़ी में कपड़े पहने कि मैंने काला गाउन उसी कपड़े पर चढ़ा लिया, जिसे मैं उस समय पहने हुए थी, और इसका पता मुझे तब चला जब मैं उस रात सोने गई; लेकिन मैं नहीं सोचती कि इसमें कोई ज्यादा ताज्जुब वाली बात थी।

''उन दिनों काफी समय से बारिश नहीं हुई थी, जैसे आजकल नहीं हो रही है और हर चीज पाउडर जैसे हो रही

थी। मैं सोच रही थी कि हमारे वहाँ पहुँचने से पहले ही मेरे कपड़े खराब हो जाएँगे। घोड़ा बेहद सुस्त था और हमें उसे लगातार फटकारना व मारना पड़ रहा था। लेकिन उस समय उस पर इसका कोई असर नहीं हो रहा था।

''जब हम करीब आधी दूरी पर पहुँचे तो उत्तर-पश्चिम की दिशा से जोरों की गरजदार बारिश आई, जैसे आज उठ रही है। वहाँ रुकने की कोई जगह नहीं थी, इसलिए हम सीधे आगे बढ़ते रहे। घोड़े को बिजली से कोई डर नहीं लग रहा था और हम गाड़ी की छत के नीचे, जहाँ तक हो सकता था, सरक गए और अपने ऊपर कंबल डाल लिया, लेकिन फिर भी हम खूब भीग गए। और इस्राइल अपना मीटिंग कोट पहने थे और मैं अपना सबसे अच्छा गाउन पहने थी। लेकिन धूल-मिट्टी वगैरह की वजह से अब ये कपड़े वैसे नहीं रह गए थे।

''तो इस्राइल ने घोड़ी को देखा और उस पर चाबुक फटकारा। लेकिन वह उसी सुस्त रफ्तार में आगे बढ़ती रही। मैं आंट रिबेका को लेकर अफसोस कर रही थी और इस्राइल के कोट और अपने सबसे बढ़िया गाउन के बारे में चिंतित थी और सोच रही थी कि मैं जीते-जी वहाँ नहीं पहुँच पाऊँगी।

''जब हम फोर कॉर्नर के उस सत्संग भवन के पास पहुँचे, जहाँ आंट रिबेका रहती थीं तो दो बजकर पाँच मिनट हो चुके थे; जबकि अंतिम संस्कार के लिए दो बजे का समय तय था। मुझे यह सोचकर बहुत परेशानी हो रही थी कि हम वहाँ देर से पहुँच रहे थे, जबकि मातम करनेवाले खास हम ही थे। जब हम वहाँ पहुँचे तो वहाँ काफी लोगों का आना-जाना लगा हुआ था और काफी लोग आँगन में खड़े थे। यह देखकर इस्राइल बोले कि वह नहीं सोचते कि हमें देर हो गई थी। उन्होंने बाड़ के पास खड़े एक आदमी का आवाज दी और उससे पूछा कि अंतिम संस्कार हो गया कि नहीं? उस आदमी ने कहा कि 'नहीं, अंतिम संस्कार सत्संग भवन में तीन बजे होगा।' यह सुनकर हमें बहुत खुशी हुई। इस्राइल बोले कि वह पीछे जाकर घोड़े को बाँधेंगे और इस बीच में अंदर जाकर थोड़ा सूख जाऊँ और उन लोगों से मिलूँ।

''तब तक बारिश हलकी पड़ गई थी, बस थोड़ी सी बूँदा-बाँदी हो रही थी और काफी दूरी पर रह-रहकर बिजली चमक रही थी।

''तो मैं गाड़ी से उतरकर भवन की तरफ चल दी। दरवाजे पर मेरी जान-पहचान के काफी आदमी खड़े थे, लेकिन वे सिर झुकाए गंभीर खड़े थे और मुझे रास्ता देने के लिए वे एक ओर को हट गए। मैंने देखा कि प्रवेश-द्वार का फर्श भी पानी टपकने से गीला हो रहा था। 'यहाँ बारिश हो रही थी' मैंने सोचा। 'पता नहीं उन्होंने दरवाजे को बंद क्यों नहीं किया।' मैं प्रवेश-द्वार के बाईं ओर वाले कमरे में सीधी चली गई, जो बैठक थी और वहाँ खिड़की के पास एक कुरसी में अपनी नई काली टोपी और गाउन पहने बिलकुल तनी और चुस्त-दुरुस्त बैठी थीं आंट रिबेका!

''अब अगर मैं तुम्हें यह बताऊँगी ऐलमाइरी, कि मैंने क्या किया तो शायद तुम सोचोगी कि यह भयंकर था। लेकिन मुझे लगता है कि अभी तक क्योंकि मैं इतनी उदास थी और अब एकदम से मुझे बिलकुल उलटा अहसास हुआ था, इसलिए मुझे एक तरह से दौरा-सा पड़ गया था। मुझे जो पहली कुरसी दिखाई दी, मैं उसी पर बैठ गई और हँसने लगी। मैं इतनी हँसी, इतनी हँसी कि मेरी आँखों से आँसू बहने लगे और साँस लेने के लिए मैं बस यही कर सकती थी। कमरे में अंकल ईनोस के बहुत सारे रिश्तेदार बैठे थे, जिनमें उनके भाई के घरवाले और कई चचेरे-मौसेरे भाई थे और वे मुझे इस तरह घूरकर देखने लगे जैसे मैं पागल हूँ! लेकिन जब मैंने उन्हें मुझे इस तरह घूरते देखा तो मेरी हँसी फिर से छूट गई। कुछ लोग प्रवेश-द्वार से अंदर आए और खड़े होकर मुझे घूरने लगे। लेकिन मैं और भी जोर-जोर से हँसने लगी। आखिर में आंट रिबेका मेरे पास आईं।

'' 'मेहरबानी करो, सेरा,' वह बोलीं, 'यह सब क्यों कर रही हो तुम?'

'' 'अरे, अरे!' मैंने कहा, 'मैं सोच रही थी कि आप मर गई हैं। लेकिन आप तो वहाँ बैठी हुई थीं। अरे, अरे!' और

मैं फिर से हँसने लगी। मैं अपने पर बहुत शर्मिंदा थी, लेकिन मुझसे रुका ही नहीं जा रहा था।

'' 'अब यह बताइए, आंट रिबेका,' मैंने कहा, 'यहाँ अंतिम संस्कार हो रहा है या शादी? और अगर अंतिम संस्कार हो रहा है तो फिर मरा कौन है?'

'' 'मेरे साथ एक मिनट के लिए सोने के कमरे में आओ, सेरा।' उन्होंने कहा।

''फिर हम उनके सोने के कमरे में गए, जो बैठक से बाहर को खुलता था और बैठ गईं, और उन्होंने मुझे बताया कि अंकल ईनोस गुजरे हैं। ऐसा लगता है कि उस आदमी को आंट रिबेका ने ही बुलाया था और वह आदमी थोड़ा ऊँचा सुनता था। इसलिए उनके बीच गलतफहमी हो गई थी।

''अंकल ईनोस बहुत अचानक, एक दिन पहले, दिल की बीमारी से मर गए थे। वह नाश्ते के बाद बैठक में खिड़की के पास जाकर बैठे थे और कुछ मिनट बाद आंट रिबेका जब वहाँ गईं तो उन्हें वह कुरसी पर मरे मिले थे।

''मौसम इतना गरम था कि कफन-दफन में देर नहीं की जा सकती थी। लेकिन बात बस इतनी ही नहीं थी। फिर आंट रिबेका ने मुझे बाकी बात बताई। उन्होंने इतना खराब समय कभी नहीं देखा था। बारिश करीब एक बजे शुरू हुई थी और खलिहान पर बिजली गिर गई थी। यह बड़ावाला नया खलिहान था, जिसमें अंकल ईनोस ने काफी माल इकट्ठा कर रखा था। उन्होंने इस पर काफी पैसा लगाया था और उन लोगों ने अभी-अभी इसमें बारह टन भूसा भरा था। मुझे लगता है कि इसीलिए उस पर बिजली गिरी थी। खलिहान में जब नया-नया भूसा रखा गया होता है तब उस पर बिजली गिरने की ज्यादा गुंजाइश रहती है। खैर, सारे लोग खलिहान की आग बुझाने में जुट गए थे। वे छत पर चढ़े आदमियों को पानी की बालटियाँ पकड़ाते गए और समय से कारवाई हो जाने की वजह से उन्हें आग बुझाने में ज्यादा परेशानी नहीं हुई।

''लेकिन जब वे खलिहान की आग बुझा चुके तो उन्हें पता चला कि भवन में आग लगी हुई है। जिस बिजली ने खलिहान को निशाना बनाया था, वही बिजली भवन पर भी गिरी थी और उसकी छत के एक कोने पर यह जोर पकड़ चुकी थी।

''तो वे लोग फिर उसे बुझाने गए और हमारे वहाँ पहुँचने से कुछ ही मिनट पहले उसे पूरी तरह बुझाने में कामयाब हुए थे। कोई अधिक नुकसान नहीं हुआ था, बस आस-पास ढेरों पानी था। दूसरे दिन उसे साफ करने में हमें बहुत मेहनत करनी पड़ी थी।

''आंट रिबेका हमेशा शांत रहनेवाली महिला थीं और वे इससे इतनी परेशान नहीं दिखीं जितने अधिकतर लोग हो जाते हैं।

''मैं हैरान थी और अपने आपको उन्हें गौर से देखने से रोक नहीं पाई थी कि अंकल ईनोस की मौत को वह किस तरह से ले रही थीं! जानती हो, उनकी शादी भी बड़े अजीब ढंग से हुई थी! मुझे यह सब माँ ने बताया था। मुझे नहीं लगता कि आंट रिबेका को अंकल ईनोस की कभी चाहत या परवाह रही। उनके दिल में अंकल ईनोस के लिए वही जगह थी, जो उनके पड़ोस में रहनेवाले किसी अच्छे, इज्जतदार आदमी के लिए होती। अंकल ईनोस बहुत अच्छे किस्म के आदमी थे, हालाँकि उनका व्यवहार हमेशा भयंकर होता था, और मेरा विश्वास है कि वह जिस चीज को पाने की ठान लेते थे, उसे खोने के बजाय वह मरना अधिक पसंद करते। लेकिन मैं कहूँगी कि जब माँ ने मुझे बताया कि उन्होंने क्या किया था तो उसके बाद मैंने अंकल ईनोस के बारे में अधिक सोचना छोड़ दिया था। जानती हो, मेरी नानी बिलसन, यानी आंट रिबेका की माँ का उन पर दबाव था कि वह अंकल ईनोस से ही शादी करें और वह बहुत परेशान व कमजोर थीं, और आंट रिबेका ने उनके आगे घुटने टेक दिए। सबसे बुरी बात तो यह थी कि आंट रिबेका किसी और को चाहती थीं और वह उन्हें चाहता था। ऐबनर लायंज नाम था उनका। वह सचमुच एक

नेक नौजवान थे और उनमें ऐसी कोई बुराई नहीं थी, जो और किसी को दिखाई देती; लेकिन नानी उनसे बहुत नफरत करती थीं और माँ का कहना था कि उनसे शादी करने के बजाय वह रिबेका को सचमुच गाड़ देतीं। खैर, नानी अड़ गईं और उन्होंने इस तरह से व्यवहार किया कि आंट रिबेका को झुकना पड़ा और उन्होंने अंकल ईनोस से शादी के लिए 'हाँ' कर दी और शादी का दिन आ पहुँचा।

''माँ ने मुझे बताया कि वह किसी तसवीर की तरह खूबसूरत लग रही थीं, लेकिन जब वह शादी की रस्म के लिए अंकल ईनोस के साथ पादरी के सामने खड़ी हुईं तो उनका व्यवहार कुछ अजीब सा था।

''वह हरे रंग का रेशमी जोड़ा पहने थीं और उनके बालों में गुलाब टँके थे। मैं कल्पना कर सकती हूँ कि वह कैसी दिख रही होंगी ! जब मैंने अपने होश में उन्हें देखा तो वह देखने-भालने में अच्छी थीं और मैंने लोगों को कहते सुना था कि अपनी जवानी के दिनों में उनके मुकाबले ज्यादा औरतें नहीं टिक पाती थीं।

''माँ ने बताया था कि अंकल ईनोस अच्छे लग रहे थे; लेकिन उनके चेहरे पर सख्ती थी, मानो उन्हें जो चाहिए था, वह अब उन्हें मिल गया था और वह उसे छोड़नेवाले नहीं थे। उन्हें सबकुछ पता था कि क्या मामला है! आंट रिबेका ने उन्हें सारा किस्सा सुना दिया था। आंट रिबेका ने उनसे यह भी कह दिया था कि वह उनसे शादी नहीं करेंगी, पर बाहरी तौर पर उन्होंने ऐसा किया।

''मैं सोचती हूँ कि आखिरी समय में आकर आंट रिबेका एक तरह से हताश हो गई थीं और उन्हें यह होश आ गया था कि वह क्या करने जा रही हैं। और तब उन्होंने सोचा था कि वह बचने की एक और कोशिश करेंगी; क्योंकि जब पादरी ने यह पूछा कि क्या उनकी शादी में कोई रुकावट है, और अगर है तो आंटी रिबेका ने सचमुच बोल दिया था। माँ ने मुझे बताया था कि आंट रिबेका ने सीधे पादरी की तरफ देखा था और उनकी आँखें चमक रही थीं और उनके गाल सोसन के फूलों-से सफेद हो रहे थे।

'' 'हाँ,' उन्होंने कहा था, 'एक रुकावट है, और मैं इसके बारे में बोलूँगी और फिर हमेशा के लिए शांत हो जाऊँगी। मैं इस आदमी से प्यार नहीं करती, जिसकी बगल में मैं खड़ी हूँ, और मैं किसी और आदमी को प्यार करती हूँ। अब अगर यह सब बताने के बाद भी ईनोस फेयरवेदर मुझे चाहते हैं तो मैंने उनसे शादी करने का वादा कर दिया है और आप रस्म पूरी कर सकते हैं; लेकिन मैं परमेश्वर और मनुष्य के सामने झूठ नहीं बोलूँगी, न झूठा आचरण करूँगी।'

''माँ ने मुझे बताया था कि बड़ा जबरदस्त दृश्य था वह। कमरे में बिलकुल सन्नाटा छा गया था कि एक पिन भी गिरे तो आवाज सुनाई दे जाए। पादरी साहब आगे बढ़ते-बढ़ते रुक गए और अंकल ईनोस की तरफ देखने लगे और अंकल ईनोस ने सिर हिलाकर उनसे आगे की रस्म अदा करने को कहा।

''लेकिन फिर पादरी साहब इस दुविधा में पड़ गए कि आंट रिबेका के इतना कह देने के बाद वह उन दोनों की शादी कराएँ या नहीं, और एक मिनट को तो ऐसा लगा कि यह शादी होगी ही नहीं।

''लेकिन नानी रोने लगीं और उन्होंने आफत मचा दी और आंट रिबेका ने मुड़कर उन्हें देखा। फिर उन्होंने पादरी से कह दिया कि वह शादी पढें।

''माँ ने बताया था कि अगर कोई शहीद होने लायक उस समय दिखता था तो वह आंट रिबेका थीं। लेकिन मुझे यह बात कभी सही नहीं लगी। अपने रिश्तेदारों की खातिर शहीद होना और प्रभु को प्रसन्न करने के लिए अपनी जान देना, दो अलग-अलग बातें हैं।

''खैर, वह किस्सा सुनने के बाद मैंने अंकल ईनोस के बारे में अधिक नहीं सोचा, हालाँकि जैसाकि मैं पहले कह चुकी हूँ, मुझे लगता है, वह बहुत अच्छे आदमी थे। मेरे खयाल में उनमें खास बुराई यह थी कि वह किसी भी

कीमत पर आंट रिबेका को हासिल करना चाहते थे और उन्होंने इस मामले में किसी भी चीज को आड़े नहीं आने दिया, उचित आत्म-सम्मान को भी नहीं।

''आंट रिबेका ने उनकी तरफ अपना हर फर्ज पूरा किया और वह एक अच्छी बीवी व अच्छी गृहिणी बनकर रहीं। उनके कोई बच्चा नहीं हुआ। लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह कभी सचमुच सुखी या संतुष्ट रहीं, और मेरी समझ में नहीं आता कि उन्होंने अंकल ईनोस की इज्जत कैसे की होगी? लेकिन जो उन्होंने बताया नहीं है, उसे आप कैसे जान सकती हैं?

''इसलिए जब हम वहाँ उनके छोटे से सोने के कमरे में बैठे थे, जो बैठक के बाहर खुलता था तो मैंने उन्हें बहुत गौर से देखा था। वहाँ पलंग के पास बस एक कुरसी लायक जगह थी और मैं पलंग पर ही बैठ गई। बड़ा खराब-सा लग रहा था कि वह खास कमरे में मरे पड़े थे। लेकिन मैं यह सोचे बिना नहीं रह पाई कि क्या आंट रिबेका अब ऐबनर लायंज से शादी नहीं करेंगी! ऐबनर लायंज ने अभी तक शादी नहीं की थी, बल्कि वह उस पहाड़ी की चढ़ाई पर बिलकुल अकेले रह रहे थे, जहाँ आंट रिबेका रहती थीं। उन्होंने घर में काम करने के लिए किसी को नहीं रखा था, बल्कि अपना काम खुद करते थे। लोगों का कहना था कि उनका घर मोम जैसा साफ रहता था; और वह औरतों की तरह बढ़िया खाना बना लेते थे और बरतन साफ करते थे। कुछ भी हो जाए, वह सोमवार की सुबह सात बजे तक सारे कपड़े धोकर सूखने के लिए तार पर डाल देते थे; यह तो मुझे भी पता है, क्योंकि मैंने अपनी आँखों से देखा था; और उनके धुले कपड़े बर्फ-से सफेद दिखते थे। मैं खुद भी उन्हें देखकर शार्मिंदा होती थी।

''आंट रिबेका बहुत शांत दिख रही थीं और मुझे नहीं लगता कि वह रोई भी थीं। लेकिन इससे क्या होता जाता है! यह उनके स्वभाव में नहीं था। मुझे नहीं लगता कि ऐबनर लायंज के मरने पर भी वह रोई होंगी। हालाँकि, मैं नहीं जानती, लेकिन ऐसा हो सकता है कि अगर उनकी शादी उस आदमी से हुई होती, जिसे वह चाहती थीं तो शायद उनके लिए रोना आसान होता। हालाँकि दूसरे लोगों से आंट रिबेका बहुत हमदर्दी रखती थीं और उनपर बहुत मेहरबान रहती थीं। वहीं अपनी खुद की परेशानियों के मामले में वह पत्थर-सी कठोर दिखती थीं। मुझे नहीं लगता कि अगर खलिहान व भवन दोनों ही जल जाते और उनके सिर पर एक छत भी नहीं रह जाती, तब भी उनमें कोई फर्क दिखाई देता! मुझे अभी भी उनकी वह छवि दिखाई दे रही है; कैसे वहाँ बैठी हुई वह उस किस्से को सुना रही थीं, जिसे सुनाते हुए और कोई भी औरत मर ही गई होती। लेकिन उनकी आवाज वैसी ही धीमी व सपाट थी और उसमें कहीं कोई कंपन नहीं था। उनके बाल सफेद थे, लेकिन कुछ-कुछ घुँघराले थे और उनका माथा ऐसा सफेद और चिकना था, जैसा किसी जवान लड़की का होता है।

''मैं सोचती हूँ कि आंट रिबेका की परेशानियाँ उनके दिल में ही रहती थीं और कभी बाहर नहीं आती थीं। उनके सफेद बालों के सिवाय और कोई ऐसी चीज नहीं थी, जिसे देखकर यह कहा जा सकता कि उन्हें कभी कोई परेशानी रही होगी!

''जब अंतिम संस्कार के लिए गईं तो उन्होंने और कोई आफत नहीं मचाई, क्योंकि आखिरकार उन्होंने बेचारे अंकल ईनोस को दफन कर दिया। उन्हें गाड़ते समय भी उतनी ही मुश्किल हुई जितनी शादी पढ़ते समय हुई थी। मैं अपने आपको इधर-उधर ताकने से रोक नहीं पाई। मैं यह देखना चाहती थी कि ऐबनर लायंज वहाँ हैं या नहीं, और वह सचमुच मेरे सामने गलियारे के दूसरी तरफ बैठे हुए थे। वह सीधे अंकल ईनोस के ताबूत को देख रहे थे, जो पादरी के प्रवचन आसन के नीचे सामने ही रखा हुआ था। उनके चेहरे पर अजीब-सा भाव था, जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

''वह सचमुच खुश नहीं दिख रहे थे। मैं नहीं कह सकती कि वह खुश दिख रहे थे या नहीं, लेकिन मैं बस इतना

सोच पा रही थी कि वह ऐसे शख्स थे, जो किसी जगह पर पहुँचने के लिए दौड़ते रहे थे, दौड़ते रहे थे और आखिर में वहाँ पहुँच गए थे, जहाँ से वह जगह दिखाई दे रही थी।

''शायद उनके लिए किसी आदमी के अंतिम संस्कार में जाना और इस तरह से देखना भयंकर रहा होगा; लेकिन कुदरत तो कुदरत है, और मुझे पता नहीं क्यों हमेशा ऐसा लगा है कि अगर अंकल ईनोस ने जान-बूझकर वह सब किया था तो मरने के बाद यह सब उनकी अपेक्षा से अधिक भी नहीं था।

''लेकिन मुझे सचमुच इस बात पर बहुत शर्मिंदगी और दुष्टता का अहसास हुआ कि मैं इस तरह की बातें सोच रही हूँ और बेचारे अंकल ईनोस मेरे सामने मरे पड़े हैं। और जब मैं उन्हें वहाँ इस तरह असहाय लेटा देखने गई तो मैं बच्चों की तरह रो पड़ी। बेचारे अंकल ईनोस! यह हमें शोभा नहीं देता कि जब सबकुछ खत्म हो गया हो तो लोगों पर इस तरह टूटें!

''खैर, आंट रिबेका ने अंकल ईनोस के मरने के करीब दो साल बाद ऐबनर लायंज से शादी कर ली और वे केवल पाँच साल और सात महीने साथ रहे। फिर आंट रिबेका को मुनक्के खाने से हैजा हो गया और वह मर गईं। उसके बाद ऐबनर लायंज कोई डेढ़ साल और जिंदा रहे, और एक तरह की तपेदिक से उनकी भी मौत हो गई।

''वे अधिक दिनों तक खुश होकर साथ नहीं रह सके, और कभी-कभी तो मैं सोचती थी कि वे इतने सुखी थे भी नहीं; क्योंकि यह बात जो साफ है कि ऐबनर लायंस बहुत झमेला करनेवाले थे, मैं सोचती हूँ कि इतने दिन अकेला रहने की वजह से वह ऐसे हो गए थे। लेकिन मैं नहीं मानती कि शादी के बाद कोई दिन ऐसा गया होगा जब आंट रिबेका ने रोटी बनाई हो और ऐबनर लायंज ने उन्हें इस बारे में कुछ कहा न हो, और किसी औरत के लिए इससे खराब और कुछ नहीं होता कि आदमी उसकी रसोई में आकर झमेला करे।

''लेकिन अगर आंट रिबेका को अपनी अपेक्षा के विपरीत कुछ लगा भी होगा तो उन्होंने कभी अपनी निराशा को जाहिर नहीं किया।

''मैं कहती हूँ, ऐलमाइरी, लो वह घर भी दिखाई देने लगा, और बारिश भी उत्तर-पूर्व की तरफ चली गई है और यहाँ धूल जमाने को एक बूँद पानी भी नहीं पड़ा।

''खैर, मेरी कहानी भी उत्तर-पूर्व की तरफ चली गई है। मेरी बातें सुनकर तुम थकीं नहीं, ऐलमाइरी ?''

''बिलकुल नहीं, मिस ग्रीन।'' ऐलमाइरी ने लगाम फटकारते हुए कहा, ''मुझे तुम्हारी बातें सुनकर अच्छा लगा। बस, मुझे यह सब सुनकर कुछ ऐसा लगा, जैसे मैंने यह पहले भी सुन रखा है ! मुझे लगता है कि पिछली बार जब मैं तुम्हें वालपोल ले गई थी तब भी तुमने मुझे यही कहानी सुनाई थी।''

''देखो, मैं कहती हूँ, अगर मैंने सुनाई भी होगी तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है।''

तभी घोड़े ने सावधानी से मोड़ काटा और खुशी-खुशी घर के आगे रुक गया।

❑

पीला दीवारी कागज

-शार्लट पर्किंस गिलमैन

ऐसा बहुत कम होता है कि जॉन और मेरे जैसे अति साधारण लोग गरमियों के लिए पुश्तैनी हॉल लें।

उपनिवेश काल की कोई हवेली, कोई मौरूसी रियासत, बल्कि मैं कहूँगी कि कोई भुतहा मकान लें और रोमानी आनंद के चरम पर पहुँचें; लेकिन यह तो कुछ अधिक ही माँगना हुआ न भाग्य से!

फिर भी, मैं गर्व से कहूँगी कि यहाँ जरूर कुछ गड़बड़ है। नहीं तो इसे इतने कम किराए पर क्यों उठाते ये लोग? और यह इतने दिनों से खाली क्यों पड़ा रहता? अभी तक इसमें कोई किराएदार आया क्यों नहीं?

बेशक, जॉन मेरी बातों पर हँसते हैं, लेकिन यह अनपेक्षित भी नहीं है।

जॉन बेहद व्यावहारिक हैं। आस्था के मामले में, अंधविश्वास के गहन आतंक के मामले में उनमें बिलकुल भी धीरज नहीं है और वह ऐसी किसी भी चीज की चर्चा का खुल्लमखुल्ला मजाक उड़ाते हैं, जिसे महसूस या देखा नहीं जा सकता था, जिसे आँकड़ों में नहीं पेश किया जा सकता।

जॉन एक डॉक्टर हैं और शायद (बेशक, यह बात मैं किसी जीवित प्राणी से नहीं कहती, लेकिन यह तो निर्जीव कागज है और मेरे दिमाग के लिए भारी राहत का सबब भी) यही एक कारण है कि मैं जल्दी ठीक नहीं हो रही।

आपको पता है, वह तो विश्वास ही नहीं करते कि मैं बीमार हूँ। और कोई कर भी क्या सकता है?

अगर कोई बड़ा डॉक्टर, और आपका अपना पति, दोस्तों और रिश्तेदारों को यह विश्वास दिलाता जाए कि उसे कुछ नहीं हुआ है, बस थोड़े समय का मानसिक अवसाद है—हलकी-सी उन्माद की स्थिति है तो कोई क्या करे?

मेरा भाई भी डॉक्टर है, और वह भी बड़ा डॉक्टर है, और वह भी यही कहता है।

इसलिए मैं फॉस्फाइट—जो कुछ भी हो—लेती हूँ और टॉनिक व दवा लेती हूँ और व्यायाम व यात्राएँ करती हूँ। और मुझे सख्त मनाही है कि जब तक मैं फिर से ठीक नहीं हो जाती, मैं 'काम' न करूँ।

व्यक्तिगत तौर पर मेरा विश्वास है कि यदि मुझे मेरी पसंद का काम करने को मिले, रोमांच और बदलाव का मौका मिले तो मैं ठीक हो जाऊँगी।

लेकिन कोई क्या करे?

मैंने उन लोगों के मना करने के बावजूद थोड़ी देर लिखा; लेकिन इससे मुझे सचमुच बहुत थकान होती है। मुझे सबसे छिपाकर लिखना होता है, नहीं तो भारी विरोध का सामना करना पड़ता है।

मुझे कभी-कभी लगता है कि मेरी इस हालत में अगर मेरा कम विरोध हो और मुझे अधिक मेल-जोल व प्रेरणा दी जाए; लेकिन जॉन कहते हैं कि मेरे लिए मेरी हालत के बारे में सोचना सबसे खराब होगा, और मैं भी स्वीकार करती हूँ कि इससे मुझे हमेशा परेशानी होती है।

इसलिए मैं इसे यहीं छोड़कर मकान की बात करूँगी।

बहुत ही खूबसूरत जगह है! बिलकुल अकेला मकान है, जो सड़क से काफी पीछे हटकर बना है, गाँव से पक्का तीन मील है। इसे देखकर मुझे उन अंग्रेजी आवासों की याद हो आती है, जिनके बारे में आपने पढ़ा हुआ है; क्योंकि इसमें बाड़े हैं और दीवारें व तालोंवाले फाटक हैं और मालियों और नौकरों के लिए ढेरों छोटे-छोटे मकान अलग बने हुए हैं।

यहाँ एक मजेदार बाग है! मैंने ऐसा बाग पहले कभी नहीं देखा—बड़ा और छायादार है यह। इसमें ढेरों पगडंडियाँ

हैं, जिनके किनारों पर बाक्स की झाड़ियाँ लगी हैं और अंगूर लताओं से ढके लंबे-लंबे कुंज हैं, जिनके नीचे सीटें हैं।

पहले यहाँ काँच के पौध-घर भी थे, लेकिन वे सभी अब टूट चुके हैं।

मुझे लगता है कि इस जायदाद को लेकर कोई कानूनी अड़चन थी, शायद वारिसों और सह-वारिसों के बीच। बहरहाल, यह जगह सालों से खाली पड़ी थी।

मुझे डर है कि इससे मेरी भूतवाली बात गलत हो रही है, लेकिन मैं परवाह नहीं करती। इस मकान में जरूर कोई गड़बड़ है, मैं साफ महसूस कर सकती हूँ।

मैंने एक चाँदनी रात में जॉन से भी यही कहा था, लेकिन वह बोले कि मैंने हवा के झोके को महसूस किया होगा। और यह कहकर उन्होंने खिड़की बंद कर दी थी।

मैं जॉन के साथ कभी-कभी नाहक ही गुस्सा हो जाती हूँ। यह तो पक्का है कि मैं इतनी नकचढ़ी कभी नहीं रही। मैं सोचती हूँ, मेरी यह दिमागी विक्षोभ की हालत इसके लिए जिम्मेदार है।

लेकिन जॉन का कहना है कि यदि मैं ऐसा सोचूँगी तो अपने ऊपर नियंत्रण करने में कोताही कर जाऊँगी; इसलिए मैं अपने ऊपर नियंत्रण रखने की—कम-से-कम उनके सामने—भरपूर कोशिश करती हूँ और इससे मुझे बहुत थकान हो जातीहै।

मुझे हमारा कमरा बिलकुल भी पसंद नहीं है। मैं नीचेवाला वह कमरा चाहती थी, जो आँगन की तरफ खुलता है और जिसकी खिड़की पर गुलाब ही गुलाब हैं और छींट के इतने प्यारे परदे हैं! लेकिन जॉन कहाँ सुनते हैं!

उनका कहना था कि उस कमरे में केवल एक खिड़की है और दो पलंगों की जगह भी नहीं है, और आस-पास और कोई कमरा भी नहीं है, जिसे वह ले लें।

वह मेरी बहुत परवाह करते हैं और मुझे बहुत चाहते हैं और मुझे खास हिदायत के बगैर कहीं आने-जाने नहीं देते। मेरे लिए दिन के हर घंटे की बँधी-बँधाई दवा है; वह मेरी सारी चिंताएँ दूर करते हैं, और इसलिए मुझे यह महसूस होता है कि मैं इसकी अधिक कद्र नहीं करके उनके प्रति कृतघ्न हो रही हूँ।

वह कह रहे थे कि वह यहाँ केवल मेरे कारण आए हैं और मुझे जितना भी हो सके, पूरा आराम करना है और ज्यादा-से-ज्यादा हवा लेनी है। ''तुम्हारी कसरत तुम्हारी ताकत पर निर्भर करती है, मेरी जान!'' उन्होंने कहा था, ''और तुम्हारा खाना कुछ-कुछ तुम्हारी भूख पर निर्भर करता है; लेकिन हवा तो तुम हर समय लेती रह सकती हो।'' इसलिए हमने मकान के सबसे ऊपरी तल्ले पर बनी नर्सरी ले ली थी।

यह एक बड़ा व हवादार कमरा है, जिसने लगभग पूरा तल्ला ही घेर रखा है। इसमें हर तरफ खिड़कियाँ हैं और हवा व धूप की आमद है। पहले यह नर्सरी थी, फिर यह खेल का कमरा और व्यायामशाला बन गई, मेरा तो यही अनुमान है; लेकिन हवा तो तुम हर समय लेती रह सकती हो।'' इसलिए हमने मकान के सबसे ऊपरी तल्ले पर बनी नर्सरी ले ली थी।

यहाँ का रंग-रोगन और कागज ऐसा दिखता है मानो स्कूली लड़कों ने इसका इस्तेमाल किया हो। यह कागज मेरे पलंग के सिरहाने जगह-जगह से बहुत बड़ा-बड़ा उखाड़ा गया है। जहाँ तक मेरे हाथ पहुँच सकते हैं, वहाँ-वहाँ तक यह फटा हुआ है और कमरे के दूसरे छोर पर नीचे की तरफ भी इसका एक बड़ा-सा टुकड़ा फटा हुआ है। मैंने अपनी जिंदगी में इससे खराब कागज पहले कभी नहीं देखा।

इस पर फैली-फैली भड़कीली डिजाइनें बनी हैं, जिनमें कला की मर्यादा का खूब उल्लंघन हुआ है।

यह इतना फीका है कि इस पर आँखें दौड़ाने पर उलझन होती है और इतना स्पष्ट है कि चिड़चिड़ाहट होने के साथ

इसे देखने-समझने को मन बाध्य होता है। और जब आप इसकी रेखाओं के अपूर्ण, अनिश्चित मोडों पर थोड़ी दूरी तक नजर दौड़ाने लगते हैं तो ये अचानक आत्महत्या कर लेते हैं—असाधारण कोणों पर गोता लगा जाते हैं। ऐसे विरोधी स्वरूपों में उलझकर स्वयं को नष्ट कर लेते हैं, जिनके बारे में कभी सुना भी नहीं गया।

इसका रंग अरुचिकर, बल्कि बीभत्स-सा है। यह एक सुलगता गंदा पीला रंग है, जो धीरे-धीरे घूमती धूप के पड़ने पर अजीब ढंग से फीका पड़ जाता है।

यह फीका, लेकिन कहीं-कहीं पर चमकता नारंगी है और कहीं-कहीं मटमैला गंधक जैसा है।

कोई आश्चर्य नहीं कि बच्चे को इससे इतनी नफरत थी! अगर मुझे ही इस कमरे में ज्यादा दिन रहना होता तो मैं खुद इससे नफरत करती।

जॉन आ रहे हैं, अब मैं बंद करूँगी। वह कतई पसंद नहीं करते कि मैं एक शब्द भी लिखूँ। यहाँ रहते हुए हमें दो हफ्ते हो चुके हैं और उस पहले दिन के बाद से मेरा लिखने का मन ही नहीं हुआ।

अभी मैं इस भयंकर नर्सरी में खिड़की के पास बैठी हूँ और जब तक चाहूँ, लिख सकती हूँ। मुझे रोकनेवाला कोई नहीं है। मेरी ताकत ही चुक जाए तो बात और है।

जॉन पूरा-पूरा दिन बाहर रहते हैं और कभी-कभी जब कोई गंभीर मरीज देखना होता है तो रात में भी नहीं आते।

मुझे खुशी है कि मैं गंभीर मरीज नहीं हूँ! लेकिन ये दिमागी विक्षोभ की परेशानियाँ तो भयंकर रूप से अपवाद पैदा करनेवाली हैं।

जॉन को नहीं पता कि मुझे सचमुच कितनी तकलीफ हैं। वह तो यह जानते हैं कि तकलीफ सहनेवाली कोई वजह ही नहीं है, और वह इसी से संतुष्ट रहते हैं।

बेशक यह केवल विक्षोभ है। मुझे यह बात सचमुच परेशान करती है कि मैं किसी तौर भी अपना फर्ज नहीं निभा रही!

मैं कितना चाहती थी कि जॉन की मदद करूँ, उन्हें सचमुच आराम और तसल्ली दूँ; लेकिन यहाँ मैं खुद ही एक बोझ बन चुकी हूँ!

कोई यह विश्वास भी नहीं करेगा कि मैं यह जो थोड़ा-बहुत कर लेती हूँ, उसे करने के लिए मुझे कितना दम लगाना पड़ता है—कपड़े पहनना और सत्कार करना और चीजों के लिए आदेश देना। यह तो किस्मत की बात है कि मैरी बच्चे को इतनी अच्छी तरह से सँभाल लेती है। कितना प्यारा बच्चा है!

और फिर भी मैं उसके साथ रह नहीं सकती, इससे मुझे बहुत विक्षोभ होताहै।

मुझे लगता है कि जॉन ने अपनी जिंदगी में कभी विक्षोभ नहीं देखा। उस दीवारी कागज (वॉल पेपर) को लेकर वह मुझपर कितना हँसते हैं!

पहले तो वह पूरे कमरे पर दूसरा कागज लगवाना चाहते थे, लेकिन बाद में उन्होंने कहा कि मैं इसे अपने आप पर हावी होने दे रही हूँ और विक्षोभ के मरीज के लिए इससे खराब और कुछ नहीं होता कि वह इस तरह की कल्पनाओं को अपने ऊपर हावी होने दे।

उनका कहना था कि अगर दीवारी कागज बदल दिया तो फिर कोई और चीज हावी हो जाएगी—भारी पलंग और फिर सलाखोंवाली खिड़कियाँ और फिर सीढ़ियों के ऊपर का वह दरवाजा वगैरह-वगैरह।

''तुम जानती हो, इस जगह से तुम्हें फायदा हो रहा है।'' उन्होंने कहा था, ''और सच मेरी जान, मैं इस मकान को नए सिरे से सजाने के मूड में नहीं हूँ। हमें यहाँ तीन महीने ही तो रहना है।''

''तो फिर नीचे चलते हैं,'' मैंने कहा था, ''वहाँ इतने अच्छे कमरे हैं।''

तब उन्होंने मुझे अपनी बाँहों में भरकर मुझे प्यारी चिड़िया कहा था और कहा था कि अगर मेरी यही इच्छा थी तो वह नीचे तलघर में जाने को तैयार थे और बदले में इसमें सफेदी भी करा देंगे।

लेकिन पलंग व खिड़कियों और दूसरी चीजों के बारे में उनका कहना काफी सही है।

यह वैसा ही हवादार व आरामदेह कमरा है, जैसा किसी को भी चाहिए होता है, और बेशक मैं इतनी बेवकूफ नहीं हूँ कि अपनी एक सनक में उनका आराम हराम कर दूँ!

मुझे यह बड़ा कमरा सचमुच अच्छा लगने लगा है, बस, उस भयावह कागज को छोड़कर।

इसकी एक खिड़की से मुझे बगीचा दिखाई देता है और दिखाई देते हैं वे रहस्यमय छायादार कुंज, पुराने ढंग के फूल और झाड़ियाँ तथा गठीले पेड़।

दूसरी खिड़की से मुझे खाड़ी और रियासत के छोटे से निजी घाट का खूबसूरत नजारा दिखाई देता है। यहाँ एक सुंदर छायादार पगडंडी है, जो मकान से वहाँ तक जाती है। मुझे हमेशा लगता है कि मैं इन अनगिनत पगडंडियों और कुंजों में लोगों को टहलता देख रही हूँ। लेकिन जॉन ने मुझे खबरदार किया है कि मैं कल्पना को अपने ऊपर बिलकुल भी हावी न होने दूँ। वह कहते हैं कि मेरी कल्पना करने की शक्ति और कहानियाँ गढ़ने की आदत के चलते मुझ जैसी स्नायविक कमजोरी वाली औरत तमाम तरह की रोमांचित कल्पनाओं के घेरे में आ सकती है और मुझे अपनी इच्छा-शक्ति व सदाशयता का इस्तेमाल करके इस प्रवृत्ति पर रोक लगानी चाहिए। इसलिए मैं कोशिश करती हूँ।

कभी-कभी मैं सोचती हँ कि काश, मैं बस इतनी ठीक होती कि थोड़ा-बहुत लिख लेती, तो इससे मेरे विचारों का दबाव हट जाता और मुझे आराम मिल जाता!

लेकिन जब मैं लिखने की कोशिश करती हूँ तो बहुत थक जाती हूँ।

यह स्थिति बहुत निरुत्साहित करनेवाली है कि मेरे काम में कोई सलाह और साथ देनेवाला नहीं है। जॉन कहते हैं कि जब मैं सचमुच ठीक हो जाऊँगी तो वह हमारे चचेरे संबंधी हेनरी और जूलिया को काफी दिनों के लिए हमारे पास बुलाएँगे; लेकिन अभी तो वह कहते हैं कि ऐसे जोशीले लोगों को बुलाने के बजाय वह मेरे तकिया गिलाफ में पटाखे रखना ज्यादा पसंद करेंगे।

काश, मैं जल्दी ठीक हो जाती!

लेकिन मुझे उस बारे में नहीं सोचना चाहिए। वह कागज मुझे ऐसा दिखता है जैसे उसे अपने अनिष्टकारी प्रभाव के बारे में पता है!

इस कागज में ऐसी जगह बार-बार आती है जहाँ वह डिजाइन एक टूटी गरदन की तरह लोटती है और दो गोल आँखें आपको उलटी घूरती हैं।

उसकी अशिष्टता और अभद्रता पर मुझे गुस्सा आता है। ऊपर-नीचे और दाएँ-बाएँ ये रेंगती हैं और वे बेहूदा एकटक घूरती आँखें हर जगह दिखाई देती हैं। वहीं एक जगह ऐसी आती है जहाँ कागज की दो चौड़ाइयों का मिलान नहीं हो पाता और वहाँ आँखें ऊपर-नीचे हो गई हैं। एक आँख दूसरी से थोड़ी ऊँची रहतीहै।

इससे पहले मैंने किसी बेजान चीज में इतनी व्यंजना नहीं देखी और हम सभी जानते हैं कि उनमें कितनी व्यंजना है! जब मैं बच्ची थी तो बिस्तर पर जागती पड़ी रहती थी और मुझे काली दीवारों व सादे फरनीचर में इतना मजा और डर मिलता था, जितना अधिकांश बच्चों को खिलौनों की दुकान में भी नहीं मिलता होगा।

मुझे याद है कि हमारी पुरानी दराजदार मेजों के गोल हत्थों में पलकों की कितनी प्यार भरी झपक होती थी और वहाँ एक कुरसी थी, जो हमेशा ही एक पक्की दोस्त की तरह दिखती थी।

मुझे तब यह लगा करता था कि अगर और कोई भी चीज मुझे बहुत भयंकर दिखाई देगी तो मैं कूदकर उस कुरसी में बैठ जाऊँगी।

बहरहाल, इस कमरे का फरनीचर बेमेल ही है, क्योंकि इसे हमें नीचे से लाना पड़ा था। मैं सोचती हूँ कि जब इस कमरे का इस्तेमाल खेल के लिए होता था तो उन्हें नर्सरी की चीजों को यहाँ से हटाना पड़ा था और कोई आश्चर्य नहीं! बच्चों ने यहाँ जैसी बरबादी की है, वह मैंने कभी नहीं देखी।

जैसाकि मैं पहले कह चुकी हूँ, यह दीवारी कागज जगह-जगह से फटा हुआ है और यह किसी बंधु-बाँधव की अपेक्षा अधिक अंतरंगता से चिपकता है—उनमें लगन और नफरत दोनों ही रही होंगी।

फिर फर्श को खुरचा हुआ है और खोदा हुआ है और उखाड़ा हुआ है; पलस्तर तक को यहाँ-वहाँ से खोदा हुआ है। और यह बड़ा सा भारी पलंग, जिसके अलावा हमें इस कमरे में और कुछ भी नहीं मिला था, यह पलंग ऐसा दिखाई देता है जैसे इसने न जाने कितनी लड़ाइयाँ देखी हैं!

लेकिन मैं इस पर बिलकुल ध्यान नहीं देती—बस कागज को देखती हूँ।

जॉन की बहन आ रही है। बहुत प्यारी लड़की है और कितना खयाल रखती है मेरा! उसे नहीं पता लगना चाहिए कि मैं लिख रही हूँ।

वह घर को सँभालने में दक्ष है व उत्साही भी, और इससे और बढ़िया काम की उम्मीद भी नहीं करती। मुझे पूरा विश्वास है कि वह यही सोचती है कि मेरी बीमारी की वजह यही लेखन है।

लेकिन उसके जाने के बाद मैं लिख सकती हूँ। इन खिड़कियों से मैं उसे दूर जाता देख सकती हूँ।

इनमें से एक खिड़की ऐसी है, जिसमें से सड़क दिखाई देती है। यह एक खूबसूरत छायादार और चक्करदार सड़क है और उस पर से पूरा प्रदेश दिखाई देता है। यह भी सुंदर है। यहाँ देवदार के बड़े-बड़े पेड़ों की भरमार है और मखमली चरागाहें भी हैं।

इस दीवारी कागज पर मुख्य डिजाइन के अतिरिक्त एक गौण डिजाइन भी है, जो अलग रंग में है। यह रंग तो खास तौर पर तंग करनेवाला है, क्योंकि आपको यह रंग कुछ ही तरह की रोशनियों में दिखाई पड़ता है और तब भी सफाई से नहीं दिखाई देता।

लेकिन जिन जगहों पर यह फीका नहीं पड़ा है और जहाँ धूप बस ऐसी ही पड़ती है—वहाँ मुझे एक अजीब, उत्तेजित करनेवाली, निराकार किस्म की एक आकृति दिखाई देती है, जो आगेवाली उस बेहूदी और स्पष्ट डिजाइन के पीछे दुबकती प्रतीत होती है।

सीढ़ियों पर बहन आ रही है!

तो 4 जुलाई बीत गई! सारे लोग जा चुके हैं और मैं थककर चूर हूँ। जॉन ने सोचा था कि लोगों का थोड़ा साथ मिलने से मुझे कुछ फायदा होगा, इसलिए माँ व नेली और बच्चे एक हफ्ते के लिए यहाँ आ गए थे।

यह सच है कि मैंने कोई काम नहीं किया। जेनी ही अब सबकुछ देखती है।

फिर भी मुझे थकान तो हो ही गई।

जॉन कहते हैं कि अगर मैं जल्दी ठीक नहीं हुई तो वह मुझे पतझड़ में वेयर के पास भेज देंगे।

लेकिन मैं वहाँ किसी हाल में भी जाना नहीं चाहती। मेरी एक दोस्त थी, जो एक बार उन्हीं की देखरेख में थी और उसका कहना है कि वह भी जॉन और मेरे भाई जैसे ही हैं, बल्कि उनसे भी बढ़कर!

इसके अलावा, उतनी दूर जाना अपने आप में एक मुश्किल है। मुझे ऐसा नहीं लगता कि मेरे लिए किसी भी काम में हाथ डालना ठीक था और अब मैं चिड़चिड़ी और बदमिजाज होती जा रही हूँ।

मैं बिना किसी बात के रो देती हूँ और अधिकतर रोती ही रहती हूँ।
हाँ, जब जॉन यहाँ होते हैं या और कोई यहाँ होता है तो मैं नहीं रोती। मैं जब अकेली होती हूँ, तभी रोती हूँ।
और अभी इस समय मैं बहुत अकेली होती हूँ। जॉन को गंभीर रोगियों के कारण अधिकतर बाहर रहना होता है और जेनी इतनी अच्छी है कि जब मेरा अकेला रहने का मन होता है तो वह मुझे अकेला छोड़ देती है। और इस तरह मैं बगीचे में या उस खूबसूरत पगडंडी में थोड़ा टहल लेती हूँ, गुलाबों के नीचे बरामदे पर बैठ लेती हूँ और ऊपर यहाँ खूब देर तक लेट लेती हूँ।
इस दीवारी कागज के बावजूद मुझे यह कमरा सचमुच अच्छा लगने लगा है। शायद दीवारी कागज के ही कारण। यह मेरे दिमाग पर कैसा छाया रहता है!
मैं यहाँ इस बड़े अचल पलंग पर पड़ी रहती हूँ। मुझे पक्का लगता है कि इसे यहाँ फर्श में जड़ दिया गया है—और उस डिजाइन को घंटावार देखती रहती हूँ। यह जिम्नास्टिक्स से कम नहीं है, मेरा विश्वास कीजिए। यह कह लीजिए कि मैं नीचे से शुरू करती हूँ, वहाँ कोने से जहाँ इसे छुआ नहीं गया है और मैं हजारवीं बार यह तय करती हूँ कि मैं उस बेतुकी डिजाइन पर नजरें दौड़ाते हुए किसी-न-किसी निष्कर्ष पर पहुँचकर ही रहूँगी।
मुझे डिजाइन के सिद्धांत की थोड़ी-बहुत जानकारी है और मैं जानती हूँ कि इसे विकिरण या अदल-बदल या दुहराव या संतुलन या किसी और नियम के अनुसार नहीं बनाया गया, जिसके बारे में मैंने कभी सुना हो।
हाँ, चौड़ाई में जरूर इसमें दुहराव का प्रयोग किया गया है, लेकिन वैसे नहीं।

एक तरह से देखने पर हर पट्टी चौड़ाई में अलग दिखाई देती है। फूले हुए घुमाव और सजावटी कतारें बेतुके ढंग से ऊपर-नीचे अकेली दौड़ती दिखाई देती हैं। यह एक तरह की मध्ययुगीन शैली का विकृत रूप है।
लेकिन, दूसरी ओर आड़ी होकर वे एक-दूसरे से जुड़ती हैं और फैली हुई बाहरी रेखाएँ दृष्टि को अतंकित करनेवाली बड़ी-बड़ी तिरछी लहरों में इधर से उधर दौड़ गई हैं। ये ऐसी दिखाई देती हैं जैसे लोटती लहराती ढेरों समुद्री घास हो!
पूरी डिजाइन लेटी रेखाओं में भी चलती हैं, कम-से-कम दिखाई तो यह ऐसी ही देती है, और उस दिशा में इसके चलने के क्रम को पहचानने की कोशिश में मैं पस्त हो जाती हूँ।

डिजाइन बनानेवालों ने चौड़ाई में पड़ी आकृतियों का प्रयोग किनारी के तौर पर किया है और इससे भ्रांति में अद्भुत वृद्धि हुई है।
कमरे का एक छोर है, जहाँ जाकर यह लगभग अविकल हो गई है और वहाँ, जब तिरछा प्रकाश धूमिल हो जाता है और नीचे आती सूरज की किरणें ठीक इसके ऊपर चमकती हैं तो मुझे अंतत: विकिरण का गुमान होता है। तब यह असीम की ओर बढ़ती आकृति एक साझा केंद्र के चारों ओर एक आकार लेती-सी लगती है और विकर्षण वाली खड़ी सीध में अनायास गोते लगा जाती है।
इस पर नजर दौड़ाते-दौड़ाते मैं थक जाती हूँ। शायद अब मुझे एक झपकी ले लेनी चाहिए।

मुझे नहीं पता मैं यह सब क्यों लिख रही हूँ! मैं लिखना नहीं चाहती। मुझमें सामर्थ्य नहीं है। और मुझे पता है कि जॉन को यह वाहियात लगेगा। लेकिन मैं जो महसूस करती हूँ और किसी तरह सोचती हूँ, वह मुझे कहना ही होगा —इससे कितनी राहत मिलती है!
लेकिन यह कोशिश तो राहत से भी भारी पड़ रही है।
अब आधा समय तो मैं बेहद सुस्त रहती हूँ, बहुत देर-देर तक लेटी रहती हूँ। जॉन कहते हैं कि मुझे अपनी ताकत नहीं खोनी चाहिए और वह मुझे मछली का तेल और तरह-तरह के टॉनिक व दूसरी चीजें देते रहते हैं। जबकि शराब

और सुरा और अधपके मांस की तो चर्चा ही क्या करनी!

प्यारे जॉन! वह मुझे बहुत ज्यादा प्यार करते हैं और मेरा बीमार पड़ना उन्हें बिलकुल नहीं सुहाता। अभी उस दिन मैंने उनसे बहुत साफ-साफ बात करने की कोशिश को और उन्हें बताया कि मेरी बहुत इच्छा है कि वह मुझे यहाँ से जाने दें और हेनरी व जूलिया से मिलने दें।

लेकिन वह बोले कि मैं जाने लायक नहीं हूँ। और इस लायक भी नहीं हूँ कि वहाँ जाने के बाद सबकुछ बरदाश्त कर सकूँ; और मैं अपनी बात बहुत अच्छी तरह से नहीं रख पाई, क्योंकि मैं पूरी बात कहने से पहले ही रोने लगी थी।

मुझे ठीक-ठीक सोचने में भी अब बहुत जोर लगाना पड़ता है। मुझे लगता है कि यह इसी स्नायविक कमजोरी की वजह से है। और प्यारे जॉन ने मुझे बाँहों में भर लिया और मुझे ऊपर ले जाकर पलंग पर लिटा दिया और मेरे पास बैठ गए और मुझे पढ़कर सुनाने लगे। उन्होंने इतना सुनाया कि मेरा दिमाग ही थक गया।

उन्होंने कहा कि मैं उनकी जानेमन और उनका चैन व उनका सबकुछ हूँ, और मुझे उनकी खातिर अपना खयाल रखना होगा और ठीक रहना होगा।

वह कहते हैं कि इस हालत से मुझे केवल मैं ही निकाल सकती हूँ और मुझे अपनी इच्छा-शक्ति और आत्म-नियंत्रण से काम लेना होगा और अपने ऊपर किसी बेहूदी कल्पना को हावी नहीं होने देना होगा।

मेरे लिए तसल्ली की एक बात यह है कि बच्चा तो ठीक-ठाक और सुखी है और इसे इस भयंकर दीवारी कागज में उस नर्सरी में नहीं रहना पड़ रहा।

यदि हम इसमें नहीं रहते तो उस बेचारे बच्चे को यहाँ रहना पड़ता। अच्छी किस्मत है उसकी, जो बच गया! अरे, मैं अपने बच्चे को, जिसका दिमाग अभी कच्चा है; उस नन्हीं सी जान को, किसी भी हाल में इस कमरे में नहीं रहने देसकती।

मैंने इस बारे में पहले कभी नहीं सोचा; लेकिन यह भी किस्मत की बात है कि आखिर जॉन ने मुझे यहाँ रखा। एक बच्चे के मुकाबले मैं इसे आसानी से झेल सकती हूँ, आप तो जानते हैं!

बेशक अब मैं इस बारे में उनसे कभी बात नहीं करती। मैं बहुत अकलमंद हूँ, लेकिन मैं इस पर फिर भी निगाह रखती हूँ।

उस दीवारी कागज में ऐसी कई चीजें हैं, जिनके बारे में मेरे सिवाय और कोई नहीं जानता, न कभी जानेगा।

उस बाहरी डिजाइन के पीछे जो धुँधली आकृतियाँ हैं, वे हर दिन और भी साफ होती जाती हैं।

हर बार आकृति तो वही होती है, बस उसमें अनेकता आ जाती है। और यह ऐसी लगती है जैसे कोई औरत उस डिजाइन के पीछे झुककर रेंग रही है! मुझे यह बिलकुल भी अच्छी नहीं लगती। मुझे हैरत होती है—मैं सोचने लग जाती हूँ—काश, जॉन मुझे यहाँ से कहीं और ले जाते!

अपनी हालत के बारे में जॉन से बात करना मुश्किल होता है, क्योंकि वह इतने अकलमंद हैं और मुझसे बहुत प्यार भी करते हैं। लेकिन फिर भी मैंने कल रात कोशिश कर ही ली। चाँदनी रात थी। धूप की तरह यहाँ चाँदनी भी हर तरफ खिली रहती है।

कभी-कभी तो मुझे इसे देखना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। यह इतने धीरे-धीरे रेंगती है और हमेशा ही किसी-न-किसी खिड़की से अंदर आती रहती है।

जॉन उस समय सो रहे थे और मुझे उन्हें जगाना बिलकुल अच्छा नहीं लगा, इसलिए मैं खामोश रही और उस लहराते दीवारी कागज पर चाँदनी को निहारती रही। मैं उसे इतनी देर तक देखती रही कि मुझे झुरझुरी हो आई।

डिजाइन के पीछेवाली धुँधली आकृति जैसे उस डिजाइन को हिला रही थी, मानो उससे बाहर आना चाह रही हो! मैं धीरे से उठी और कागज को टटोलकर देखने लगी कि क्या सचमुच कागज हिला था, और जब मैं वापस हुई तो जॉन जाग चुके थे।

''क्या बात है, नन्ही जान?'' वह बोले, ''इस तरह मत घूमो-फिरो, ठंड पकड़ लेगी।''

मैंने सोचा, बात करने का यह अच्छा मौका है, सो मैंने उनसे कह दिया कि मुझे यहाँ सचमुच कोई फायदा नहीं हो रहा और मेरी तो यही इच्छा है कि वह मुझे यहाँ से ले चलें।

''क्यों जानेमन?'' वह बोले, ''हमारी मियाद तो तीन हफ्ते में खत्म होगी, और मुझे नहीं समझ में आता कि उससे पहले हम यहाँ कैसे जाएँगे ?

''घर में मरम्मत नहीं हुई है, और मेरे लिए अभी यहाँ से जाना भी संभव नहीं है। हाँ, अगर तुम किसी खतरे में होतीं, तो मैं जरूर जा सकता था और जाता भी। लेकिन तुम सचमुच पहले से अच्छी हो मेरी जान, चाहे तुम्हें खुद दिखाई न दे रहा हो। मैं एक डॉक्टर हूँ मेरी जान, और मैं जानता हूँ, तुम पर मांस चढ़ रहा है और तुम्हारी रंगत भी साफ हो रही है। तुम्हारी भूख भी पहले से अच्छी है, तुम्हारी तरफ से अब मुझे उतनी परेशानी नहीं है।''

''मेरा वजन रत्ती भर भी नहीं बढ़ा है।'' मैंने कहा, ''पहले जितना भी नहीं है और मेरी भूख भी शाम को ही बेहतर होती होगी, जब आप यहाँ होते हैं; लेकिन सुबह जब आप चले जाते हैं तो यह और भी खराब होती है।''

''भला हो इस नन्ही जान का!'' वह मुझे जोर से भींचते हुए बोले।

''वह जितना चाहेगी उतना बीमार होगी ! लेकिन अब हम जागने के घंटे बढ़ाएँगे और और इसके लिए अभी सो जाएँगे और सुबह उठकर बात करेंगे।''

''और आप जाएँगे नहीं?'' मैंने उदास होकर पूछा।

''अरे, मैं कैसे जा सकता हूँ, जानेमन ? अब बस तीन हफ्ते और रह गए हैं, और फिर हम कुछ दिनों के लिए बढ़िया सैर-सपाटे पर निकल जाएँगे और इस बीच जेनी घर को ठीक कर लेगी। सच जानेमन, तुम अब पहले से अच्छी हो!''

''हो सकता है, शारीरिक तौर पर,'' मैंने कहना शुरू किया, लेकिन बीच में ही रुक गई, क्योंकि वह सीधे तनकर बैठ गए थे और ऐसे कठोर व झिड़कते अंदाज में मुझे देख रहे थे कि मैं आगे एक शब्द भी नहीं बोल पाई।

''मेरी जान,'' उन्होंने कहा, ''मैं तुमसे याचना करता हूँ कि मेरी खातिर और हमारे बच्चे की खातिर और खुद अपनी खातिर भी तुम एक पल के लिए भी इस खयाल को अपने मन में नहीं आने दोगी ! तुम्हारे जैसे स्वभाव के व्यक्ति के लिए इससे ज्यादा खतरनाक व मनमोहक और कुछ नहीं हो सकता। यह एक झूठी और बेहूदी कल्पना है। जब मैं तुमसे यह कह रहा हूँ तो क्या तुम एक डॉक्टर समझकर मुझपर भरोसा नहीं कर सकतीं?''

इसलिए बेशक मैं उस विषय पर आगे कुछ नहीं बोली और जल्दी ही सोने चली गई। वह सोच रहे थे कि मैं पहले सो गई हूँ, लेकिन मैं सोई नहीं थी। मैं घंटों लेटी यह फैसला करने की कोशिश करती रही कि सामनेवाली और पीछेवाली डिजाइन क्या सचमुच साथ-साथ हिली थी या अलग-अलग !

इस तरह की डिजाइन पर दिन के प्रकाश में कोई सीधा क्रम नहीं रहता और कुछ भी नियम के अनुसार नहीं होता। इसी से एक साधारण दिमागवाला व्यक्ति इससे लगातार उद्विग्न रहता है।

इसका रंग काफी बीभत्स है, काफी अविश्वसनीय है और काफी क्रोध दिलाने वाला है, लेकिन डिजाइन तो आततायी है।

आप सोचते हैं कि आप इसमें माहिर हो गए हैं, लेकिन जब आप इन पर नजर दौड़ाते हुए बहुत आगे तक निकल

जाते हैं, तभी यह पीछे की ओर कलाबाजी खाती है और बस, यह आपके मुँह पर तमाचा जड़ती है, आपको गिरा देती है और आपको रौंदती चली जाती है। यह एक खराब सपने की तरह है।

बाहरी डिजाइन पर झड़कीली फूल-पत्तियाँ हैं और इसे देखकर फफूँदी की याद हो आती है। यदि आप एक कतार में फूलते और अंतहीन कुंडलियों में जमे कुकुरमुत्तों की कल्पना कर सकें—बस, कुछ-कुछ ऐसी ही डिजाइन है यह!

अर्थात्, कभी-कभी!

इस कागज में एक असाधारण विचित्रता है, जिस पर शायद मेरे सिवाय और किसी ने भी ध्यान नहीं दिया है, और वह यह है कि यह प्रकाश बदलने के साथ-साथ बदलता है।

जब धूप पूर्वी खिड़की से अंदर आती है—और मैं हमेशा उस पहली, लंबी, सीधी किरण का इंतजार करती हूँ—तब यह इतनी तेजी से बदलता है कि मुझे तो बिलकुल विश्वास ही नहीं होता।

इसलिए मैं इसे हमेशा देखती रहती हूँ।

चाँदनी में—और जब आसमान में चाँद होता है तो कमरे में रात भर चाँदनी रहती है—मुझे पहचान में ही नहीं आता कि यह वही कागज है।

रात में कैसी भी रोशनी में, धुँधलके में, मोमबत्ती की रोशनी में, लैंप की रोशनी में, और सबसे अधिक तो चाँदनी में—यह सलाखों का रूप ले लेता है! मेरा मतलब बाहरी डिजाइन से है और इसके पीछे जो औरत है, वह ज्यादा-से-ज्यादा सफाई से उभर आती है।

बहुत दिनों तक तो मैं समझी ही नहीं कि यह है क्या चीज, जो पीछे दिखाई देती है, वह धुँधली सी गौण डिजाइन; लेकिन अब मुझे पक्का विश्वास है कि यह एक औरत ही है।

दिन के उजाले में तो वह दबी-दबी और शांत रहती है। मैं सोचती हूँ कि यह डिजाइन ही है, जिसके कारण वह इतनी शांत रहती है। कितनी चकरा देनेवाली बात है यह! और यह मुझे घंटे-घंटे शांत बनाए रखती है।

अब मैं बहुत देर-देर तक लेटी रहती हूँ। जॉन कहते हैं कि यह मेरे लिए अच्छा है।

सच, मेरी यह आदत भी उन्होंने बनाई है। वह मुझे हर खाने के बाद एक घंटे के लिए लिटा देते थे।

मैं मानती हूँ कि यह बहुत गंदी आदत है, क्योंकि आप जानते हैं, मैं सोती नहीं हूँ। और इससे धोखा देने की स्थिति बनती है, क्योंकि मैं इन लोगों को नहीं बताती कि मैं जाग रही हूँ—न बाबा! सच तो यह है कि अब मुझे जॉन से थोड़ा डर लगने लगा है। कभी-कभी वह बहुत अजीन नजर आते हैं और यहाँ तक कि जेनी के हाव-भाव भी अबूझ होते हैं।

कभी-कभी मुझे तो ऐसा लगता है कि शायद इसके पीछे यह कागज ही है! यह मेरी वैज्ञानिक परिकल्पना है।

मैंने जॉन को तब ध्यान से देखा है जब वह इस ओर से अनजान थे और कई बार मैं छोटे-मोटे बहाने से अचानक कमरे में आ गई हूँ और मैंने कई बार उन्हें कागज को घूरते हुए पकड़ा है! और जेनी को भी। एक बार तो मैंने जेनी को तब पकड़ा था जब वह इस पर हाथ रखे हुए थी।

उसे पता नहीं था कि मैं कमरे में हूँ और जब मैंने उससे शांत, बहुत ही शांत स्वर में और यथासंभव संयमित ढंग से यह पूछा कि वह इस कागज से क्या कर रही थी, तो उसने ऐसे घूमकर देखा था, जैसे उसकी चोरी पकड़ी गई हो, और वह बहुत गुस्से में दिखाई दे रही थी और मुझसे कहने लगी थी कि मैं उसे इस तरह क्यों डरा देती हूँ?

फिर उसने कहा था कि यह कागज जिस चीज से छू जाता है, वह गंदी हो जाती है। उसने कहा था कि उसे मेरे और जॉन के तमाम कपड़ों में पीले धब्बे मिले थे, और उसने कहा था कि हमें और सँभलकर रहना चाहिए।

क्या उसकी बातों से मासूमियत नहीं टपकती? लेकिन मैं जानती हूँ कि वह उस डिजाइन को समझने की कोशिश कर रही थी और मैं कृत संकल्प हूँ कि मेरे सिवाय और कोई भी इसका पता नहीं लगा पाएगा।

जिंदगी अब पहले के मुकाबले बहुत रोमांचक है। जानते हैं, मेरे पास अब अपेक्षा करने को, आशा करने को, देखने को कुछ और भी है! अब मैं सचमुच ज्यादा अच्छी तरह से खाती हूँ और पहले से ज्यादा शांत हूँ।

जॉन यह देखकर बहुत खुश हैं कि मैं पहले से अच्छी हो रही हूँ! उस दिन वह थोड़ा हँसते हुए कह रहे थे कि मैं अपने दीवारी कागज के बावजूद फल-फूल रही थी।

मैंने हँसकर बात टाल दी थी। मेरा उनसे यह बताने का कोई इरादा नहीं था कि मैं दीवारी कागज के कारण पनप रही थी—वह मेरा मजाक बनाते। शायद वह मुझे यहाँ से ले जाना भी चाहते।

लेकिन अब मैं जब तक इसका पता नहीं लगा लेती, यहाँ से जाना नहीं चाहूँगी। अब एक हफ्ता और रह गया है और मैं सोचती हूँ, इतना समय काफी होगा।

अब मैं बहुत बेहतर महसूस कर रही हूँ!

रात में मैं बहुत ज्यादा नहीं सोती, क्योंकि जो कुछ नया हो रहा है, उसे देखना बहुत रोचक है; लेकिन दिन में मैं खूब सो लेती हूँ। दिन में इसमें थकान होती है और उलझन भी।

फफूँदी में हर समय नई शाखाएँ और हर जगह हर तरह का पीला रंग दिखाई देता है। मैंने पूरे विवेक से कोशिश की है, फिर भी मैं उनका हिसाब रखने में कामयाब नहीं हुई।

वह दीवारी कागज, बहुत ही अजीब तरह का पीला रंग है उसका! मैंने अपनी जिंदगी में जो पीली चीजें देखी हैं, इस कागज को देखकर मुझे उन सबकी याद हो आती है—नवनीत पुष्पों जैसी सुंदर चीजों की नहीं, बल्कि पुरानी, गंदी, खराब, पीली चीजों की।

लेकिन उस कागज में और भी कुछ है—वह गंध! हम जब कमरे में आए थे उसी पल मुझे इसका आभास हो गया था; लेकिन तब इतनी हवा और धूप थी कि यह खराब नहीं लगी थी। लेकिन अब एक हफ्ते से कोहरा व बारिश चल रही है और खिड़कियाँ चाहे खुली हों या नहीं, वह गंध यहाँ यूँ ही बनी रहती है।

यह पूरे मकान में रेंग जाती है। यह मुझे खाने के कमरे में मँडराती, बैठक में दुबकी, हॉल में छिपी और खिड़कियों में मेरे लिए घात लगाए मिलती है। यह मेरे बालों में घुस जाती है।

यहाँ तक कि जब मैं सवारी के लिए जाती हूँ और अचानक अपना सिर घुमाती हूँ—तब भी मुझे यह गंध मिलती है। और है भी कैसी अजीब गंध यह! मैंने घंटों इसका विश्लेषण किया है और यह समझने की कोशिश की है कि यह है किस तरह की गंध!

यह शुरू-शुरू में तो खराब नहीं लगती, बहुत भीनी-भीनी होती है; लेकिन इतनी सूक्ष्म और इतनी टिकनेवाली गंध मैंने पहले कभी महसूस नहीं की।

इस नम मौसम में भयंकर लगती है यह। मैं रात में जाग जाती हूँ और यह मुझे मेरे ऊपर झूलती मिलती है।

पहले तो यह मुझे परेशान कर देती थी। मैं तब गंभीरता से यह सोचा करती थी कि इस गंध तक पहुँचने के लिए मैं इस मकान को ही आग लगा दूँगी।

लेकिन अब मैं इसकी आदी हो गई हूँ। इससे समानता रखनेवाली एक ही चीज मेरी समझ में आती है और वह है कागज का रंग! एक पीली गंध है यह।

इस दीवार पर एक बहुत मजेदार निशान है, जो नीचे किनारी के पास है। यह एक धारी है, जो कमरे की सभी दीवारों पर चली गई है। यह पलंग को छोड़कर फरनीचर के और तमाम सामानों के पीछे चली गई है। यह एक

लंबा, सीधा, समतल धब्बा है, जो ऐसा दिखता है मानो इसे बार-बार रगड़ा गया हो।
मुझे यह सोचकर हैरत होती है कि यह किया कैसे गया होगा और इसे किया किसने होगा और करनेवालों ने ऐसा किया किसलिए? गोल और गोल और गोल—गोल और गोल और गोल—मुझे तो चक्कर आने लगते हैं!
आखिरकार मुझे सचमुच कुछ हाथ लग गया है।
रात में जब यह रूप बदलता है, उस समय इसे देख-देखकर आखिरकार मैंने पता कर ही लिया।
सामनेवाली डिजाइन सचमुच हिलती है—और कोई आश्चर्य नहीं, पीछे छिपी औरत ही इसे हिलाती है!
कभी-कभी मुझे लगता है कि पीछे बहुत सारी औरतें छिपी हैं और कभी-कभी मुझे केवल एक ही औरत दिखती है और वह तेजी से रेंगती है, और रेंगने से यह पूरा-का-पूरा हिलने लगता है। और फिर बहुत चटक हिस्सों पर वह शांत रहती है, और बहुत धुँधले हिस्सों में वह बस सलाखों को पकड़ लेती है और उन्हें जोर से हिला देती है। और सारा समय वह इसे फलाँगने की कोशिश में रहती है। लेकिन कोई भी उस डिजाइन को फलाँग नहीं सकता—इसमें गला जो फँस जाता है। मैं सोचती हूँ कि शायद इसीलिए इसमें इतने सारे सिर हैं!
वे निकल तो आती हैं, लेकिन फिर यह डिजाइन उनकी गरदन फाँस लेती है और उन्हें उलटा कर देती है और उनकी आँखों को सफेद कर देती है!
यदि उन सिरों को ढक दिया जाता या यहाँ से हटा दिया जाता तो इतना बुरा नहीं लगता यह।
मुझे लगता है कि वह और दिन के समय बाहर आती है! और मैं आपको अकेले में यह बता रही हूँ, मैंने उसे देखा है!
मैं अपनी सारी खिड़कियों से देख सकती हूँ।
मुझे पता है, यह वही औरत होती है, क्योंकि वह हमेशा ही रेंगती होती है, और अधिकतर औरतें दिन के उजाले में नहीं रेंगती—
मैं उसे उस लंबी छायादार पगडंडी में देखती हूँ; वह इधर से उधर रेंगती दिखाई देती है। मैं उसे अंगूर के उन अँधेरे कुंजों में देखती हूँ; वहाँ वह सारे बगीचे में रेंगती फिरती है।
मैं उसे पेड़ों के नीचे उस लंबी सड़क पर रेंगता देखती हूँ और जब कोई गाड़ी आती है तो वह काली बेरी की लताओं के नीचे छिप जाती है।
मैं उसे बिलकुल दोष नहीं देती। दिन के उजाले में रेंगते हुए पकड़े जाने से सचमुच बहुत बेइज्जती हो जाएगी!
मैं तो जब दिन में रेंगती हूँ तो हमेशा दरवाजे में ताला लगा देती हूँ। रात में तो मैं ऐसा कर नहीं सकती, क्योंकि जॉन को एकदम शक हो जाएगा। और जॉन भी अब इतने असामान्य से हो गए हैं कि मैं उन्हें तंग नहीं करना चाहती। काश, वह दूसरा कमरा ले लेते! और फिर, मैं नहीं चाहती कि मेरे सिवाय कोई और उस औरत को रात में बाहर देखे।

कभी-कभी मैं सोचकर हैरान होती हूँ कि क्या मैं उसे एक साथ सभी खिड़कियों से देख सकती हूँ?
लेकिन मैं चाहे कितनी भी फुरती से क्यों न घूम जाऊँ, मैं एक बार में केवल एक ही खिड़की के बाहर देख सकती हूँ।
और हालाँकि मैं उसे हर समय देखती हूँ, लेकिन क्या पता वह मेरे घूमने से भी ज्यादा फुरती से रेंग जाती हो! कभी-कभी मैंने उसे दूर खुले प्रदेश में देखा है, जहाँ वह इतनी तेजी से रेंग रही होती है, जैसे हवा में किसी बादल की छाया हो!
काश, वह ऊपरवाली डिजाइन नीचेवाली से अलग की जा सकती! मैं यही करना चाहती हूँ, थोड़ा-थोड़ा करके।

मुझे एक और मजेदार चीज हाथ लगी है, लेकिन इस बार मैं नहीं बताऊँगी! लोगों पर बहुत ज्यादा भरोसा करना अच्छा नहीं होता।

इस कागज को उखाड़ने के लिए अब केवल दो दिन और बचे हैं और मेरा विश्वास है कि जॉन भी अब इस पर गौर करने लगे हैं। मुझे उनकी आँखों का वह भाव अच्छा नहीं लगता। और मैंने सुना था, वह जेनी से मेरी हालत के बारे में एक डॉक्टर की तरह ढेरों सवाल कर रहे थे। जेनी ने भी अच्छी-खासी रिपोर्ट दी थी उन्हें।

उसने उन्हें बताया था कि मैं दिन में खूब सोती हूँ।

जॉन को पता है कि रात में मैं बहुत अच्छी नींद नहीं सो पाती, चाहे मैं इतनी शांत रहती हूँ!

उन्होंने मुझसे तरह-तरह के सवाल पूछे थे और बहुत प्यार व मेहरबानी का दिखावा किया था।

जैसे मैं उनके मन की बात समझ नहीं रही थी!

फिर भी, मुझे इस पर आश्चर्य नहीं है कि वह इस तरह से व्यवहार कर रहे हैं, क्योंकि वह भी इस कागज के नीचे तीन महीने से सोते आ रहे हैं।

यह बस मेरी रुचि की बात है, लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि जॉन और जेनी पर भी इसका असर हो चुका है।

वाह! आज आखिरी दिन है, लेकिन यह काफी है। जॉन को रात में बाहर रहना है और वह आज शाम से पहले बाहर नहीं निकलेंगे।

जेनी मेरे साथ सोना चाहती थी, बहुत काइयाँ है; लेकिन मैंने उससे कह दिया कि मैं एक रात तो बिलकुल अकेले में अच्छी तरह से आराम करना चाहूँगी।

खूब चालाकी से काम लिया मैंने, क्योंकि मैं बिलकुल अकेली नहीं थी! जैसे ही चाँदनी छिटकी और उस नाचीज ने रेंगना व डिजाइन को हिलाना शुरू किया, मैं उठ गई और उसकी मदद के लिए दौड़ पड़ी।

मैंने खींचा, उसने हिलाया, मैंने हिलाया और उसने खींचा—और सुबह होने से पहले हम गजों दीवारी कागज फाड़ चुकी थीं।

हमने अपने सिर की ऊँचाई तक एक पट्टी आधे कमरे में फाड़ दी थी। और फिर जब धूप आ गई और वह भयंकर डिजाइन मुझपर हँसने लगी तो मैंने ऐलान कर दिया कि मैं आज इसे खत्म करके रहूँगी!

हम कल जा रहे हैं। ये लोग मेरा सारा फरनीचर वापस नीचे ले जा रहे हैं, ताकि जो चीज पहले जहाँ थी, वहाँ पहुँच जाए।

जेनी भौंचक होकर दीवार को देखने लगी, लेकिन मैंने खुशी-खुशी उसे बता दिया कि मैंने उस गंदी चीज से घृणा होने के कारण ऐसा किया है।

वह हँसने लगी और बोली कि उसे खुद ऐसा करने में कोई ऐतराज नहीं होता; लेकिन मुझे अपने आपको थकाना नहीं चाहिए।

उस समय उसने अपने मन की बात कैसे उगल दी थी। लेकिन मैं यहाँ हूँ और मेरे सिवाय और कोई भी व्यक्ति इस कागज को नहीं छू सकता—जीते-जी तो बिलकुल नहीं!

उसने मुझे कमरे से बाहर ले जाने की कोशिश की—यह बहुत स्पष्ट था! लेकिन मैंने कह दिया कि अब यह इतना शांत व खाली और साफ था कि मैं सचमुच यहाँ फिर लेटूँगी और भरपूर नींद लूँगी। मैंने उससे यह भी कह दिया कि वह मुझे खाने के लिए भी न जगाए—जब मैं जाग जाऊँगी तो उसे बुला लूँगी।

इसलिए अभी वह चली गई है और नौकर भी चले गए हैं, और सारा सामान भी चला गया है, और यहाँ फर्श में जड़े उस बड़े से पलंग के सिवाय और कुछ भी नहीं रह गया है। इस पलंग पर किरमिच का वही गद्दा है, जो हमें

यहाँ आने पर इस पर बिछा मिला था।
आज रात हम नीचेवाले कमरे में सोएँगे और कल नाव पकड़कर घर चले जाएँगे।
मुझे कमरे में बहुत मजा आ रहा है। अब यह फिर से खाली-खाली हो गया है।
उन बच्चों ने क्या जमकर फाड़ना-फूड़ना किया है! इस पलंग को भी अच्छी तरह से कुतरा गया है! लेकिन मुझे तो अपने काम में जुटना होगा।
मैंने दरवाजे में ताला लगा दिया है और चाबी नीचे सामनेवाली पगडंडी में फेंक दी है।
मैं बाहर नहीं जाना चाहती, और मैं चाहती हूँ कि जॉन के यहाँ आने तक कोई अंदर न आए।
मैं जॉन को चकित करना चाहती हूँ।

यहाँ मेरे पास एक रस्सी है, जो जेनी को भी नहीं दिखाई दी थी। अगर वह औरत बाहर निकली और उसने भागने की कोशिश की तो मैं उसे बाँध तो सकूँगी!
लेकिन मैं यह तो भूल ही गई कि यहाँ खड़े होने को तो कोई चीज है नहीं, तो मैं बहुत दूर तक नहीं पहुँच पाऊँगी!
यह पलंग तो हिलेगा ही नहीं!

मैंने इसे उठाने और खिसकाने की इतनी कोशिश की कि मैं लँगड़ाने लगी और फिर मुझे इतना गुस्सा आया कि मैंने इसके एक कोने का एक छोटा सा टुकड़ा चबा डाला; लेकिन इससे मेरे दाँत ही दुख गए।
फिर मैं फर्श पर खड़ी होकर जहाँ तक पहुँच सकती थी, वहाँ-वहाँ तक सारा कागज मैंने उखाड़ दिया। यह बड़ा कसकर चिपका हुआ है और डिजाइन को इसमें मजा आ रहा है! वे सारे-के-सारे कटे हुए सिर और गोल-गोल आँखें और लहाराती फफूँदियाँ तो बस उपहास में चीख रही हैं!
मुझे इतना गुस्सा आ रहा है कि मैं हताशा में कुछ भी कर बैठूँगी। खिड़की से छलाँग लगा दूँ तो अच्छा रहेगा, लेकिन ये सलाखें इतनी मजबूत हैं कि मैं इसकी तो कोशिश भी नहीं कर सकती।

और फिर मैं यह करूँगी भी नहीं, बिलकुल नहीं। मैं अच्छी तरह से जानती हूँ कि ऐसा कोई भी कदम ठीक नहीं होगा और इसका गलत मतलब भी निकाला जा सकता है।
मुझे तो खिड़कियों के बाहर देखना भी अच्छा नहीं लगता। वहाँ बहुत सारी वैसी ही औरतें रेंगती होती हैं और वे बहुत तेजी से रेंगती हैं।
मैं यह सोचकर हैरान हूँ कि क्या वे सारी औरतें भी मेरी ही तरह उस दीवारी कागज से निकलती हैं?
लेकिन अब मैं अपनी इस अच्छी तरह से छिपाई गई रस्सी से सुरक्षित बँधी हूँ, आप मुझे वहाँ सड़क पर नहीं ले जा सकते!
मैं सोचती हूँ कि जब रात हो जाएगी तो मुझे उस डिजाइन के पीछे वापस जाना होगा, और यह मुश्किल होगा!
बाहर इस बड़े से कमरे में आकर अपनी मरजी से कहीं भी रेंगते फिरना कितना अच्छा लगता है!
मैं बाहर नहीं जाना चाहती। जेनी कहेगी, तब भी मैं बाहर नहीं निकलूँगी; क्योंकि बाहर आपको जमीन पर रेंगना पड़ता है और वहाँ हर चीज पीली न होकर हरी है।

लेकिन यहाँ मैं आसानी से फर्श पर रेंग सकती हूँ और मेरा कंधा दीवार के चारों तरफ बने उस लंबे धब्बे में अच्छी तरह से समा जाता है, जिससे मैं अपना रास्ता भी नहीं भूल सकती।
कोई फायदा नहीं, जवाँ मर्द, आप इसे नहीं खोल सकते!
कैसे पुकार रहे हैं, कैसे थपथपा रहे हैं!
अब वह चिल्लाकर जेनी से कुल्हाड़ी माँगा रहे हैं।

बहुत शर्म की बात होगी उस खूबसूरत दरवाजे को तोड़ना!
''जॉन, मेरी जान!'' मैंने बहुत प्यार से कहा, ''चाबी सामनेवाली सीढ़ियों के पास, एक केले के पत्ते के नीचे पड़ी है।''
यह सुनकर वह कुछ क्षणों के लिए खामोश हो गए।
फिर वह बहुत ही शांत स्वर में बोले, ''दरवाजा खोलो, जानेमन!''
''मैं नहीं खोल सकती।'' मैंने कहा, ''चाबी तो नीचे सामनेवाले दरवाजे के पास एक केले के पत्ते के नीचे है।''
और फिर मैंने इसी बात को कई बार, बहुत प्यार से और धीरे-धीरे कहा, और मैंने इतनी बार यह बात कही कि उन्हें वहाँ जाकर देखना ही पड़ा। उन्हें सचमुच चाबी मिल गई और वह अंदर आ गए। वह दरवाजे के पास ही रुक गए।
''क्या बात है?'' वह चिल्लाए, ''हे भगवान्! यह तुम क्या कर रही हो?''
लेकिन मैं वैसे ही रेंगती रही, बस, मैंने पीछे मुँह करके उन्हें देखा जरूर।
''आखिरकार मैं बाहर निकल ही आई!'' मैंने कहा, ''तुम्हारे और जेनी के बावजूद। और मैंने ज्यादातर कागज उखाड़ दिया है, इसलिए आप मुझे वापस वहाँ डाल भी नहीं सकते!''
अरे, वह बेहोश क्यों हो गए? लेकिन वह बेहोश हो ही गए और वह भी मेरे रास्ते में दीवार के पास! और मुझे हर बार उनके ऊपर से होकर रेंगना पड़ रहा था!

❑

आतिशदान

-हैमलिन गार्लैंड

जब स्टीवन थर्बर ने वेट कूली के अपने फार्म को बेचकर ब्लफ साइडिंग जाने का फैसला किया था तो उसका किसी महान् सामाजिक आंदोलन के साथ चलने का कोई इरादा नहीं था। उसने तो बस अपनी पत्नी और बेटी की हठ के आगे झुकते हुए ऐसा किया था। दरअसल माँ-बेटी को घाट के उस छोटे से गाँव में आराम की जिंदगी और सामाजिक हैसियत की संभावना दिखाई दे रही थी।

औरतों के लिए यह एकाकी जगह ही थी—स्टीवन यह तो खुलकर स्वीकार करता था। लगभग पाँच सौ फीट ऊँची एक लंबी पर्वतमाला ने उन्हें रेल-मार्ग से काटा हुआ था और सारे युवा लोग जैसी तेजी से बड़े हो रहे थे वैसी ही तेजी से उस जगह को छोड़ते जा रहे थे। वहाँ की सड़कें बहुत खराब थीं और वहाँ कोई आता भी नहीं था।

इसलिए आखिर में उसने एक ठंडी साँस छोड़ते हुए कह दिया था, ''ठीक है, बच्चों की माँ, हम चलेंगे; लेकिन मैं यह तो कहूँगा कि मुझे फार्म छोड़ना बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा। मैं नहीं जानता कि आखिर खुद मैं क्या करूँगा!''

उसके कुछ ही दिन बाद उसने वह जगह बेच दी थी। उसकी पत्नी के लिए तो यह बहुत बड़ी रकम थी। इन पैसों से उसने एक 'बाजू का मकान' खरीद लिया था, जो बेआड़ और कोनेदार था। यह मकान ब्लफ साइडिंग की एक नई गली में पचास फीट में बना था। इस पर नीला और गुलाबी रंग हो रहा था। तख्तोंवाला मार्ग इसके नजदीक होने के कारण यह भद्दा लगता था। और यहाँ पर झाड़ू के डंडे जितने ऊँचे आधा दर्जन देवदार थे, जो धूप और हवा से इसका बचाव करते थे।

''बैठक इतनी छोटी है कि वहाँ कंपनी तो क्या, परिवार के लोग भी नहीं समा सकते,'' स्टीवन ने आह भरते हुए कहा था, ''लेकिन अगर तुम माँ-बेटी को यह ठीक लगता है तो मेरे लिए भी ठीक है।''

उस समय वह इसे लेकर काफी खुश नजर आ रहा था; लेकिन जब वह वहाँ से वापस आया तो उसे वह पुराना फार्म इतना अधिक आरामदेह, इतना अधिक घर जैसा लगा कि उसका दिल बैठ गया था। इमारतों की शान और लंबाई-चौड़ाई ने उसे आनंद व अभिमान और दु:ख से अभिभूत कर दिया। बाड़े का एक-एक पेड़ उसका लगाया हुआ था। उनमें से कुछ पेड़ तो ऐसे थे कि जब वह उनकी जड़ों को जमीन में जमा रहा था तो उस समय मार्था यानी उसका पहला प्यार और उसकी पहली पत्नी उसके पास खड़ी होकर देख रही थी। अब यही पेड़ छत से ऊपर, बहुत ऊपर निकल रहे थे, जैसे निष्ठावान् और मजबूत संरक्षक सिपाही हों! उनकी डालियाँ ऐसी हो गई थीं कि गरमियों में आशीर्वाद में उठे हाथों की तरह और जाड़ों में पहरा देती बरछी की नोकों की तरह दिखती थी—यहाँ तक कि बगीचे में लगे फ्लोक्स और लाइलैक फूलों के पौधे भी उन पौधों के वंशज थे, जिन्हें उसके पहले प्यार ने रोपा था।

और मकान! उस छोटी सी कस्बाई कुटिया के मुकाबले कितना लंबा-चौड़ा व उदार और घर जैसा दिखता था यह। इस मकान को उसने मार्था के लिए बड़े गृह युद्ध के बाद आई संपन्नता के दौर में बनाया था और यह आज भी वेट कूली का सबसे भव्य आवास था। यह एक बड़ा, चौकोर तख्तों के ढाँचेवाला मकान था, जो न्यू इंग्लैंड शैली में बना था और इसकी बैठक में पुराने ढंग का एक अच्छा सा आतिशदान था। जहाँ तक उसकी जानकारी थी, बस्ती का इकलौता आतिशदान था यह।

इस विचित्र नियामत, इस अलबेली शाहखर्ची ने थर्बर आवास को पूरे प्रदेश में मशहूर कर दिया था। अगर यह आतिशदान पुराने जमाने से परिवार में चला आ रहा होता तो इसे लोग माफ कर देते; लेकिन किसी नए मकान में आतिशदान लगाने को लोग मूर्खता ही मानते थे और उनके लिए यह किसी पागलपन से कम नहीं था। फिर भी मीन-मेख निकालनेवाले यही सब लोग बार-बार इसकी गरमी में अपने टखने सेंकने आते और जवान लोग एक स्वर से इसकी प्रशंसा करते थे। जाड़ों की रातों में ये लोग इसकी आग के आगे सानंद जमा होते और इसकी सुखद चमक में कई जीवंत नृत्यों के साथ एक अविस्मरणीय आनंदवाली रात का समापन होता था।

मार्था को यह बताना अच्छा लगता था कि इसके ढाँचे को उसके दादा ने तैयार किया था और यह मेन राज्य के पुराने फार्म हाउस से आया था। उसे इस आतिशदान से प्यार था, क्योंकि इसके साथ बहुत सी यादें जुड़ी थीं और इसी प्यार के चलते वह इसे किटरेज फार्महाउस की इसकी जगह से पश्चिम में ले आई थी। उसके लिए यह एक तरह का पवित्र स्मारक या परिवार का प्रतीकचिह्न था। इसके साथ ही वह लोहे का पुराना सींखचा, चिमटा और बेलचा भी लेकर आई थी। यही नहीं, उसने केतली टाँगनेवाली पुरानी केन भी जमाकर अपने आतिशदान को पूरा कर दिया था। यह क्रेन भी मार्था को आतिशदान के ढाँचे की तरह प्यारी थी।

अब स्टीवन के हाथ से उसका यह खजाना निकलने वाला था। इसलिए उसे याद आ रहा था कि जब कारीगर बलूत की पुरानी तख्ती को उसकी जगह पर जमा रहे थे तो मार्था कितनी खुश थी! उसने उस पार्टी को भी याद किया, जो मार्था ने आतिशदान में पहली बार आग जलने की खुशी में दी थी। उसे यह याद करके बहुत रोमांच हो रहा था कि जब मार्था ने छीलन में आग लगाई थी तो वह कितनी खूबसूरत दिख रही थी! तब मार्था ने 'द हैंगिंग ऑफ द क्रेन' से एक छोटा सा पद भी गया था। वह प्रसन्न थी और स्टीवन का विश्वास था कि वह सुखी भी थी। लेकिन जब वह चली गई थी तो स्टीवन को यह अहसास होने लगा था कि वह सचमुच पश्चिम में कभी अपनी जड़ें नहीं जमा पाई थी! और अब जब वह बूढ़ा हो रहा था तो वह खुद अपनी जवानी के वतन में अधिक-से-अधिक रहने लगा था। अपने खयालों में वह अकसर न्यू हैंपशिर की अपनी पथरीली तलहटी में लौट जाताथा।

हाँ, उसके लिए चूल्हे से अपने दिल के तारों को अलग करना सबसे कठिन था, क्योंकि हालाँकि सेरिला ने अपने दिल से सबकुछ फिर से व्यवस्थित किया और सजाया था, फिर भी मार्था का आतिशदान नहीं बदला था।

''मैं अधिकतर बातों में तुम्हें तुम्हारी मरजी करने दूँगा, सेरिला, लेकिन मैं चाहता हूँ कि यह कमरा वैसा ही दिखे जैसा अब दिख रहा है, ठीक वैसा ही जैसा वह छोड़ गई है।''

वहाँ से निकलने का समय निकट आया तो स्टीवन बदहाल रसोई से चुपचाप निकल गया और आग के सामने उदास बैठकर सोचने लगा। वह 'वैनड्यू' के लिए राजी हो गया था और इस बात के लिए तैयार था कि उनके पास जितना भी फरनीचर था, वह सब सेरिला बेच दे। लेकिन वह मार्था की कुछ चीजों को बेचने के हक में नहीं था। और आतिशदान के पास लोहे और पीतल की चीजों की चूँकि कोई जरूरत नहीं, इसलिए उन्हें वह यादगार के रूप में पैक करके खाना चाहताथा।

नया मालिक पहली तारीख को कब्जा लेने आ रहा था, इसलिए मार्च महीने के आखिरी दिन (जो कि एक ठंडा, धूसर दिन था) अपने सभी पशुओं और उनसे भी बड़ी संख्या में अपने उपकरणों को छोड़कर स्टीवन थर्बर ने अपने कूली फार्म पर करीब चालीस साल की जिंदगी के बाद भारी मन से उन पेड़ों से विदा ली, जिन्हें उसने लगाया था; उन खलिहानों से विदा ली, जिन्हें उसने बनाया था और उस मकान से विदा ली, जो मार्था का हुआ करता था। चलने से पहले आखिरी काम उसने यह किया कि वह उस खाली बैठक में गया, जहाँ उसकी आखिरी आग चूल्हे में जल रही थी।

''जो भी हो, मैं कमरे को रोशन और गरम छोड़ना चाहता हूँ।'' उसने अपनी पत्नी और बेटी से कहा, ''मैं उसे बिलकुल ठंडे और अँधेरे कमरे के रूप में नहीं याद रखना चाहता।''

''हे भगवान्! आप तो ऐसे बात कर रहे हैं जैसे हजार मील दूर जा रहे हों!'' उसकी पत्नी ने कहा था।

''मुझे उम्मीद नहीं कि मैं उस मकान को अंदर से फिर कभी देख पाऊँगा।'' उसने कहा। उसमें इतनी गहरी पीड़ा थी, जिसे समझना उसकी पत्नी के लिए संभव नहीं था।

जब वे कस्बे वाले मकान में रहने पहुँचे तो वह जैसे और भी छोटा हो गया। लेकिन सेरिला और कैरिस इसके छोटेपन पर खुश थीं और इसके 'फायदों' का खूब खुलकर गुणगान कर रही थीं।

''यह बेशक छोटा है, लेकिन बड़े मकान का भी हमें क्या करना है? हमें उतना ही कम काम करना होगा। और फिर, यहाँ रसोई में ही पंप है और भट्ठी है, और गुसलखाना है, और सबकुछ कितना साफ-सुथरा है—कहीं कोई दरार या अँधेरा कोना नहीं है।''

''मुझे तो अँधेरे कोने एक तरह से अच्छे लगते हैं।'' स्टीवन ने कहा। उसे इसमें घरेलूपन की कमी महसूस हो रही थी; लेकिन और किसी तरह से वह इस बात को कह नहीं सकता था।

पहले महीने तो वह फार्म से चारा और दूसरी जरूरी चीजें लाने में लगा रहा। ''कसम से, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुझे अपनी पूरी जिंदगी में उस पहाड़ी को इतनी बार पार करना पड़ेगा।'' उसने अपने घरवालों से कहा था। दरअसल, वह जब भी वहाँ तक आता जाता था तो और भी दु:खी हो जाता था। आखिर में उसने भाड़े के आदमी को इस काम पर लगा दिया था। ''मैं बार-बार वहाँ नहीं जा सकता।'' उसने कटुता से कहा था, ''मुझे यह देखकर बहुत दु:ख होता है कि वह लीचड़ उस जगह को कैसे गंदा कर रहा है! उसने बगीचे की सफाई नहीं की है और वह बाग के एक हिस्से में बाड़ लगाकर वहाँ अपने सुअरों को रखना चाहताहै।''

उसकी नजर में तो यह किसी वेदी को अपवित्र करने के बराबर था, लेकिन उसने इस बारे में और कुछ नहीं कहा। मई महीने में उसने अपना काफी समय सात गुणा चार वाले अपने छोटे से बाग और अपने छोटे से लाल खलिहान की देखभाल में बिताया। यह सब उसके लिए एक मजाक की तरह था, जैसे वह किसान होने का स्वाँग कर रहा हो! ''यह काम करके तो मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं दोबारा से सठिया गया हूँ और मेरी सब्जीवाली बाड़ी—अगर बिल्ली घूस जाए तो वह इसे सारा-का-सारा चट कर जाए, इतनी छोटी है यह कि उसमें पैर रखना भी अच्छा नहीं लगता मुझे...''

जून तक उसकी एक दिनचर्या बन गई।

''तुम्हें बस लेटकर आराम करना चाहिए।'' हाइरैम फॉक्स ने कहा, जो उसी की तरह एक बुजुर्ग किसान था, ''बाकी के हम सब यही कर रहे हैं और जान-बूझकर कर रहे हैं। कस्बे में हम जैसे 'थके-हारे किसान' भरे पड़े हैं।''

और यह सच ही था। स्टीवन ने जब अपने पड़ोसियों को समझना शुरू किया तो उसे पता चला कि उसके आस-पास उसी के तरह के बीस से भी ज्यादा बूढ़े लोग थे, जिन्हें कुल्हाड़ी, क्रेडल और हँसिया चलाना आता था। ये वे अग्रज लोग थे, जिन्होंने पहाड़ियों के विशाल बलूतों को उखाड़ा और चरागाह की मिट्टी को फाड़ कर क्यारियाँ बनाई थीं, ताकि उनमें गेहूँ बोया जा सके। ये वे लोग थे, जिनकी मांसपेशियाँ कभी इस्पात की तरह हुआ करती थीं और जिनके सीनों में अभी भी योद्धाओं का दिल था। वे सब अब बूढ़े हो चुके थे, बूढ़े और मौसम की मार खाए! वे भारी और सुस्त हो चुके थे और अपने आराम को बहादुरी से ले रहे थे, जबकि काम में पिली उनकी औरतें अपने-अपने घरों में अपनी ही झोंक में जुटी हुई थीं। वे गरमियों के लंबे दिन काटने के लिए मेहनत-मशक्कत कर

रही थीं और जाड़ों की रातों को छोटा करने के लिए जल्दी उठ रही थीं। ये लोग अधिकतर एकाकी दंपतियों की तरह रह रहे थे; क्योंकि उनके बेटे-बेटियाँ, घाटी में जिंदगी की सुस्त रफ्तार और अवसरों की कमी के कारण शहर या सूदूर पश्चिम में चले गए थे।

स्टीवन भी अनजाने में ठीक इसी दौर से गुजर रहा था और इन्हीं समस्याओं से जूझ रहा था। बस वह सुबह जल्दी उठने की आदत नहीं छोड़ पाया था। रोज सुबह जागने के बाद वह इतनी देर तक और इतनी खामोशी से पड़ा रहता था कि उसकी हड्डियाँ दुखने लग जाती थीं, और जब उससे और सहन नहीं होता था तो वह चुपचाप बिस्तर से निकलकर आग जलाता था और अपनी पत्नी के लिए चाय की केतली चढ़ा देता था। फिर वह बालटी में पानी भरने के बाद अपने घोड़े को दाना देने चला जाता था। उस पर भी जब वह घर लौटता था तो अकसर केतली का पानी खौलता होता था और सब सोए होते थे। कभी-कभी वह अपनी छोटी सी सीधी गाय को दुहने चला जाता था और फिर उसे चराने भी ले जाता था, और तब भी नाश्ते का दूर-दूर तक पता नहीं होता था। इस सबसे उसे बहुत निराशा होती थी; क्योंकि कॉफी पी लेने के बाद भी उसके सामने एक बहुत बड़ा दिन होता था।

नाश्ते के बाद उससे जितना काम हो सकता था, वह करता था। वह घोड़े को पानी पिलाता और अपनी दस मुर्गियों को दाना डालता था और फिर—बेकार! न कुछ करना, न किसी काम की देखरेख करना, न किसी पर हुक्म चलाना और न ही आस-पास किसी से बात करना; क्योंकि माँ-बेटी अपने ही लफड़ों में उलझी रहती थीं और उसी में सुखी दिखती थीं।

इन्हीं सब कारणों से और दूसरे समय काटनेवालों की तरह उसकी भी आदत बन गई कि वह यह देखने के लिए बाहर निकल जाता था कि कहाँ क्या चल रहा है।

शिकागो की डाक दस बजे आती थी। उसी में सुबह के अखबार आते थे और डाकखाने में धीमी चाल और सफेद दाढ़ीवाले आदमियों की भीड़ लग जाती थी, जो अपनी काहिल हड्डियों और गठियाग्रस्त जोड़ों के बारे में हँसते हुए एक-दूसरे को कोसते थे।

''मुझे तो इस तरह शहर में आवारागर्दी करते शर्म आएगी, जैसे तुम लोग करते हो,'' पिल्चर कहता, ''यहाँ मक्का बोने का काम पूरे जोर-शोर से चल रहा है। मौसम भी खूबसूरत है और तुम लोग हो कि यहाँ शहर में मँडरा रहे हो। मैं शर्त लगा सकता हूँ कि तुममें से एक ने भी आज सुबह सूरज निकलने के बहुत बाद तक नाश्ता नहीं किया था।''

या एक बार फिर हाइरैम कहता, ''हैलो स्टीव, आज सुबह तुम अपनी हंसिया लेकर चरागाह में क्यों नहीं गए? तिमोथी तो बस 'पर्पल' में है।''

फिर स्टीवन जवाब देता, ''याद है, जब मैंने तुम्हें अपने उत्तर वाले खेत में भूसा रखने में अपनी मदद के लिए काम पर रखा था। कसम से, जंगल का कैसा गरम इलाका था वह! उस दिन मैंने तुम्हें एक झाड़ी के नीचे लिटा दिया था।''

''हाँ, तुमने ऐसा ही किया था! अब मुझे याद आता है, तुम उस जंगली बेरी के नीचे चित पड़े ऐसे हाँफ रहे थे जैसे गरम लट्ठे पर लेटी छिपकली हाँफती है!''

इस तरह से वे लोग मौसमों के आने-जाने की बातें करते और अपनी कल्पना में खेत के सारे काम निपटाते थे। वे दिल खोलकर उस बारे में डींगें हाँकते थे कि वे इन गुजरे दिनों में क्या-क्या कर लेते थे, जब जमीन नई थी और वे सभी जवान थे। ऐसे में हरेक आदमी दूसरे की बातों को बड़े धैर्य से सुनता था, क्योंकि उनके किस्सों में गलतबयानी नहीं होती थी। वे लोग उन दिनों में सचमुच महाबली होते थे।

जब उनके ये आधे मजाकिया, आधे गंभीर अभिवादन खत्म हो जाते थे तो वे बड़े जोश में सुअर के मांस और मलाई की कीमतों के बारे में चर्चा करने लगते थे या फिर एक-दूसरे के राजनीतिक पूर्वग्रहों पर हलके अंदाज में (और शिष्ट सम्मान के साथ) टिप्पणी कर देते थे। और जब डाक बँट चुकती थी तो सभी लोग अपना-अपना अखबार बगल में दबाकर और खाने के लिए कबाब का पैकिट लेकर धीरे-धीरे घर की ओर चल देते थे। वे यह सोचकर जाते थे कि अपनी पसंद की खिड़की के नीचे एक आरामकुरसी पर बैठेंगे, जहाँ खुशनुमा रोशनी पड़ती है। वे मन बना लेते थे कि दूर चल रही लड़ाइयों और बाहरी दुनिया की लपटों के शोर की खबरों का आनंद लेंगे।

स्टीवन का सुखद कोना बैठक में पश्चिमी खिड़की के पास था और उसकी कुरसी अखरोट की लकड़ी और बाँस की बनी थीं। यह एक गहरी और आरामदेह सादी-सी कुरसी थी। यह वही कुरसी थी, जिसे उसने मार्था के लिए तब खरीदा था जब वह पहली बार बीमार पड़ी थी। इस कुरसी पर कोई और नहीं बैठ सकता था। इस मामले में वह सख्त था और उसकी यह भी जिद रहती थी कि वह एक छोटी मेज बस अपने लिए रखेगा, जिस पर उसके अखबार और उसका चश्मा हमेशा रखा रहेगा, जिनका इस्तेमाल वह बाग या बाहर से लौटते ही कर सके।

उसे अखबार पढ़ने में आम तौर पर एक घंटा लगता था; लेकिन खाने में फिर भी कोई चालीस मिनट बचे रहते थे। अधिकतर बुजुर्ग किसान इस समय झपकी लेते थे, लेकिन स्टीवन दिन के बीच में कभी नहीं सो पाता था। इसलिए वह निकलकर बाग में टहलने लगता था। वह देर तक पौधों को दुलराता रहता था और फिर अपने बाड़े में लगे आलू की कलियों और चुकंदर से बातें करने लगता था। ये चालीस मिनट उसके लिए कई घंटों के बराबर होते थे, क्योंकि उसे भूख बहुत तेज लगती थी।

अगर दिन सुहावना होता था तो वह अपने घोड़े को जोतकर देहात की गलियों के चक्कर लगाता था। सेरिला को कभी इतनी फुरसत नहीं होती थी कि वह उसके साथ जाती और कैरिस इसे 'सुस्त' मानती थी। इसलिए वह अकसर अपने किसी यार को साथ ले जाता था और वे एक खेत से दूसरे खेत घूमते फिरते थे और फसलों की प्रगति का जायजा लेते हुए इस अंतहीन चर्चा में लगे रहते थे कि जर्मन लोग कैसे 'खब्बूपन' से अपना काम करते हैं!

इस तरह की सैर के बाद वह आम तौर पर घर में ठोंका-ठाकी करता रहता था और अखबार पढ़ता रहता था और जब पढ़ते-पढ़ते उसकी आँखें दुखने लगती थीं तो थक-हारकर दु:खी मन से बैठ बीते दिनों के बारे में सोचने लगता था। बीच-बीच में वह उदास और परेशान दृष्टि डालकर भविष्य में भी देख लेता था। वह हैरान होकर सोचने लगता था कि इस सबका, धरती पर इस जीवन का क्या अर्थ है! वह स्वभाव से गंभीर और कोमल व मधुर व उदार जो था। उसमें एक कवि की आत्मा थी। वह अतीत के इन सपनों के जादू से प्रीति भी रखता था और भयभीत भी था। जब रातें लंबी होने लगीं और ठंड गहराने लगी तो वह सचमुच उस पुराने आतिशदान के लिए तड़पने लगा। वह उन दिनों के सुख के बारे में सोचने लगा। जब वह अनाज फटकने या लट्ठे चीरने के बाद भीगा और ठंड में सिकुड़ा घर आता था तो उसे उस पुराने लट्ठोंवाले घर में आतिशदान में आग जलती मिलती थी। वह बड़ी बारीकी से उन दिनों को अपनी यादों में फिर से जीता था, जब केतली टाँगने की क्रेन को नया-नया टाँगा गया था और मार्था उसके पास अंगारों के आलोक में बैठी थी। मार्था का हाथ उसके हाथ में था और वे अपने उन दो नन्हें बच्चों के बारे में प्यार से बातें कर रहे थे, जो बोलने की उम्र से पहले ही मर गए थे।

वह मार्था की बीमारी को याद करता और उसकी मौत के बाद पुराने घर के अकेलेपन के बारे में सोचकर काँप जाता। फिर सेरिला आ गई थी, और बाद में दो तंदुरुस्त बेटे। वे उस पुराने आतिदान को कितना पसंद करते थे और नन्हे-नन्हे पिल्लों की तरह उसकी आग ताप कर कितने संतुष्ट रहते थे! वे अपने बाप के पैरों से लिपटकर भालुओं

की और कहानियाँ सुनाने को कहते थे। उस बीते समय के जाड़े आतिशदान की गरमी में गरमियों जैसे सुखद हो जाते थे और बाहर चिंघाड़ती शाखाएँ उसके दिल को ठिठुरा नहीं पाती थीं।

जब वह ऐसे किसी सपने से जागता और सेरिला की बैठक में नजर घुमाता था तो उसे यह सोचकर हैरानी होती थी कि मार्था यह सब देखती तो क्या कहती! वह इस बात पर विचार करने लगा कि आतिशदान उसके लिए कितना अहम होगा! यहाँ तक कि उसने चुपके-चुपके पश्चिम की दोनों खिड़कियों के बीच की जगह भी नाप डाली कि क्या वहाँ आतिशदान लगाया जा सकता है। लेकिन उन खिड़कियों के बीच इतनी कम जगह थी कि वहाँ पत्थर के कोयलोंवाली अँगीठी भर रखी जा सकती थी, और इससे उसे चिढ़ थी।

कभी-कभी रात को जब उसकी पत्नी सोचती थी कि वह अंध रहा है, तब वह कूली के उस पुराने मकान में जलते लट्ठों को देखता होता था; तब उसके मन में एक कमजोर उदासी होती थी और उसकी आँखें आँसुओं से भीगी होती थीं। तो फिर यह चीज क्या थी, जो उसकी जिंदगी से निकल गई थी? यहाँ वह एक नितांत आरामदेह कमरे में बैठा था, और उसके पास घोड़ा था और गाड़ी थी और उसके पास खाने की कोई कमी नहीं, न ही उसे कोई चिंता थी—और भी अतीत अपनी सारी मशक्कत के साथ उसे इस तरह बुलाता था कि इसके बारे में सोचकर ही उसका गला दुखने लगता था। काश, वह उस सबको फिर से जी पाता!

उन प्यारे दिनों में हवा भयंकर होती थी और जाड़ों के जंगल सुनसान होते थे; लेकिन मार्था का चेहरा किसी सितारें-सा चमकता था, और पुराना, अतिशदान हर रात उसके बच्चों के सामने एक कविता सुनाता था। काम उन दिनों कठिन था; किंतु विश्राम मधुर था। भूख तेज थी; किंतु खाने के बाद कोई बीमारी नहीं लगतीथी।

वह अपने बच्चों की माँ सेरिला के प्रति वफादार था; किंतु मार्था उसके जवानी के दिनों की पत्नी थी, जिसे पूरी तौर पर उसके दिल ने चुना था—और मार्था का आतिशदान प्रतिनिधि था उसका, जो उसकी जिंदगी में सबसे अधिक मधुर और सबसे अधिक कवितामय था। वह एक वेदी थी। उसके आस-पास वे तब जमा होते थे, जब अनाज को कोठरी में रखा जा चुकता था और मवेशियों को रात भर के लिए बंद किया जा चुकता था। इसकी रोशनी में वे अनाज की कुटाई (भूसी अलग करना) हो जाने के बाद और 'धन्यवाद पर्व' पर (जब परमेश्वर को धन्यवाद दिया जाता है) नाचे थे।

फिर वह चौंककर वर्तमान में लौट आता था।

''हम 'धन्यवाद पर्व' और क्रिसमस पर क्या करेंगे?'' एक साथ उसने यह सवाल किया था।

''हम सबके सब तो इस छोटे-से डिब्बे जैसी जगह में आ नहीं सकते! घर में एक कमरा भी ऐसा नहीं है जहाँ हम सब एक साथ बैठ सकें; और अगर हम जैसे-तैसे बैठ भी सके तो फिर हम बस फर्श को ही देख पाएँगे। मैं कहता हूँ कि इससे मुझे बहुत निराशा होती है।''

सेरिला को उसकी बात थोड़ी खटकी; लेकिन उसने आराम से जवाब दिया, ''मैं सोचती हूँ कि हम कैसे-न-कैसे काम चला ही लेंगे। बस, हम एक ही समय में सबको एक साथ नहीं बुला पाएँगे। यह हो सकता है कि हम तुम्हारे घरवालों को 'धन्यवाद पर्व' पर बुला लें और मेरे घरवालों को क्रिसमस पर।''

यह बात स्टीवन के मन में चुभ गई और उसके बाद से वह अपने इस खिलौनानुमा घर से चिढ़ने लगा। यह कुछ समय के लिए किराए पर लेने को तो ठीक था, लेकिन यह घर नहीं हो सकता था, जहाँ बुढ़ापा काटा जाए, भले ही इसमें कितना ही चमकीला रंग-रोगन क्यों न हो रहा हो और बढ़िया नया फरनीचर क्यों न हो!

यथार्थ में इसमें कोई आकर्षण, कोई कविता, कोई जुड़ाव नहीं था। यह कपड़ों के डिब्बे की तरह आयताकार और 'स्वर्णिम बलूत' के चिलमची स्टैंड की तरह निराशा की हद तक नीरस था। ऐसे मकान में पैदा होनेवाले बच्चे से

उन धुँधले, बड़े कमरों का जन्मसिद्ध, अधिकार धोखे से छीन लिया जाता, जो आग की थिरकती आभा से रोशन होते हैं; उनसे उन गाथाओं को छीन लिया जाता है, जिन्हें बाहर जंगली हवा में चीखते वे बड़े-बड़े पेड़ गुनगुनाते हैं, जो समस्त छायाओं, समस्त संकेतों से वंचित होते हैं। ऐसा ही कुछ स्टीवन के विचारों में आया, हालाँकि वह स्वर से स्वर नहीं दे सका।

''(बच्चों की) माँ,'' एक दिन उसने कहा, ''मेरी इच्छा है कि हमारे पास एक बड़ा कमरा होता, जिसमें हम घूम-फिर सकते और एक गलीचा और पुराने चलन की कुछ कुरसियाँ और एक आतिशदान होता।''

'फिर आप उस आतिशदान को लेकर बैठ गए।'' उसकी पत्नी ने झुँझलाकर कहा। ''अब कोई आतिशदान नहीं रखता और इस घर में आप बड़ा कमरा कहाँ से ले आएँगे?''

''अगर तुम कहो तो मैं बना लूँगा।''

''बकवास। यह मकान बिलकुल ठीक है, हमारे लिए काफी बड़ा है। कैरिस तो अब किसी भी मिनट विदा हो जाएगी। और जहाँ तक 'धन्यवाद पर्व' और क्रिसमस की बात है, तो हम होटल में जाकर खाना खा सकते हैं या उन्हें बारी-बारी से यहाँ घर में बुला सकते हैं।''

''उससे काम नहीं चलेगा,'' उसने विरोध जताया, ''इससे बिलकुल काम नहीं चलेगा। यह न तो स्वाभाविक लगेगा और न ही ठीक कि हम ऐसे दिनों में होटल जाएँ। हमें इस तरह की सारी दावतें घर पर ही करनी चाहिए।''

''देखिए, आप केवल धन्यवाद पर्व के लिए तो एक बड़ा मकान बनाएँगे नहीं, क्यों?''

''पता नहीं, लेकिन मैं बनाऊँगा।'' उसने दृढ़ता से कहा, ''मुझे नहीं पता, लेकिन किसी और तरीके से पैसा खर्च करने की तरह यह तरीका भी उतना ही अच्छा होगा। मैं इस छोटे से दड़बे से तंग आ गया हूँ, क्यों न हम मेरिलवाली जगह खरीद लें और चाहें तो कुछ नाच-वाच के लिए कमरा रखें?''

''मैं टेलीफोन लगवा सकता हूँ।''

''मैं कुछ सुनना नहीं चाहती, स्टीव! मैं फार्म से कस्बे में रहने आई थी और मैं कोई आधी-अधूरी बात नहीं चाहती।''

स्टीवन ने उसकी मरजी के आगे अपने घुटने टेक दिए और आगे कोई शिकवा नहीं किया।

उन्होंने 'धन्यवाद पर्व' का खाना होटल में खाया और जब वे घर लौट रहे थे तो सेरिला बोली, ''देखा! हमारी जिंदगी में पहली बार हमें 'धन्यवाद पर्व' की प्लेटों के बारे में नहीं सोचना, कैरिस!''

''आप सही कह रही हैं।'' कैरिस ने जवाब दिया, ''और फिर भी यह 'धन्यवाद पर्व' जैसा बिलकुल नहीं लग रहा, क्यों पापा?''

स्टीवन ने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि वह बीते जमाने के छुट्टियों के दिनों में खोया हुआ था।

प्रतिदिन की मेहनत करते हुए बड़ा होना अपने आप में त्रासद होता है, किंतु निठल्ले बैठे-बैठे—और बेघर होकर बूढ़ा होना भी अपने आप में कम दु:खद नहीं होता। अपने तमाम साथियों में अकेले स्टीवन इस बात को समझने लगा कि जब व्यक्ति नई चीजों में शरीर के लिए आराम खोजने लगता है तो उसका मन पुरानी चीजों के प्रति तड़प से मर जाता है—वह बेचैन और बेघर हो जाता है।

इस तरह बाहर से तो वह वैसा ही बना रहा, जबकि अंदर से उसमें यादें भरी थीं, जो अपनी शक्ति से उसे कँपा देती थीं। वह अपने पड़ोसियों का अभिवादन ऐसी मुसकान से करता था, जो हर महीने कुछ और अन्यमनस्क कुछ और विषादमय होती जा रही थी, और जब उसने शिकागो में रह रहे अपने बेटे को चिट्ठी लिखी तो उसने उसमें लिखा —''हमारा मकान तुम्हारे हैट जितना बड़ा है और यह अच्छा व साफ-सुथरा है, लेकिन हम इस साल क्रिसमस नहीं

मना सकते—यहाँ छह से ज्यादा व्यक्तियों के लिए मेज नहीं लगाई जा सकती। मैं मुश्किल से समय काट रहा हूँ।'' और यह लिखते हुए उसका चश्मा उसके आँसुओं से गीला हो गया था।

लेकिन एक दिन सूर्यास्त के समय जब वह अपनी खिड़की के पास अकेला बैठा था और नीलकंठ उड़ान भर रहे थे और अखरोट के पत्ते गिर रहे थे, तो उसने अपने आपको एक अत्यधिक साहसी स्वप्न में खोने दिया था। वह कल्पना में एक ठेकेदार से कह रहा था, ''मैं पहाड़ी के पार अपना पुराना मकान चाहता हूँ। मुझे यह परवाह नहीं है कि इसमें कितना पैसा लगेगा। मेरे पास 30 हजार डॉलर हैं और इसमें से आधा भी मकान में लग जाए तो भी मुझे अपना मकान चाहिए। मेरी पत्नी और बेटी तो मेरे साथ कभी कूली वापस जाएँगी नहीं और मैं वहाँ अकेला रह नहीं सकता, इसलिए तुम्हें पुराने मकान को—आतिशदान और बाकी तमाम चीजों समेत—पर्वतमाला के पार लाकर इसे पेड़ों के नीचे कहीं रखना होगा। वह मकान जैसा था, बिलकुल वैसा ही चाहिए मुझे। क्या तुम यह कह सकते हो?''

इस कल्पित वार्त्तालाप में वह अपनी बात आसानी से रख पा रहा था; इसलिए वह कहता गया, ''मुझे यहाँ बस थोड़े ही दिन नहीं रहना है और मैं अपने दिन शांति से बिताना चाहता हूँ। मैं अपने मन में आराम चाहता हूँ—और मेरे मन को इस छोटे से डिब्बे में आराम नहीं है; मुझे काफी जगहवाला कमरा चाहिए, जिसमें कोनों में परछाइयाँ हों और आग हो, जिसे मैं उस समय देख सकूँ, जब मेरी पढ़ने या बात करने की इच्छा न हो। मुझे पुराना कमरा चाहिए।''

और जब उसकी पत्नी ने उसकी यह जादुई तंद्रा भंग की तो उसने आँखें उठाकर देखा। इन आँखों में इतना भय, इतनी गिड़गिड़ाहट थी कि उसकी पत्नी हैरत में पड़ गई और चिल्ला पड़ी, ''क्या बात है, स्टीवन! तुम्हें देखकर तो ऐसा लगता है जैसे तुमने कोई भूत देख लिया हो?''

''हाँ (बच्चों की) माँ—हाँ! शायद भूत ही देखा है मैंने।'' उसने जवाब दिया और अपने होंठों की कँपकँपाहट को छिपाने के लिए उसने अपना मुँह फेर लिया।

एक दिन वह कस्बे से हर बार की तरह सैर करके लौटा तो बहुत रोमांचित दिखाई दे रहा था और अपना कोट उतारने और हैट टाँगने के बाद उसने कहना शुरू किया—

''सुनो, किसी ने मेरिलवाली जगह खरीद ली है।''

सेरिला ने सिलाई करते-करते आँख उठाकर देखा।

''किसने?''

हाइरैम कह रहा था कि उसने सुना है कि टायर के किसी आदमी, किसी ठेकेदार ने इसे खरीद लिया है और वह अपने हिसाब से इसे बनाने जा रहा है।''

मेरिल आवास एक बढ़िया फार्म का अवेशष था। यह फार्म कभी बूढ़े ऐबनर मेरिल का गौरव हुआ करता था। शानदार देवदारों के बीच बना यह मकान दस एकड़ जमीन में था—बाकी सारी जमीन वारिसों ने बेच खाई थी। इसमें बने नौकरों के मकान खस्ता हालत में थे और बाड़े में जंग लगी मशीनरी बिखरी पड़ी थी। लेकिन यह खूबसूरत जगह थी और स्टीवन के दिल में यह काफी समय से बसी हुई थी। जब भी वह यहाँ से गुजरता तो यह हिसाब जरूर लगाता था कि अगर उसके पास यह जगह हुई तो वह क्या करेगा! अब वह कह रहा था, ''देखो, मुझे खुशी है कि कोई इसमें सुधार करने जा रहा है, लेकिन काश, तुम मुझे खरीदने देतीं!''

सेरिला ने उसकी इस बात का कोई जवाब नहीं दिया।

स्टीवन पूरी गरमियों एक तरह से परेशान रहा, लेकिन मेरिल आवास में चल रहे काम में वह दिलचस्पी लेता

दिखता था। उसकी यह आदत बन गई थी कि वह सुबह वहाँ चला जाता था और सेरिला भी इससे खुश थी, हालाँकि वह उसे और उसके साथियों को खूब खरी-खोटी सुनाती थी।

''मुझे तो हैरानी होती है कि तुम व हाइरैम और वह बूढ़ा पिल्चर मेरिल के बाड़े में जाकर तंबू क्यों नहीं गाड़ लेते? मुझे तो लगता है कि अगर मैं वह मकान बनानेवाली होती तो तुम लोगों को वहाँ घुसने भी नहीं देती।''

''उसे हमारी सलाह कीमती लगती है, (बच्चों की) माँ!''

''हाँ-हाँ, क्यों नहीं!'' सेरिला ने तिरस्कार से जवाब दिया।

उसके कुछ दिन बाद हाइरैम ने 'यूनिवर्स कमेटी' को खबर दी कि भवन निर्माता हिल साहब उस मकान में एक बड़ी चिमनी और आतिशदान बनवा रहे हैं।

''वह कहते हैं कि आजकल शहर में सभी लोगों के पास से चीजें हैं।''

''देखो, स्टीव,'' पिल्चर ने कहा, ''अच्छा होगा कि तुम वहाँ जाओ और उनकी थोड़ी मदद करो। आतिशदानों के मामले में तो तुम्हारी महारत रही है। पूरब में तो हम चिमनी के कोनों में अपने मोजे लटकाया करते थे, लेकिन मुझे यह याद नहीं कि तुम यह कैसे करते थे!''

''मुझे तो बड़ा अजीब लग रहा है।'' हाइरैम ने कहा, ''जिन दिनों हम सभी के पास आतिशदान हुआ करते थे तो हम स्टोव को लेकर पागल थे और जब हम सबके पास भट्ठियाँ हैं तो हममें से कुछ आतिशदान चाहते हैं। हम तो सोचते थे कि जो परिवार दीवार में बने एक छेद के सामने ठंड में ठिठुरकर मरते-मरते बचा है, वह उसके बाद उससे परहेज करेगा।''

''लेकिन उनके फायदे भी हैं,'' स्टीवन ने तत्परता से कहा, ''जरा आतिशदान की जाली पर रखे सेब की शराब के मग को और राख में पड़े चेस्टनट (बादाम जाति) के फलों को और सेब के छिलकों व नाचों को याद करो—मैं कहता हूँ कि और कोई चीज जगह नहीं ले सकती एक अच्छे पुराने...''

''देखो, तुम सेब की शराब और दूसरी चीजों का मजा तो दीवार में बने उस छेद के बिना भी ले सकते हो, जिसमें होकर एक जानवर को भी फेंका जा सकता है। और बेस बर्नर के बारे में क्यों कहते हो?''

स्टीवन अपनी बात पर अड़ा रहा—''बिलकुल नहीं चलेगा। बेस बर्नर तो बड़ी मनहूस-सी चीज है। नहीं जी, लपटों को लपलपाना और चटकना चाहिए। मैं मानता हूँ, आपको तब दूसरी गरमी की जरूरत होती है।'' उसने आगे कहा, ''जब मौसम बहुत ठंडा होता है; लेकिन मेरा विश्वास है कि तब हम और भी स्वस्थ रहेंगे, अगर हम उन हवादार पुराने आतिशदानों का फिर से इस्तेमाल शुरू कर दें। ये कमरे में हवा का बहाव बनाए रखते थे—सारी गंदी हवा चिमनी के जरिए निकल जाती थी।''

''हाँ, और उसके साथ बिल्ली और पंचांग व साप्ताहिक अखबार भी।'' हाइरैम ने कहा, ''मेरी किस्मत! लेकिन हमारी पुरानी चिमनी की हवा तो बलूत के तख्तों से कीलें उखाड़ देती थी। हमें बाइबिल पर 'स्टन' रखना होता था।''

''लेकिन उन दिनों हमें सूखा रोग नहीं होता था।''

''लेकिन उससे भी खराब रोग होता था।'' पिल्चर ने महीन आवाज में कहा।

''वह क्या?''

''हाथ-पाँव फटना!''

और फिर वे सब एक साथ ठहाका मारकर हँस पड़े और कमेटी भंग हो गई।

''यह मैं क्या सुन रही हूँ?'' कुछ दिन बाद सेरिला ने तीखी आवाज में कहा। ''क्या मेरिल आवास के मालिक ने

जेन किटरेज से उस मकान में रहने के लिए कहा है?''
''शायद यह सही है, (बच्चों की) माँ!''
सेरिला ने फुफकारते हुए कहा, ''यह तो सरासर बेवकूफी है। यह कैसे हुआ? क्या यह आपकी सलाह थी?''
''अरे, नहीं—वह हिल साहब किसी की तलाश में थे और आमोस बीमार था और जेन...''
''मैं जानती थी! मैं जानती थी, इसमें आपका हाथ है!''
''हाँ, क्यों नहीं? आमोस मेरा साला है। उसकी मदद करने का मुझे अधिकार है—और जेन घर की देखभाल करने में। अच्छा, तुम इस बात से इनकार नहीं कर सकतीं!''

सेरिला ने मुँह फेर लिया। उसकी और जेन की आपस में थोड़ी खटपट रहती थी। इसका एक कारण यह था कि आमोस तो स्टीवन की पहली पत्नी का भाई था और एक कारण यह था कि जेन की जबान बहुत तेज चलती थी। सेरिला को अपने पति के राज का आभास तो हो गया, लेकिन वह इसे पकड़ नहीं पाई थी—और वह इस स्थिति पर विचार करने के लिए बाहर खलिहान में चला गया।

सच्चाई तो यह थी कि यह सारी खरीदारी, योजना और निर्माण स्टीवन थर्बर की कल्पना की कविता के ही छंद थे। वही 'मालिक' था; हिल साहब तो बस इस कृत्य में उसके सहभागी थे, उसकी आड़ थे।
वह जब टायर गया हुआ था तो उस दौरान उसने इस हमदर्द नौजवान से मुलाकात की थी और उन्हें समझाया था कि वह क्या चाहता था।
''अब मैं कूली से उस पुराने मकान को उठाकर तो ला नहीं सकता, उसका तो सवाल ही नहीं उठता; लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप वहाँ जाकर उसे देखें और मेरे लिए ठीक वैसा ही मकान बनवा दें। यह बिलकुल उसी हालत में होना चाहिए, जिसमें वह पुराना मकान उस समय था, जब मैं उसमें पहली बार गया था, ताकि जब मैं आग के पास बैठूँ तो मुझे यही लगे कि मैं फिर से घर में आ गया हूँ।'' यहाँ आकर वह रुक गया था, क्योंकि आगे उससे बोला नहीं गया था।

यह उसकी गुप्त पीड़ा थी—बेघर होने का बोध था यह। उसकी जिंदगी का सारा सूक्ष्म आकर्षण, अतीत की सारी कविता, पर्वतमाला के पार उस घर से जुड़ी थी और जैसे-जैसे उसकी हथेलियाँ मेहनत के अभाव में मुलायम हो रही थीं और उसके गालों पर से धूप के कारण बनी साँवलेपन की परत हटती जा रही थी वैसे-वैसे कुछ खोने का बोध दिन-ब-दिन गहराता जा रहा था। वह अपने वर्तमान में कटुता और दु:ख का अनुभव कर रहा था। इसके फलस्वरूप उसका मुख अधिकाधिक पूर्णता से उसकी जवानी के प्रेम-पगे दिनों की ओर घूम रहा था। पचास फीट जमीन पर एक तंग, चटकीले, छोट से मकान में बूढ़ा होने का विचार उसे संत्रस्त करता था; इसलिए हफ्तों की ज्वलंत इच्छा और अनिश्चय के बाद, उसने यह कदम उठाया था।

इस नई इमारत के साथ उसका संबंध होने के बारे में किसी को शंका भी नहीं थी। उसकी योजना इतनी दु:साहसपूर्ण और ब्लफ साइडिंग के व्यावहारिक, आम दर्रे वाले दैनिक जीवन से इतनी अलग थी कि कोई इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था। फिर भी उसे यह भय सता रहा था कि जब उसका यह राज खुलेगा तो उसके चारों तरफ हैरत और विरोध के तीखे स्वरों का कैसा तूफान खड़ा होगा!

उसकी उम्मीद और तसल्ली इस विश्वास पर टिकी थी कि नया मकान जब पूरा बन जाएगा और रहने के लिए तैयार हो जाएगा, तो उस समय वहाँ जाने से उसकी पत्नी का गुस्सा हलका हो जाएगा और वह उसका दिल जीत पाएगा। कैरिस की तरफ से उसे कोई डर नहीं था। मन-ही-मन वह अपने 'शिकागो बाबू' (जॉन को वह इसी नाम से बुलाता था) की हमदर्दी और समर्थन पर भी निर्भर कर रहा था; लेकिन अल्बर्ट, जो टायर में एक मेहनती दंत

चिकित्सक था और जिसका बड़ा परिवार हर साल बढ़ रहा था (और जो निश्चय ही जायदाद में अपने हिस्से की जुगाड़ में था)—अल्बर्ट इतनी बड़ी रकम को इतने मूर्खतापूर्ण ढंग से खर्च करने पर कभी खुश नहीं होगा। जहाँ तक पिल्चर और बूढ़े हाइरैम और बाकी बंदों का सवाल था तो वह उनकी हँसी को झेलने के लिए तैयार था, क्योंकि उसमें वैमनस्य नहीं होगा—और फिर, यह मजाक उन पर भी होगा; क्योंकि क्या वह यह नहीं कह सकेगा, ''हालाँकि मैंने तुमको मूर्ख बना दिया, तुम सब आदमियों को!''

लेकिन उसके दोहरेपन का बोझ उस पर हावी रहा और सेरिला उसकी खामोशी, उसके अनमनेपन को लेकर इतनी चिंतित हो गई कि उसने जॉन को चिट्ठी लिख दी कि वह आ जाए और अपने बाप को देखे कि उन्हें क्या हो गया है।

जॉन जब आया तो उसके सवालों के जवाब में स्टीवन ने कहा;

''मुझे कुछ नहीं हुआ है, मेरे बेटे, बस बात यह है कि मेरे पास करने को कोई काम नहीं है। मुझे पुरानी जगह की याद सताती है।''

''देखिए, आप छोटे से आरामदेह मकान में तो हैं।'' जॉन ने उस छोटे से मकान में नजर दौड़ाते हुए कहा। ''यह सब बहुत अच्छा है माँ, लेकिन यह घर जैसा बिलकुल नहीं है।''

सेरिला यह मानने को तैयार नहीं थी—''क्या तुम सोचते हो कि मैं अपनी जिंदगी रेल से बाहर कई मील दूर वेट कूली में खत्म कर लूँगी?

''मुझे भी पुराने मकान को छोड़ते हुए उतना ही अफसोस हुआ था जितना उन्हें। लेकिन, मेरी किस्मत! मैं उस तनाव को बरदाश्त नहीं कर पाई। तुम्हारा बोलना बिलकुल ठीक है; तुम तो आना-जाना कर सकते हो, लेकिन मुझे तो सर्दी-गरमी हर समय वहाँ रहना था।''

जॉन ने उदारतापूर्वक यह स्वीकार किया कि जाड़ों में वह एक औरत के लिए सुनसान जगह थी।

''सुनसान! अरे, वहाँ तुम दफन भी सकते थे।''

''शायद आप ठीक कह रही हैं, माँ! यह सब घर छोड़ने के दु:ख का ही एक हिस्सा है।'' और अपने पिता के लिए दवा लिखकर वह वापस शहर चला गया। उसे फिर भी यह मालूम नहीं था कि उसके पिता की गिरती सेहत का असली कारण क्या था!

स्टीवन जिस मकसद के लिए सचमुच जुटा था, वह था नए साल के मौके पर गृह-प्रवेश का शानदार आयोजन! और वह खास तौर पर जॉन को हैरत में डालना चाहता था, क्योंकि वह निश्चय ही समझता।

यह चिंता का समय था, किंतु यह अपार खुशी का समय भी था। मकान बनने लगा तो वह इसे देखने के लिए हर दिन वहाँ से घोड़े पर निकलता या फिर बाड़े में बैठकर उसे देखने का सुख लेता। सामने की ड्योढ़ी से लेकर उसकी छत पर बनी बाग की बाड़ तक यह हू-ब-हू पुराने मकान जैसा था—वही खिड़कियाँ थीं, पटिया पर ठीक उसी जगह से चिमनी निकल रही थी। कभी-कभी वह अंदर भी चला जाता था, लेकिन वहाँ बिखरी चीजों से उसे परेशानी होती थी, और फिर वह मकान पूरा हो जाने तक इंतजार करना चाहता था, ताकि छवि पूरी शक्ति के साथ उस तक आ सके।

जेन और उसके आदमी को वहाँ रखने की बात उसके दिमाग में सबसे पहले इस कारण आई, क्योंकि यह उसकी इच्छा थी कि जब तक वह सेरिला के आगे स्वीकार नहीं करता तब तक उस जगह को व्यवस्थित रखनेवाला कोई हो; लेकिन यह स्वीकरण दिन-ब-दिन और कठिन होता गया, क्योंकि जैसे-जैसे दिन बीतते गए और मकान पूरा होने का समय पास आता गया, वह उस खयाल में डूब गया कि मकान की साज-सज्जा वैसी ही

रखी जाएगी, जैसी मार्था के जिंदा रहते हुए थी। यह खयाल उसके दिमाग में तब आया जब वह आमोस और उसकी बीवी के साथ उनके फरनीचर के बीच बैठा था। उसे उनमें कई चीजें ऐसी दिखाई दीं। जो मार्था के फरनीचर का हिस्सा थीं और जो उसने उन्हें मार्था के मरने के बाद दे दी थीं। उसने जेन से कहा था कि वह उस आरामकुरसी को तलाशने की कोशिश करे, जो उसने उसकी (जेन की) बहन को दे दी थी।

आतिशदान को गरम करने का दिन पास आया तो स्टीवन आनंदमय रोमांच से काँपने लगा। भवन निर्माता को उसके पैसे दे दिए गए थे और वह चला गया था; बाड़ा 'सीटी की तरह चिकना' था और बड़ा नया मकान देवदारों की नंगी शाखाओं के नीचे ठंडा, सफेद और शानदार खड़ा था। लोहे के सलाखें और आतिशदान स्टीवन ने अभी तक आग के सामने बैठने का सुख नहीं भोगा था। वह कमरे में फरनीचर लगने और मार्था के गलीचे बिछने तक इंतजार करना चाहता था।

उस दिन वह सुबह जल्दी उठ गया। उसने अपनी पत्नी को यही बताया कि उसे आमोस को नए मकान में बसने में मदद करनी थी।

वह एक ठंडा दिन था। आसमान में बादल छाए थे और तेज उत्तरी हवा चल रही थी और हवा में सर्दियों की खुनक थी—और जब रात होने लगी और जेन का फरनीचर इधर-उधर रख दिया गया (जेन खुद रसोई में लगी थी) तो स्टीवन ने अपने आतिशदान में आग जलाई और संतुष्टि से रोमांचित होकर उसके आगे बैठ्गया।

जब वह उस तरह बैठा देख रहा था तो उसकी रचना का जादू उस पर चल गया। लहराती लपटें उसकी कविता के पहले छंद को गा रही थीं। सफेद दीवारों पर सुनहरी रोशनी लपलपा रही थी और छत पर लंबे सींखचों की परछाइयाँ भयावह तरीके से थिरक रही थीं और बीते दिनों की तरह ही जानी-पहचानी थीं। नक्काशीदार ढाँचे और उसकी मोमबत्तियों व फूलदानों में कोई बदलाव नहीं देख रहा था। बाहर देवदारों का गीत भी वही था।

उसकी आँखों में आँसू छलक आए। उसके गले में एक बड़ा टुकड़ा अटक गया। एक क्षण को उसे एक कलाकार के आनंद की अनुभूति हुई। ऐसा लग रहा था जैसे कवि की तरह उसने समय के आदेश पर विजय प्राप्त कर ली थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसने सचमुच अपने घर को बहाल कर लिया था, अतीत की फिर से रचना कर दी थी, ताकि मार्था उन बीते दिनों की तरह किसी भी क्षण हलके पाँवों से चुपचाप कमरे में आ सके और उसकी कुरसी के हत्थे पर बैठकर उसके दिल को हमेशा पिघला देनेवाली उसकी कोमल सहानुभूति से पूछ सके, ''थक गए, स्टीवन?'' और उसके कंधे पर अपना गाल रख दें।

वह सेरिला को प्यार करता था। वह अपने बच्चों की माँ के नाते उसकी इज्जत और परवाह करता था। लेकिन मार्था उसके जवानी के दिनों की पत्नी थी, उसके सपनों की देवी थी। वह उसकी जिंदगी के रहस्य के साथ, उसकी सुबह की ओस के साथ जुड़ी थी। मई के उस अद्भुत महीने में पूरी धरती जवान थी, जब उन दोनों ने इस मोहक और उपजाऊ प्रदेश में कदम रखा था। जंगली मधु की महक और पुष्पित चरागाहों में लवा पक्षियों का गीत मार्था के नाम में था और उसके आतिशदान के आस-पास आनंद की ऐसी हार्दिकता व ऐसा पड़ोसीपन अभी भी बना हुआ था, जो दुनिया से कब का गायब हो चुका था। आह, बसावट के आरंभ के वे गौरवशा लीदिन!

वह सपनों में डूबा इतनी देर तक बैठा रहा कि लाल आसमान और आग धूसर हो गए और रसोई में मौजूद उन भले लोगों को बेचैनी होने लगी; फिर आमोस एक लैंप लेकर आया और तब एक अन्यमनस्क मुसकान के साथ, उम्र की ठिठरन से अकड़ा, वह स्वप्नद्रष्टा उठा और अपने मान्य घर को, अपनी वर्तमान पत्नी के पास वापस चला गया।

वह अगले दिन, और उससे अगले दिन, और उससे भी अगले दिन फिर आया और मूक पीड़ा व आनंद के साथ

पत्थर और इस्पात में लिखी अपनी कविता, तीखे चीड़ में प्रस्तुत अपने महाकाव्य का फिर-फिर अवलोकन करता रहा। वह अपनी आग के आलोक में देह सेंकता और उसकी लपट के जादू में अपने सफेद बालों व बेजान हाथ-पाँवों को भूल जाता था। अतीत की इन गुप्त सुखद सैरों और मृतका के साथ इन संवादों के बाद जब वह अपनी पत्नी और बेटी के पास अनिच्छापूर्वक लौटता तो उसके मन में एक निश्चित अपराध-बोध और भय होता था। सेरिला के प्रति बेवफाई का इरादा न रखते हुए भी उसे उसने अपना राज न खोलने का पक्का इरादा कर लिया। उसने सेरिला की तीखी जबान और उसकी रूखी व कठोर टिप्पणियों से अपने आपको समेट लिया। वह एक दूल्हे की तरह हो गया, जो अपनी प्रियतमा का नाम लेने पर भी ईर्ष्या करता है।

वह किसी और के साथ अपनी आग के आनंद को बाँटना नहीं चाहता था। उसके लिए यह सुखद स्थिति थी कि यह आश्रय, यह स्वप्न स्थल बस उसी के पास रहे, कि अपने आतिशदान का वह अकेला मालिक हो। उसके मालिक होने की बात का पता चलते ही यह सब खत्म हो जाना था और अवांछित और बेसुरी आवाजें उस पर टूट पड़नी थीं।

इसलिए वह प्रतीक्षा करता और सपने देखता रहा, जबकि उसकी उत्सुकता ठंडी होती गई और दिन मुखर हवा के वेग में दक्षिण की ओर उड़ती बड़ी चिड़ियों के समान तेजी से बीतते रहे।

आमोस को स्टीवन के बारे में अनुमान हो गया था कि वही मकान का मालिक है, लेकिन वह एक समझदार आदमी था और उसने अपनी बीवी से कह दिया था कि वह इस बात का कोई संकेत न दे कि उन्हें इस राज का पता है। जेन ने भी केवल सतर्कता ही नहीं बरती, बल्कि सहानुभूति से भी काम लिया। उसने ऐसे कई छोटे-छोटे काम किए, जिससे स्टीवन अपने घर का और भी ज्यादा लुत्फ उठा सके। जब भी वह घर आता तो उसे आतिशदान में आग जलती मिलती थी और उसे अधिकतर अकेले रहने दिया जाता था। जेन वहाँ तभी दाखिल होती जब उसे स्टीवन के साथ उसके पवित्र स्मारक के सामने बैठने का निमंत्रण मिलता था।

यह समझ पारस्परिक थी। स्टीवन जानता था कि इन दोनों को उसका राज पता है; लेकिन वह ऐसा जाहिर नहीं होने देता था। यथार्थ में वह इन दोनों का अपने मेजबान के तौर पर अभिवादन करके इस झूठ को बनाए हुए था और यहाँ तक कि वह उनसे वसंत में 'मालिक' के आने के बारे में चर्चा भी करता था। आग के सामने बैठने का मौका दिए जाने के लिए वह हमेशा उन दोनों का आभार व्यक्त करता था।

''मुझे नहीं पता कि जब तुम दोनों यहाँ से चले जाओगे, तब मैं क्या करूँगा?'' एक बार उसने उनसे कहा था, ''चलो, कम-से-कम एक जाड़ा तो मेरा आराम से बीतेगा।'' उसने अपनी बात खत्म करते हुए कहा था।

सेरिला उसके इस भटकाव से बहुत चिढ़ी हुई थी। वह जेन किटरेज के प्रभाव को इसका सबब मानती थी। इस तरह उनके बीच अविश्वास और बचाव की एक दीवार खड़ी हो गई थी। कैरिस गाँव के युवाओं की गतिविधियों में घुल-मिल गई थी। उसने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, हालाँकि कभी-कभार वह अपने पिता का बचाव करती थी।

''अगर जेन आंटी के साथ उनका मन बहल जाता है तो होने दीजिए।'' उसने कुछ लापरवाही के अंदाज में कह दिया था और उसके लहजे से प्रभावित होकर भी स्टीवन ने उसे अपना हमराज नहीं बनाया। जॉन उसकी बात को समझनेवाला था, लेकिन वह उसे लिखने में हिचकिचा रहा था।

''मैं क्रिसमस में उसके आने तक इंतजार करूँगा।'' उसने फैसला किया।

उसके पुराने यारों को साफ दिख रहा था कि अब वह मेल-जोल के लायक नहीं रह गया था और उनसे भी दूर हो गया था। उसके प्रतिदिन के अभिवादन में भी एक जड़ उदासी, एक अबूझ संकोच आ गया था। वह अब कम

किस्से कहता था, परचूनिये की दुकान पर कम दिखाई देता था और उसकी हँसी भी कम सुनाई देतीथी।

इस सारे बदलाव का सबब वे उसके खराब स्वास्थ्य को बताते थे और उनकी टिप्पणी में सदाशयता व सहानुभूति का पुट होता था।

''स्टीवन की हालत तेजी से बिगड़ रही है।'' पिल्चर ने एक दिन कहा। ''लगता है, जाड़े ने उसे जकड़ लिया है। अगर किसी दिन मुझे यह सुनने का मिले कि वह चित हो गया है तो मुझे कोई ताज्जुब नहीं होगा। मुझे नहीं लगता कि वह ऐसे कई जाड़े झेल पाएगा!''

हाइरैम ने उद्दंडता और हसरत से मुसकराकर देखा, ''हम सब एक ही नाव पर सवार हैं और एक ही दिशा में बहे जा रहे हैं।'' वह बोला और फिर वे संकल्पित प्रसन्नता के साथ मौसम व जलाऊ लकड़ी की कीमत के बारे में बातें करने लगे।

नवंबर गुजर गया और इस बीच स्टीवन की योजना में कोई बदलाव नहीं आया। फिर दिसंबर भी आधा निकल गया; तब जाकर उसने अपना मौन तोड़ा जॉन की एक चिट्ठी आई थी और उसी से द्रवित होकर उसने एक रात अचानक अपने उसी पुराने, पुरजोश अंदाज में कहा, ''मैं बताता हूँ, तुम्हें क्या करना है, आमोस! तुम और जेन मिलकर जॉन और एल्बर्ट के रिश्तेदारों को और सेरिला के सारे घरवालों को भी न्योता भेजो कि वे सब क्रिसमस पर खाने के लिए आएँ। लड़कों से कहना कि उनकी माँ के पास क्योंकि काफी जगह नहीं है, इसलिए मैं एक तरह से यहाँ तुम लोगों के पास आ रहा हूँ। तुम उनसे कह सकते हो कि मैं मुर्गे और बाकी चीजों और बच्चों के (उपहार) मोजों का इंतजाम कर रहा हूँ, और वे यहाँ ठहर सकते हैं—कम-से-कम उनमें से कुछ। हम सब यहाँ इस बड़े कमरे में जमा हो सकते हैं।'' तभी उसके गले में कुछ अटक गया और उसने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

जेन और आमोस ने इस सुझाव को ऐसे मान लिया, जैसे वह आदेश हो और वे स्टीवन को आग के आलोक में अकेला छोड़ निमंत्रण-पत्र लिखने चले गए, क्योंकि उस दिन उसे यहाँ आते हुए हवा और बर्फ दोनों से ही खूब जूझना पड़ा था और वह और भी बूढ़ा व कमजोर दिख रहा था।

''लगता है, वे सभी को बताने की सोच रहे हैं! क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता?'' आमोस ने पूछा।

''अगर वे ऐसा करते हैं तो उन्हें अफसोस करना होगा। अल्बर्ट और सेरिल दोनों ही बहुत गुस्सा होंगे। वे तो इसे पैसे की मूर्खतापूर्ण बरबादी ही मानेंगे, वह यहाँ इस दुनिया में रहने कभी नहीं आएगी।''

''मैं देख रहा हूँ कि ऐसा करने से वे कुछ डर-से रहे हैं। इसमें उन्हें तसल्ली तो मिल रही है। मुझे तो लगता है कि थोड़ी सी खुशी के हकदार हैं वे।''

दो घंटे बाद जब वे दोनों नीचे दरवाजों पर ताला लगाने और बत्तियों को बुझाने के लिए गए तो जेन ने कहा, ''जरा अंदर देखना तो कि बड़े कमरे में आग की क्या हालत है, और इस बीच मैं भट्ठी को देखती हूँ। बाप रे, जरा हवा का शोर तो सुनो!''

आमोस ने दरवाजा खोला, लेकिन दहलीज पर ही ठिठक गया और उसने मुसकराकर इशारे से जेन को बुलाया —''जरा यहाँ तो आना, जेन।'' उसने बहुत धीमे से कहा, ''मैं सोच रहा था, मैंने उनके बाहर जाने की आवाज नहीं सुनी।'' जेन ने आमोस के पीछे से झाँकते हुए आश्चर्य जताया।

आग धीमी पड़ चुकी थी। राख के भारी ढेर में बलूत की एक गाँठ अभी भी सुलग रही थी और रह-रहकर एक अकेली लपट इससे उठकर लपलपा रही थी। इसकी एक-एक कर चमकनेवाली रोशनी में स्टीवन की आकृति रह-रहकर दिख जाती थी। वह अपनी आरामकुरसी में धँसा हुआ था। सफेद बालोंवाला उसका सिर एक तरफ को लुढ़का हुआ था और उसके मरियल हाथ उसकी बगल में झूल रहे थे।

''अच्छा होगा कि उन्हें जगा दिया जाए,'' जेन बोली, ''वह ठंड खा जाएँगे। अच्छा हो कि आज रात वे यहीं सो जाएँ।''

आमोस ने अंदर जाकर सोनेवाले के कंधे पर हाथ लगाया। उनमें कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। आमोस ने उनके गाल पर हाथ रखा, जिस पर सफेद दाढ़ी उगी हुई थी और वह चौंककर अपनी बीवी की तरफ मुड़ा। आमोस की आँखों में उस क्षण आतंक व्याप्त था। उसकी दृष्टि, उसके हाव-भाव ने सारी कहानी एकदम बयाँ कर दी।

स्टीवन तो मार्था के पास था और अतीत व वर्तमान उसके लिए एक ही दिन की सुबह और शाम की तरह थे।

❑

खरीदार

-ओ. हेनरी

यह तो अच्छा है कि कैक्टस सिटी, टेक्सास के स्वस्थ वातावरण में फ्लू और जुकाम नहीं होता, क्योंकि वहाँ स्थित नावारो ऐंड प्लैट की कपड़ों की दुकान पर आप छींक नहीं सकते [मुहावरे के रूप में इसका अर्थ हुआ कि यह एक अच्छी-खासी दुकान हैअनु .]।

कैक्टस सिटी के पच्चीस हजार बाशिंदे उन चीजों पर खुलकर चाँदी के सिक्के लुटाते हैं जिन पर उनका दिल आ जाता है। इन अधकीमती सिक्कों का एक बड़ा हिस्सा नावारो ऐंड प्लैट को चला जाता है। ईंटों की बनी उनकी बड़ी सी इमारत इतनी जमीन घेरे है कि उसमें एक दर्जन भेड़ें आराम से चर सकती हैं। आप उनके यहाँ से साँप की खाल की नेकटाई, मोटरकार, 85 डॉलर में बिलकुल नए फैशन का लेडीज कोट बीस रंगों में खरीद सकते हैं। नावारो ऐंड प्लैट ने ही सबसे पहले कालराडो नदी के पश्चिम में पेनी का चलन शुरू किया था। ये लोग फार्म के मालिक थे, जिनके पास व्यापारियों का दिमाग था। उन्होंने देखा कि यह जरूरी नहीं है कि मुफ्त घास के बाहर जाने के बाद दुनिया अपनी क्रांतियों को खत्म ही कर दे!

इस दुकान का बड़ा साझीदार नावारो था। वह पचपन वर्ष का आधा स्पेनी था, जो व्यापक दृष्टिवाला, योग्य और सुसंस्कृत व्यक्ति था। हर साल वसंत में माल खरीदने वही न्यूयॉर्क जाया करता था। किंतु इस वर्ष वह इतनी लंबी यात्रा पर जाने से कतरा रहा था। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह बूढ़ा होता जा रहा था और दोपहर में आराम का समय होने से पहले वह कई बार अपनी घड़ी देख लेता था।

''जॉन,'' उसने अपने छोटे साझीदार से कहा, ''इस साल माल खरीदने तुम जाओगे।''

प्लैट थका हुआ दिख रहा था।

''मैंने सुना है,'' वह बोला, ''कि न्यूयॉर्क एक नीरस व बेजान शहर है; लेकिन मैं जाऊँगा। मैं कुछ दिन सैन आंतोन में घूम-फिरकर मजे करूँगा।''

उसके दो हफ्ते बाद एक व्यक्ति लोवर ब्रॉडले स्थित जिजबॉम ऐंड सन की थोक की दुकान में दाखिल हुआ। वह काला लंबा कोट, चौड़े किनारे का मुलायम व सफेद हैट और तीन-चार इंच ऊँचा कॉलर और काली नेक टाई —यानी पूरा टेक्सासी सूट पहने था।

बूढ़े जिजबॉम के पास समुद्री बाज की-सी आँखें, हाथी जैसी याददाश्त और ऐसा दिमाग था, जो बढ़ई के पैमाने के गोरखधंधे की तरह तीन तहों में खुलता था। वह पहाड़ी भालू की तरह लुढ़कता सामने आया और प्लैट से हाथ मिलाया।

''और टेक्सास में नावारो साहब कैसे हैं?'' उसने कहा, ''इस साल यह सफर उनके लिए बहुत लंबा पड़ जाता, क्यों? उनकी जगह हम प्लैट साहब का स्वागत करते हैं।''

''बिलकुल ठीक फरमाया आपने।'' प्लैट ने कहा, ''और अगर आप यह बता दें कि आपने यह अंदाजा कैसे लगाया, तो मैं आपको पेकोस काउंटी की चालीस एकड़ बिना सिंची जमीन दूँगा।''

''मुझे पता था,'' जिजबॉम ने खीसें निपोरते हुए कहा, ''जैसे मुझे यह पता है कि इस साल एल पासो में 28.5 इंच बारिश हुई है, यानी 15 इंच ज्यादा और इसीलिए नावोरो ऐंड प्लैट इस साल 15 हजार डॉलर के सूट खरीदेंगे, जबकि सूखे साल में उनकी खरीद 10 हजार डॉलर की होती है। लेकिन यह काम कल होगा। पहले तो मेरे निजी

दफ्तर में एक सिगार हो जाए, जिससे कि आपके मुँह से उन सिगारों का स्वाद मिट जाए, जो रियो ग्रांद जैसे जगहों से तस्करी में आते हैं—क्योंकि उनकी तस्करी होती है।''

उस समय दोपहर बीत चुकी थी और दिन का कारोबार खत्म हो चुका था। जिजबॉम ने प्लैट को अपने निजी दफ्तर में सिगार पीता छोड़ा और 'सन' वानी अपने साझीदार बेटे के पास आ गए, जो आईने के सामने खड़ा अपनी हीरे जड़ी स्कार्फ पिन ठीक कर रहा था। वह जाने ही वाला था।

''ऐबे,'' जिजबॉम ने कहा, ''तुम्हें आज रात प्लैट साहब को घुमाने ले जाना होगा। ये हमारे दस साल पुराने ग्राहक हैं। जब नावारो साहब यहाँ आते थे तो हम दोनों खाली समय में हर समय शतरंज खेलते थे। यह तो अच्छी बात है, लेकिन प्लैट साहब जवान हैं और पहली बार न्यूयॉर्क आए हैं। उन्हें कोई परेशानी और बोरियत नहीं होनी चाहिए।''

''ठीक है।'' ऐबे ने अपनी टाई पिन को कसते हुए कहा, ''मैं उन्हें ले जाऊँगा। जब वह सेस्टर होटल में हेड वेटर और फ्लैट आइरन को देख लेंगे और ग्रामोफोन पर 'अंडर दि ओल्ड ऐपिल ट्री' सुन चुकेंगे तो साढ़े दस बज जाएँगे और टेक्सास महाशय अपने कंबल में घुसने को तैयार होंगे। मुझे 11.30 बजे ही खाने पर जाना है, लेकिन उससे पहले वह मिसिज विनस्लो पर पहुँच जाएँगे।''

अगली सुबह दस बजे प्लैट कारोबार के लिए तैयार होकर दुकान में पहुँच गया। उसने अपने कोट के कॉलर में फूलों का गुच्छा लगा रखा था। जिजबॉम ने खुद उसकी आवभगत की। नावारों ऐंड प्लैट अच्छे ग्राहक थे और वे तुरंत नकद भुगतान करके छूट लेने से कभी नहीं चूकते थे।

''और हमारे इस छोटे से शहर के बारे में आपकी क्या राय है?'' जिजबॉम ने मैनहट्टनवासी की तरह मूर्खता से मुसकराते हुए पूछा।

''मैं तो इसमें कभी नहीं रहना चाहूँगा।'' टेक्सासवासी प्लैट ने कहा, ''आपका बेटा और मैं कल रात थोड़ा सा घूमे। आपके यहाँ का पानी अच्छा है, लेकिन कैक्टस सिटी में रोशनी का ज्यादा अच्छा इंतजाम है।''

''हमारे यहाँ ब्रॉडवे पर कुछ बत्तियाँ हैं। आपको ऐसा नहीं लगता क्या, प्लैट साहब?''

''और बहुत सारी परछाइयाँ भी।'' प्लैट ने कहा, ''मुझे आपके यहाँ के घोड़े सबसे अच्छे लगे। जब से मैं यहाँ आया हूँ, मैंने एक भी क्रोबेट नहीं देखा।''

जिजबॉम उसे सूट के नमूने दिखाने ऊपर के तल्ले में ले गया।

''मिस ऐशर को यहाँ बुलाना।'' उसने एक क्लर्क से कहा।

मिस ऐशर आई। नावारो ऐंड प्लैट के प्लैट को पहली बार ऐसा लगा कि प्रणय और गौरव की अद्‌भुत उजली आभा उसके ऊपर उतर रही है। वह कालरेडो के दर्रे के ऊपर की ठोस चट्टान की तरह खड़ा-का-खड़ा रह गया। वह विस्फारित आँखों से मिस ऐशर को एकटक देखे जा रहा था। मिस ऐशर ने उसे इस तरह घूरते देखा तो थोड़ा शरमा गई, जो उसके स्वभाव के विपरीत था।

मिस ऐशर यहाँ जिजबॉम ऐंड सन की मॉडल थी। वह सुनहरे बालोंवाली लड़की थी, जिन्हें 'मीडियम' कहा जाता है और उसका नाम भी आदर्श 38-25-42 से कुछ अच्छा ही था। उसे जिजबॉम की दुकान में काम करते दो साल हो गए थे और वह अपना काम बखूबी जानती थी। उसकी आँख में चमक थी, लेकिन वह ठंडी थी और अगर वह उस विख्यात छिपकलीनुमा दैत्य बैसिलिस्क की आँखों में आँखें डालने की सोच लेती तो उस दैत्य की ही आँख पहले झपककर झुक जातीं। प्रसंगवश, वह खरीदारों को जानती थी।

''तो प्लैट साहब,'' जिजबॉम ने कहा, ''मैं आपको हलके रंग के ये लेडीज गाउन दिखाना चाहता हूँ। आपके यहाँ का जो मौसम है, उसमें ये खूब चलेंगे। पहले यह वाला दिखाएँ, मिस ऐशर!''

उसके बाद तो मिस ऐशर एक मॉडल की भूमिका में फुरती से ड्रेसिंग रूम में जाती और हर बार एक नया परिधान पहनकर बाहर आती और हर कपड़े में वह गजब ढा रही थी। वह भौचक खरीदार के सामने पूरे आत्मविश्वास के साथ अलग-अलग अदा में पेश होती रही और वह अवाक् और अचल खड़ा देखता रहा। इधर जिजबॉम हर फैशन के बारे में बढ़-चढ़कर बोलता रहा। मॉडल के चेहरे पर उसकी वही हलकी, तटस्थ पेशेवर मुसकान थी, जो थकान या तिरस्कार जैसे किसी भाव को छिपाती प्रतीत हो रही थी।

जब नुमाइश खत्म हो गई तो प्लैट कुछ संकोच में दिखा। जिजबॉम थोड़ा चिंता में पड़ गया। उसने सोचा कि शायद उसका ग्राहक किसी और दुकान में जाने की सोच रहा है। लेकिन प्लैट तो अपनी कल्पना में कैक्टस सिटी के सबसे बढ़िया आवासीय स्थलों को देख रहा था और उनमें से एक को पसंद करने की कोशिश कर रहा था, जिस पर वह अपनी होनेवाली बीवी के लिए मकान बनवा सके—जो उस समय ड्रेसिंग रूम में लवंडर और महीन रेशमी जाली के ईवनिंग गाउन को उतार रही थी।

''आराम से सोच लीजिएगा, प्लैट साहब।'' जिजबॉम ने कहा।

''आज रात सोचिए। आपको इस तरह का माल इन दामों में और कहीं नहीं मिलेगा। मुझे लगता है, आपको न्यूयॉर्क में बोरियत हो रही है, प्लैट साहब। आपके जैसा जवान आदमी—बेशक आपको लड़कियों का साथ न मिल पाने से अखर रहा होगा; क्या आप आज शाम किसी अच्छी जवान लड़की के साथ डिनर पर नहीं जाना चाहेंगे? देखिए, मिस ऐशर बहुत अच्छी युवती है। उसके साथ आपको दिक्कत नहीं होगी।''

''अरे, वह तो मुझे जानती तक नहीं है।'' प्लैट ने चकित होते हुए कहा। ''उसे मेरे बारे में कुछ भी तो नहीं पता। क्या वह जाएगी? मेरी तो उससे जान-पहचान भी नहीं है?''

''क्या वह जाएगी?'' जिजबॉम ने भौंहें उठाकर प्लैट का सवाल दोहराया। ''बिलकुल जाएगी। मैं उससे आपकी जान-पहचान करवाऊँगा। बिलकुल जाएगी वह।''

और उसने ऊँची आवाज में मिस ऐशर को बुलाया।

वह आई तो शांत थी और उसमें हलका सा तिरस्कार का भाव था। वह सफेद सूती ब्लाउज और सादी काली कमीज पहने थी।

''प्लैट साहब आज शाम तुम्हारे साथ डिनर पर जाना चाहेंगे।'' जिजबॉम ने उससे कहा और वहाँ से चलता बना।

''क्यों नहीं!'' मिस ऐशर ने छत को ताकते हुए कहा, ''मुझे बहुत खुशी होगी। नौ-ग्यारह, पश्चिम, बीसवीं गली। किस समय?''

''यही सात बजे।''

''ठीक है, लेकिन मेहरबानी से समय से पहले मत आइएगा। मैं एक स्कूल टीचर के साथ रहती हूँ और वह किसी आदमी को कमरे में आने की इजाजत नहीं देतीं। वहाँ कोई बैठक भी नहीं है, इसलिए आपको हॉल में इंतजार करना होगा। मैं तैयार रहूँगी।''

उसी शाम साढ़े सात बजे प्लैट और मिस ऐशर वहाँ ब्रॉडवे के एक रेस्तराँ में एक मेज पर बैठे थे। वह एक सादी झीनी काली पोशाक पहने थी। प्लैट को पता नहीं था कि यह लड़की उसके दैनिक काम का ही एक हिस्सा था। एक अच्छे वेटर की संकोची मदद से प्लैट ने जैसे-तैसे करके एक सम्मानजनक भोज का ऑर्डर दे दिया। उसमें खाने से पहले ली जानेवाली चीजें नहीं थीं, जो ब्रॉडवे में आमतौर पर ली जाती थीं।

मिस ऐशले ने प्लैट की ओर एक मनमोहक मुसकान बिखेरी।

''क्या मैं कुछ पी नहीं सकती?'' उसने पूछा।

''हाँ-हाँ, क्यों नहीं!'' प्लैट ने कहा, ''जो तुम चाहो।''
''एक ड्राई मार्टिनी।'' उसने वेटर से कहा।
जब मार्टिनी उसके सामने लाकर रख दी गई तो प्लैट ने हाथ बढ़ाकर उसे उठा लिया।
''यह क्या है?'' प्लैट ने पूछा।
''कॉकटेल, और क्या!''
''मैं तो सोच रहा था कि तुमने कोई चाय मँगाई है। यह तो शराब है। तुम यह नहीं पी सकतीं। तुम्हारा पहला नाम क्या है?''
''अपने करीबी दोस्तों के लिए,'' मिस ऐशर ने बेहद ठंडे स्वर में कहा, ''मैं 'हेलन' हूँ।''
''देखो, हेलन,'' प्लैट ने मेज पर आगे झुकते हुए कहा, ''कितने ही सालों से जब घास के मैदानों में वसंत के फूल खिलते थे तो मैं किसी के बारे में सोचा करता था, जिसे न कभी मैंने देखा था और न ही कभी उसके बारे में सुना था। और कल जब मैंने तुम्हें देखा तो उसी पल समझ गया कि वह तुम हो। मैं कल घर वापस जा रहा हूँ और तुम मेरे साथ जा रही हो। मैं इसे जानता हूँ, क्योंकि कल तुमने जब पहली बार मेरी ओर नजर डाली थी तो इसे मैंने तुम्हारी आँखों में देखा था। तुम्हें दुलत्ती चलाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि तुम्हें सीधे रास्ते पर आना ही होगा। मैं यहाँ आते समय तुम्हारे लिए कुछ लेता आया था।''
यह कहते हुए प्लैट ने दो कैरट की हीरे की अँगूठी मेज पर उसकी तरफ सरका दी। मिस ऐशर ने अपने खाने के काँटे से उसे वापस प्लैट की ओर खिसका दिया।
''ज्यादा आगे मत बढ़िए।'' वह सख्ती से बोली।
''मैं एक लाख डॉलर की हैसियतवाला आदमी हूँ।'' प्लैट ने कहा, ''मैं तुम्हें पश्चिमी टेक्सास में सबसे आलीशान मकान बनवाकर दूँगा।''
''आप मुझे नहीं खरीद सकते, खरीदार महाशय!'' मिस ऐशर ने कहा, ''चाहे आपके पास 10 करोड़ डॉलर भी हों। मैंने नहीं सोचा था कि मुझे आपको फटकार लगानी पड़ेगी। पहली नजर में तो आप मुझे औरों की तरह नहीं दिखे थे, लेकिन अब मैं देख रही हूँ कि आप सब एक जैसे हैं।''
''सब कौन?'' प्लैट ने पूछा।
''आप सब खरीदार। आप लोग सोचते हैं कि हम लड़कियों को अपनी नौकरी जाने के डर से आपके साथ खाने पर जाना ही पड़ेगा, इसलिए आप जो चाहें, हमसे कह सकते हैं। लेकिन, भूल जाइए। मैंने सोचा था कि आप औरों से अलग होंगे; लेकिन अब मैं देख रही हूँ कि यह मेरी भूल थी।''
यह सुनकर प्लैट की समझ में जैसे अचानक सारी बात आ गई और वह संतुष्ट होकर मेज पर अपनी उँगलियों से थाप देने लगा।
''मिल गया मुझे!'' वह जैसे खुशी में चीख पड़ा—''वह निकल्सन वाली जगह, उत्तर की तरफ। वहाँ बलूत के पेड़ों का एक बड़ा कुंज है और एक कुदरती झील भी। उस पुराने मकान को गिराकर उससे थोड़ा और पीछे अपना नया मकान बनवाया जा सकता है।''
''अपना पाइप बुझाइए।'' मिस ऐशर ने कहा, ''मुझे अफसोस के साथ आपको होश में लाना पड़ रहा है; लेकिन अच्छा होगा कि आप लोग एक बात हमेशा के लिए समझ लें कि आपकी स्थिति क्या है! मेरा काम बस इतना है कि आपके साथ खाने पर जाऊँ और आपका मन बहलाऊँ, ताकि आप बूढ़े जिजी के साथ कारोबार करें, लेकिन अपने खरीदे किसी सूट में मुझे पाने की उम्मीद न करें।''

''तो क्या तुम मुझसे यह कहना चाहती हो,'' प्लैट बोला, ''कि तुम इसी तरह तमाम ग्राहकों के साथ जाती हो और वे सभी—वे सभी तुमसे इसी तरह से बात करते हैं, जैसे मैं कर रहा था?''

''वे सभी खिलवाड़ करते हैं।'' मिस ऐशर ने कहा, ''लेकिन मैं इतना जरूर कहूँगी कि एक मामले में आपने उन सबको पछाड़ दिया। वे लोग आम तौर पर हीरों की बात ही करते हैं, लेकिन आप तो सच में एक हीरा उठा लाए!''

''तुम कब से काम कर रही हो, हेलन?''

''तो आपको मेरा नाम भी रट गया, क्यों? मैं आठ साल से अपना खर्चा आप उठा रही हूँ। पहले मैं रोकड़ सँभालती थी, फिर मैंने पैकिंग का काम किया और फिर बड़ी होने तक सेल्सगर्ल रही, और उसके बाद सूट मॉडल बन गई। तो टेक्सासी बाबू, क्या आप नहीं सोचते कि थोड़ी सी शराब ले ली जाए तो इस खाने की नीरसता थोड़ी कम हो जाएगी?''

''तुम अब कोई शराब वगैरह नहीं पियोगी, जानेमन! यह सोचकर बड़ा खराब लग रहा है कि कैसे मैं कल तुम्हें लेने दुकान पर आऊँगा! मैं चाहता हूँ कि हमारे यहाँ से जाने से पहले तुम एक कार पसंद कर लो। यहाँ से हमें बस यही खरीदने की जरूरत होगी।''

''अरे, बंद भी कीजिए इसे। आपको शायद पता नहीं कि ये बातें सुन-सुनकर मेरे कान पक गए हैं।''

खाने के बाद वे ब्रॉडले से टहलते हुए डायना के छोटे से पार्क के पास आए, जहाँ पेड़-ही-पेड़ थे। प्लैट की नजरों को तुरंत ही वे वृक्ष भा गए और वह घूमकर उनके नीचे चक्करदार पगडंडी पर आ गया। बत्तियों का प्रकाश मॉडल की आँखों में अटके दो उजले आँसुओं पर पड़कर चमक रहा था।

''यह बात पसंद नहीं आई मुझे'' प्लैट ने कहा, ''बात क्या है?''

''जाने दीजिए,'' मिस ऐशर बोली, ''देखिए, बात यह है कि—देखिए, दरअसल, जब मैंने आपको पहले-पहल देखा था तो मैंने नहीं सोचा था कि आप ऐसे होंगे। लेकिन आप सब एक जैसे हैं। और अब आप मुझे घर छोड़ेंगे या मैं पुलिस को बुलाऊँ?''

प्लैट उसे उसके हॉस्टल के दरवाजे तक छोड़ने गया। वे एक मिनट के लिए हॉल में खड़े हुए। उसने प्लैट को इतनी हिकारत से देखा कि उसका बलूत का दिल भी काँपने लगा। अभी उसका हाथ हेलन की कमर तक पूरा पहुँचा भी नहीं था कि उसने उसके गाल पर एक जोरदार थप्पड़ जड़ दिया।

प्लैट पीछे हटा तो कहीं से एक अँगूठी नीचे गिरी और टाइलदार फर्श पर उछल गई। प्लैट ने टटोलकर अँगूठी को उठा लिया।

''अब अपनी घटिया अँगूठी लीजिए और दफा हो जाइए, खरीदार महाशय!'' उसने कहा।

''यह दूसरी वाली अँगूठी थी—शादीवाली।'' टेक्सासवासी प्लैट ने चिकने, सुनहरे छल्ले को अपने हाथ में पकड़े हुए कहा।

मिस ऐशर की आँखें उस नीम अँधेरे में प्लैट पर कौंध गईं।

''तो आपका यह मतलब था? क्या आप...''

तभी किसी ने हॉस्टल के अंदर से दरवाजा खोला।

''गुड नाइट,'' प्लैट ने कहा, ''मैं कल दुकान में तुमसे मिलूँगा।''

मिस ऐशर दौड़ती हुई अपने कमरे में पहुँची और स्कूल टीचर को उसने इतनी बुरी तरह से झिंझोड़ दिया कि वह हड़बड़ाकर उठ बैठी और चिल्लाने को तैयार हो गई—''आग!''

''कहाँ है?'' वह चिल्लाई।
''यही तो मैं भी जानना चाहती हूँ।'' मॉडल हेलन ने कहा, ''तुमने तो भूगोल पढ़ा है, एमा, तुम्हें तो पता होना चाहिए। इस नाम का शहर कहाँ है, कैक-कैक-कैक-कैटकस सिटी, शायद यही तो नाम है?''
''तो इसलिए तुमने मुझे जगाया! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?'' स्कूल टीचर बोली, ''वैसे हाँ, कैटकस तो वेनेजुएला में है।''
''कैसा शहर है?''
''क्यों? मोटे तौर पर यह भूकंप व हब्शियों व बंदरों और मलेरिया बुखार और ज्वालामुखियों के लिए जाना जाता है।''
''मेरी बला से!'' मिस ऐशर ने चहकते हुए कहा, ''मैं कल वहाँ जा रही हूँ।''

❑

यात्रा

-ईडिश ह्वार्टन

वह अपनी बर्थ पर लेटी ऊपर बनती छायाओं को ताक रही थी। गाड़ी के धड़धड़ाते पहियों का शोर उसके दिमाग में भर रहा था और वह जगार की स्पष्टता के घेरों में गहरी, और गहरी खिंचती जा रही थी। शयनकार अपनी रात्रिकालीन नीरवता में डूब चुकी थी। वह खिड़की के गीले शीशे के पार अचानक सामने आ जानेवाली रोशनियों और तेजी से भागते अँधेरे के लंबे-लंबे फैलावों को देखती रही। बीच-बीच में सिर घुमाकर वह सीटों के बीच बने गलियारे के उस तरफ अपने पति की बर्थ पर लगे परदों की झिरी में झाँक लेती थी...।

वह बेचैन होकर सोच रही थी कि उसके पति को किसी चीज की जरूरत तो नहीं है, और अगर वह उसे बुलाएगा तो क्या वह उसकी आवाज सुन पाएगी? पिछले कुछ महीनों में उसके पति की आवाज बहुत कमजोर हो गई थी और जब वह उसकी बात सुन नहीं पाती थी तो वह बहुत चिड़चिड़ाता था। इसी चिड़चिड़ाहट, इसी बढ़ती बचकानी झल्लाहट में जैसे उनके बीच न दिखनेवाला अलगाव अभिव्यक्त होता था। वे काँच की दीवार के आर-पार एक-दूसरे को देखते दो चेहरों की तरह थे। वे एक-दूसरे के नजदीक और एक-दूसरे को लगभग छूते हुए भी एक-दूसरे को न तो सुन सकते थे और न ही महसूस कर सकते थे। उन दोनों के बीच संवादहीनता की स्थिति बन चुकी थी। औरत में कम-से-कम यह अलगाव का बोध था और उसे कभी-कभी लगता था कि उसे यह अलगाव आदमी के उस हाव-भाव में दिखाई देता था, जिसका इस्तेमाल वह बोल न पाने की कमी को पूरा करने के लिए करता था। इसमें कोई संदेह नहीं था कि दोष औरत का ही था। वह कठोरता की इस हद तक स्वस्थ थी कि बीमारी की बेमेल बातें उसे छू नहीं पाती थीं। अपने आपको फटकारती-सी औरत की कोमलता आदमी के बेतुकेपन के बोध में घुल-मिलकर रह गई थी : औरत को यह हलका सा आभास था कि उसके पति की असहाय यंत्रणाओं में कोई मकसद था। इस अचानक बदलाव के लिए वह बिलकुल तैयार नहीं थी। अभी एक साल पहले उनके दिल एक ही दम-खम के साथ धड़कते थे; दोनों का ही एक अनंत भविष्य में एक जैसा निश्चित विश्वास था। अब उनके जोश कदम नहीं मिला पा रहे थे : औरत का उत्साह अभी भी जिंदगी के आगे कुलाँचे भर रहा था और आशा व सक्रियता के अछूते इलाकों को पहले से अपने अधिकार में किए ले रहा था; जबकि आदमी का जोश उससे पिछड़ रहा था और औरत से आगे निकलने को व्यर्थ ही जूझ रहा था।

जब उनकी शादी हुई थी तो औरत को जिंदगी के ऐसे पिछले हिसाब चुकता करने थे। उसके दिन उतने ही खाली हुआ करते थे जितनी कि स्कूल की वह सफेदी पुती कक्षा, जहाँ वह अनिच्छुक बच्चों को जबरन अपौष्टिक पाठ पढ़ाया करती थी। आदमी का आना इस तरह हुआ था कि उसने सोई परिस्थिति को झकझोर दिया था और वर्तमान को खींचकर इतना चौड़ा कर दिया था कि वह दूर-दूर तक की संभावनाओं का घेरा बन गया था। लेकिन क्षितिज अदृश्य रूप में सिकुड़ गया था। जिंदगी को औरत से वैर था। उसे फिर कभी अपने पंख पसारने नहीं दिया गया।

पहले तो डॉक्टरों ने कहा था कि छह हफ्ते हलकी आबो-हवा में रखने पर वह ठीक हो जाएगा; लेकिन जब वह लौटकर आया तो यह समझाया गया कि इस आश्वासन में यह बात भी शामिल थी कि उसे सूखी आबो-हवा में एक सर्दी भी बितानी होगी। उन्होंने अपना खूबसूरत मकान छोड़ दिया, शादी के तोहफे और नया फरनीचर जमा किया और कोलराडो चले गए। वहाँ औरत को शुरू से ही अच्छा नहीं लगा था। वहाँ उसे कोई नहीं जानता था और न ही उसकी कोई परवाह करता था; वहाँ कोई ऐसा नहीं था, जो इस बात पर हैरानी जताता कि उसने कैसा बढ़िया

आदमी पाया था! न ही वहाँ कोई उन नए कपड़ों और विजिटिंग कार्डों पर ईर्ष्या करनेवाला था, जो उसके लिए अभी भी सुखद आश्चर्य बने हुए थे। और वहाँ आदमी की हालत और भी खराब होती चली गई थी। उसे यह आभास होने लगा था कि वह इनती छलावा भरी कठिनाइयों में घिर गई है, जिनसे इतना सीधा-सीधा स्वभाव लेकर लड़ना संभव नहीं था। यह सच है कि वह अपने पति को अभी भी प्यार करती थी; लेकिन उसमें धीरे-धीरे एक अबूझ बदलाव आता जा रहा था। वह अब पहले जैसा नहीं रह गया था। जिस आदमी से उसने शादी की थी, वह मजबूत, फुरतीला और थोड़ा दबंग हुआ करता था : ऐसा मर्द, जिसे जिंदगी की भौतिक रुकावटों में होकर रास्ता बनाने में मजा आता है। लेकिन अब तो औरत ही संरक्षक थी और उसे आदमी को हर हाल में जिद से बचाना होता था और उसे दवाई और मांस का शोरबा पिलाना होता था, भले ही आसमान क्यों न गिर रहा हो! मरीज की देखभाल की दिनचर्या से वह बदहवास रहती थी; पाबंदी के साथ ठीक समय पर दवा देने का यह काम उसे उतना ही उबाऊ लगता था जितना कि समझ में न आनेवाला कोई धार्मिक कर्मकांड।

हाँ, कभी-कभी ऐसे भी क्षण आते थे कि वह दया की उष्णता से भर जाती और आदमी की हालत को लेकर उसमें जो चिढ़कर सहज भाव था, वह तिरोहित हो जाता था। ये वे क्षण होते थे, जब वे दोनों आदमी की कमजोरी के सघन माध्यम के पार एक-दूसरे को टटोलने का प्रयास करते थे और उसे अपने पति की आँखों में अभी भी उसका वही पुराना रूप दिखाई देता था। लेकिन ऐसे क्षण अब कम ही आते थे। कभी-कभी तो वह उसे डरा देता था। उसका पिचका व भावशून्य चेहरा किसी अजनबी का चेहरा लगता था; उसकी आवाज कमजोर और भर्राई हुई थी; उसके पतले होंठों की मुसकान बस मांसपेशियों की सिकुड़न रह गई थी। औरत के हाथ उसकी नरम मुलायम त्वचा को छूने से कतराते थे, जिनमें स्वास्थ्य का वह जाना-पहचाना खुरदरापन अब नहीं रह गया था। वह चोरी-छिपे उसे कभी-कभी इस तरह देखा करती, जैसे किसी अजनबी जानवर को देख रही हो! उसे तो यह सोचकर ही डर लगता था कि यही वह आदमी था, जिसे वह प्यार करती थी; ऐसे पल भी होते थे, जब उसे अपने भयों से बचने का एक यही तरीका दिखाई देता था कि उसे अपनी पीड़ा के बारे में बता दे। लेकिन आमतौर पर वह अपने बारे में राय बनाने में अधिक नरम रहती थी। वह सोचती थी कि शायद वह अकेली अपने पति के साथ बहुत ज्यादा रह ली थी और जब वे वापस अपने घर पहुँचेंगे और औरत के दमदार और खुशमिजाज घरवालों से घिरे होंगे तो उसे ऐसा महसूस नहीं होगा। और जब आखिरकार डॉक्टरों ने आदमी के घर जाने पर अपनी रजामंदी दे दी तो उसने कितनी खुशी मनाई थी! वैसे, उसे पता था कि इस फैसले का क्या मतलब था; उन दोनों को ही पता था। इसका मतलब था कि वह मरनेवाला था; लेकिन उन्होंने इस सच्चाई के आशावादी शब्दों में लपेटकर रखा, और कभी-कभी तो ऐसा भी हुआ कि तैयारी की खुशी में वह अपनी यात्रा का उद्देश्य सचमुच भूल गई थी और उत्सुकता के साथ अगले साल की योजनाएँ बनाने लगी थी।

आखिरकार चलने का दिन आ पहुँचा। उसमें एक भयंकर डर बैठ गया था कि वे कभी निकल ही नहीं पाएँगे और आखिरी क्षण में वह उसे दगा दे जाएगा, या डॉक्टरों ने ही अपनी कोई मक्कारी बचाकर रखी होगी; लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। वे कार से स्टेशन आ गए। आदमी को एक सीट पर बैठा दिया गया। उसके घुटनों पर कंबल डाल दिया और उसकी पीठ के पीछे एक गद्दी लगा दी गई; और वह खिड़की के बाहर लटककर उन परिचितों को हाथ हिला-हिलाकर खेद रहित विदा कहने लगी, जो उस क्षण तक उसे सचमुच कभी अच्छे नहीं लगे थे।

पहले चौबीस घंटे अच्छी तरह से बीत गए थे। आदमी में थोड़ी सी जान आई थी और वह खुश होकर खिड़की से बाहर देख रहा था और गाड़ी के डिब्बे की हास्यजनक स्थितियों का आनंद ले रहा था। दूसरे दिन उसे थकान

होने लगी और वह चित्तीदार चमड़ीवाली उस बच्ची से परेशान हो गया, जो हाथ में च्यूइंगम लिये लगातार उसे घूरे जा रही थी। औरत को बच्ची की माँ को समझाना पड़ा कि उसके पति बहुत बीमार हैं और उन्हें छेड़ा नहीं जाना चाहिए। औरत की इस बात पर उस बच्ची की माँ चिढ़ गई थी और यह साफ दिख रहा था कि डिब्बे में बैठे सारे लोगों की ममता उस माँ के साथ थी।

उस रात आदमी को ठीक से नींद नहीं आई और अगली सुबह उसकी हरारत देख औरत डर गई। उसे विश्वास हो चला कि आदमी की हालत बिगड़ती जा रही है। वह दिन धीरे-धीरे बीत गया, बीच-बीच में यात्रा में होनेवाली छोटी-मोटी झुँझलाहट चलती रही। उसने आदमी के थके चेहरे को देखा तो उसे उसकी सिकुड़नों में रेलगाड़ी की एक-एक धड़धड़ाहट और एक-एक झटके का निशान दिखाई दिया। और फिर उसका अपना जिस्म हमदर्दी भरी थकान में थरथराने लगा। उसे लगा कि दूसरे यात्री भी आदमी को देख रहे थे और वह बेचैन होकर अपने प्रति और सवालिया आँखों के बीच मँडराने लगी। चित्तीदार चमड़ीवाली बच्ची मक्खी की तरह आदमी के आस-पास ही चिपकी हुई थी, टॉफी और कॉमिक्स का लालच देने पर भी वह टस से मस नहीं हुई। उसने एक के ऊपर एक टाँग चढ़ाई और इत्मीनान से आदमी को ताकती रही। तभी गाड़ी का परिचारक वहाँ से निकला और उसने मदद की अस्पष्ट सी पेशकश की, शायद यात्रियों की उस परोपकारी भावना ने उसे ऐसा करने को प्रेरित किया था कि 'कुछ किया जाना चाहिए'; और तंग टोपी पहने एक बदहवास आदमी तो अपनी इस चिंता को बोलकर भी व्यक्त कर रहा था कि इसका उसकी पत्नी की सेहत पर असर पड़ सकता है।

उबाऊ खालीपन में घंटों खिंच गए। झुटपुटा होने को आया तो औरत अपने पति के पास बैठ गई और आदमी ने उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया। इस स्पर्श ने उसे चौंका दिया। ऐसा लग रहा था, जैसे आदमी उसे बहुत दूर से पुकार रहा था। वह असहाय-सी उसकी तरफ देखने लगी और उसके पति की मुसकान एक शरीरिक पीड़ा की तरह उसे चीर गई।

''बहुत थक गए हो?'' औरत ने पूछा।

''नहीं, बहुत नहीं।''

''अब हम बहुत जल्दी वहाँ पहुँच जाएँगे।''

''हाँ, बहुत जल्दी।''

''इस समय कल...''

आदमी ने सिर हिला दिया और वे खामोश बैठ गए। जब औरत ने अपने पति को बिस्तर पर लिटा दिया और धीरे से अपनी बर्थ पर चली गई तो उसने यह सोचकर खुश होने की कोशिश की कि चौबीस घंटे से कम समय में ही वे न्यूयॉर्क में होंगे। उसके सारे घरवाले उससे मिलने स्टेशन पर आएँगे। वह कल्पना में उन्हें देखने लगी कि वे भीड़ में होकर अपना रास्ता बना रहे हैं और उनके गोल चेहरों पर चिंता का कोई भाव नहीं है। वह बस यह आशा करने लगी कि वे लोग उसके पति को बहुत जोर-शोर से बताएँ कि वह बहुत बढ़िया लग रहे हैं और बहुत जल्दी बिलकुल ठीक हो जाएँगे! पीड़ा के साथ अपने लंबे संपर्क के कारण उसमें सहानुभूति के जो सूक्ष्म भाव बन गए थे, उससे वह घरवालों की संवेदनाओं के ताने-बाने के खुरदरेपन के प्रति सचेत हो रही थी।

अचानक उसे लगा कि उसका पति उसे बुला रहा है। उसने परदों को हटाया और सुनने लगी। नहीं, यह तो डिब्बे के दूसरे छोर पर किसी आदमी के खर्राटे लेने की आवाज थी। उसके खर्राटों की आवाज में चिकनापन था, मानो वह जानवर की चरबी से निकलकर आ रही हो! वह लेट गई और सोने की कोशिश करने लगी। उसने अपने पति के हिलने-डुलने की आवाज तो नहीं सुनी थी? वह काँप गई और चौंककर उठ गई। किसी आवाज के

मुकाबले खामोशी ने उसे ज्यादा डरा दिया। उसका पति शायद इतना तेज नहीं बोल पाएगा कि उसे सुनाई दे जाए—क्या पता वह अभी उसे बुला रहा हो! उसे ऐसे खयाल क्यों आए? यह तो बेहद थके दिमाग की जानी-पहचानी प्रवृत्ति भर थी, जो अपनी आशंकाओं के दायरे में आनेवाले सबसे असहनीय संयोग से स्वयं को बाँधना चाहता है। अपना सिर बाहर निकालकर वह सुनने लगी। लेकिन यह उसकी साँसों और अपने पासवाले दूसरे फेफड़ों से निकलती साँसों में फर्क नहीं कर पाई। उसका बहुत मन हुआ कि उठे और अपने पति को देखे; लेकिन वह जानती थी कि यह आवेग उसकी बेचैनी व्यक्त होने का एक बहाना मात्र था, और वह इस डर से रुक गई कि कहीं उसके आराम में खलल न पड़े। पति के परदे के लगातार हिलने-डुलने से वह आश्वस्त हो गई। उसे स्वयं पता नहीं था कि क्यों उसे याद आया कि उसके पति ने बड़ी खुशी-खुशी उसे 'गुड नाइट' कहा था। उसमें अपने भयों को अब एक क्षण और सहने की भी सामर्थ्य नहीं रह गई थी और इसी असमर्थता के कारण उसने उन्हें अपनी समूची स्वस्थ थकित देह के प्रयास से अपने आप से दूर रखा था। उसने करवट ली और सो गई।

वह तनकर बैठ गई और बाहर भोर को देखने लगी। रेलगाड़ी इस समय एक निर्जीव आकाश की पृष्ठभूमि में सटकर खड़ी नंगी पहाड़ियों के प्रदेश से गुजर रही थी। यह सृष्टि के प्रथम दिवस जैसा लग रहा था। डिब्बे की हवा बंद थी, इसलिए उसने साफ हवा के लिए अपनी खिड़की को खोल दिया। फिर उसने अपनी घड़ी देखी, सात बज रहे थे—और उसके आस-पास के लोग अब जल्दी ही उठनेवाले थे। उसने अपने कड़े पहने, अपने बेतरतीब बालों को ठीक किया और ड्रेसिंग रूम में चली गई। जब उसने मुँह धो लिया और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये तो वह अधिक आशान्वित महसूस करने लगी। सुबह-सुबह खुश न रहने के लिए उसे हमेशा ही मशक्कत करनी पड़ती थी। खुरदरे तौलिए के नीचे उसके गालों में सुखद जलन हो रही थी और दस घंटे में वे घर पहुँच जाएँगे।

उसने अपने पति की बर्थ की ओर कदम रखा। उसका सुबह का दूध पीने का समय हो रहा था। खिड़की गिरी हुई थी और परदे से बंद उस खाने के धुँधलके में वह बस इतना देख पाई कि वह करवट लेकर लेटा हुआ था और उसका चेहरा दूसरी तरफ था। उसके ऊपर झुकते हुए उसने खिड़की का पल्ला उठा दिया। ऐसा करने में उसके पति का एक हाथ उससे छू गया। यह ठंडा पड़ रहा था।...

वह थोड़ा और झुकी और उसकी बाँह पर अपना हाथ रखते हुए उसने उसे उसका नाम लेकर पुकारा। उसके शरीर में कोई हरकत नहीं हुई। उसने और भी जोर से आवाज दी; उसने उसके कंधे को पकड़कर उसे धीरे से झकझोरा। वह निश्चेष्ट पड़ा रहा। उसने एक बार फिर उसका हाथ पकड़ा। यह उसके हाथ से ढीला छूटकर गिर गया, जैसे कोई मुरदा चीज हो! मुरदा चीज?... उसकी साँस थम गई। उसे उसका चेहरा देखना होगा। वह आगे झुकी और जल्दी से, सिमटते हुए, देह की उकता देनेवाली अनिच्छा के साथ, उसने उसके कंधों पर अपने हाथ रखे और उसे सीधा कर दिया। उसका सिर पीछे को लटक गया। उसका चेहरा छोटा और चिकना दिखाई दे रहा था। वह स्थिर आँखों से उसे ताक रहा था।

बहुत देर तक वह जड़ रही, उसे इसी तरह पकड़े रही; और दोनों एक-दूसरे को देखते रहे। अचानक वह सिमटकर पीछे हटी। चिल्लाने, पुकारने, उससे दूर भाग जाने की लालसा ने उसे लगभग काबू में कर लिया था। लेकिन एक मजबूत हाथ उसे रोके हुए था। हे ईश्वर! अगर उन्हें यह पता चल गया कि यह मर चुका है तो उन्हें अगले स्टेशन पर ही रेलगाड़ी से उतार दिया जाएगा।

स्मृति की एक भयंकर कौंध में उसके आगे वह दृश्य उपस्थित हो गया, जो उसने एक बार यात्रा के दौरान देखा था। एक दंपति का बच्चा रेलगाड़ी में यात्रा के दौरान मर गया था, तो उनको रास्ते में पड़नेवाले एक स्टेशन पर उतार दिया गया था। उसने उन्हें प्लेटफॉर्म पर खड़े देखा था। बच्चे का निर्जीव शरीर उनके बीच था। वह यह बात

कभी नहीं भूल पाई थी कि कैसे स्तब्ध होकर वे जाती हुई रेलगाड़ी को देखते ही चले गए थे! और यही अब उसके साथ होगा! अगले घंटे के भीतर शायद वह भी किसी अनजान स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर अपने पति की निर्जीव देह के साथ अकेली होगी। कुछ भी हो, पर यह नहीं! यह तो बेहद भयंकर था—वह किसी घिरे हुए जीव की तरह काँप उठी।

वह वहाँ इस तरह जब सहमी बैठी थी तो उसे महसूस हुआ कि रेलगाड़ी की गति धीमी पड़ रही थी। तो इसका मतलब यह आ रहा था—वे किसी स्टेशन पर पहुँच रहे थे। उसे एक बार फिर वे पति-पत्नी सुनसान प्लेटफॉर्म पर खड़े दिखाई दिए और उसने उग्र होकर अपने पति का चेहरा छिपाने के लिए खिड़की का पल्ला गिरा दिया।

उसका सिर चकराने लगा और वह अपने पति की पसरी देह से थोड़ी दूर हटकर बर्थ के किनारे पर बैठ गई। परदों को उसने करीब समेट दिया और इस तरह वे दोनों किसी कब्र जैसे धुँधलके में कैद हो गए। उसने सोचने की कोशिश की। उसे यह सच्चाई तो हर कीमत पर छिपानी ही होगी कि वह मर गया है। लेकिन कैसे? उसका दिमाग काम नहीं कर रहा था। वह कोई योजना नहीं बना पा रही थी, कोई जोड़-तोड़ नहीं कर पा रही थी। तमाम दिन वहाँ परदों को पकड़कर बैठे रहने के सिवाय उसे और कुछ भी नहीं सूझा।

उसने सुना, परिचारक उसका बिस्तर समेट रहा था। लोगों का डिब्बे में इधर से उधर आना-जाना शुरू हो गया था। ड्रेसिंग रूम का दरवाजा बार-बार खुल और बंद हो रहा था। उसने उठने की कोशिश की। आखिरकार बहुत जोर लगाने के बाद वह उठकर खड़ी हुई और डिब्बे में सीटों के बीच छूटे गलियारे में आई। परदों को उसने कसकर बंद कर दिया था। लेकिन फिर उसने देखा कि डिब्बे के हिलने-डुलने से वे अभी भी थोड़ा सा खुल रहे थे। उसने अपने कपड़ों में ढूँढ़कर एक पिन निकाली और परदों को खींचकर उन्हें पिन से बंद कर दिया। अब वह सुरक्षित थी। उसने इधर-उधर देखा तो उसे परिचारक दिखाई दिया। उसे लगा कि वह उसी को ताक रहा है।

''वह अभी तक उठे नहीं क्या?'' परिचारक ने पूछा।

''नहीं।'' उसने अटकते हुए कहा।

''मैंने इनका दूध तैयार रखा है। जब इन्हें जरूरत हो, ले सकते हैं। आपने मुझसे कहा था न कि सात बजे तक उनका दूध ले आऊँ!''

औरत ने चुपचाप सिर हिला दिया और अपनी सीट पर सरक गई।

साढ़े आठ बजे गाड़ी बफैलो स्टेशन पहुँच गई। अब तक बाकी यात्री तैयार हो चुके थे और बर्थों को दिन के लिए पलट दिया गया था। चादरों और तकियों का बोझ उठाए परिचारक इधर से उधर आ-जा रहा था और आते-जाते औरत को ताक रहा था। आखिरकार उसने कह ही दिया—''वह उठेंगे नहीं क्या? पता है, हमें आदेश है कि हम जल्दी-से-जल्दी बर्थों को ठीक कर दें।''

वह डर के मारे ठंडी पड़ गई। गाडी स्टेशन में प्रवेश कर रही थी।

''नहीं, अभी नहीं।'' वह अटकती हुई बोली, ''वह दूध पीने से पहले नहीं उठनेवाले। दूध ला दोगे क्या?''

''ठीक है। गाड़ी जैसे ही चलेगी, मैं ला दूँगा।''

गाड़ी आगे बढ़ी तो वह दूध लेकर फिर से हाजिर हो गया। औरत ने उसके हाथ से दूध का गिलास ले लिया और इसे देखती बैठ रही। उसका दिमाग धीरे-धीरे काम कर रहा था और वह कभी एक बात सोच रही थी तो कभी दूसरी; मानो वे उमड़ती बाढ़ में दूर-दूर रखे पत्थर थे, जिन पर पाँव रखकर पार जाना था। फिर उसे ध्यान आया कि परिचारक अपेक्षा में अभी भी वहीं मँडरा रहा था।

''क्या मैं उन्हें पिला दूँ?'' परिचारक ने कहा।

''नहीं, नहीं।'' वह उठते हुए चिल्लाई, ''वह...वह अभी भी सो रहे हैं। मुझे ऐसा लगता है...''

वह परिचारक के निकल जाने का इंतजार करती रही और उसके वहाँ से जाते ही उसने परदों से पिन निकाली और उसके पीछे चली गई। नीम अँधेरे में उसके पति का चेहरा उसे इस तरह घूर रहा था, जैसे संगमरमर का कोई मुखौटा था, जिसमें गोमेद की आँखें लगी थीं। उसकी आँखें डरावनी थीं। औरत ने अपना हाथ बढ़ाकर उसकी पलकें बंद कर दीं। फिर उसे अपने हाथ में लगे दूध के गिलास का खयाल आया—इसका क्या करे वह? उसने सोचा कि खिड़की का पल्ला उठाए और दूध को बाहर फेंक दे; लेकिन ऐसा करने के लिए उसे उसके निर्जीव शरीर पर झुकना होगा और उसका मुँह उसके मुँह के पास आ जाएगा। इसलिए उसने तय किया कि दूध वह खुद पी लेगी।

खाली गिलास लेकर वह वापस अपनी सीट पर आ गई और थोड़ी देर में परिचारक उसे लेने आ गया।

''उनका बिस्तर कब सिमेटूँगा मैं?'' उसने पूछा।

''अरे, अभी नहीं—अभी भी नहीं। वह बीमार हैं—वह बहुत बीमार हैं। क्या तुम उन्हें ऐसे ही नहीं रहने दे सकते? डॉक्टर ने कहा है कि वह जितना ज्यादा-से-ज्यादा लेटे रहें, अच्छा रहेगा।''

परिचारक अपना सिर खुजाने लगा, ''ठीक है, अगर वह सचमुच बीमार हैं तो...''

वह खाली गिलास लेकर चला गया और यात्रियों को यह समझाता गया कि परदों के पीछे जो शख्स है, वह बहुत बीमार है और अभी उठ नहीं सकता।

हमदर्दी भरी आँखें औरत पर जम गईं। आत्मीय मुसकानवाली एक माँ तुल्य औरत उसके पास आकर बैठ गई।

''मुझे यह सुनकर बहुत दु:ख हुआ कि तुम्हारे पति बीमार हैं। मेरे घर में भी बहुत बीमारी रही है। शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ! क्या मैं उन्हें देख सकती हूँ?''

''अरे, नहीं—जी, नहीं! उन्हें बिलकुल नहीं छेड़ना है।''

उस महिला ने इस तरह टोके जाने का कोई बुरा नहीं माना।

''ठीक है, जैसा तुम कहो; लेकिन मुझे नहीं लगता कि तुम्हें बीमारी के मामले में कोई ज्यादा तजुरबा है और तुम्हारी मदद करके मुझे खुशी ही होती! जब तुम्हारे पति की ऐसी हालत होती है तो अमूमन तुम क्या करती हो?''

''मैं...मैं उन्हें सोने देती हूँ।''

''बहुत ज्यादा सोना भी सेहत के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। तुम उन्हें कोई दवा नहीं देतीं?''

''ह...-हाँ।''

''तुम दवा के लिए उन्हें जगाती नहीं?''

''हाँ।''

''अगली खुराक वह कब लेते हैं?''

''अभी दो घंटे तक नहीं।''

वह महिला निराश हो गई—''देखो, अगर तुम्हारी जगह मैं होती तो मैं और जल्दी-जल्दी दवा देती। अपने घरवालों के साथ मैं यही करती हूँ।''

उसके बाद तो जैसे कई आँखें उस पर टूट पड़ीं। उस समय यात्री लोग डाइनिंग कार की तरफ जा रहे थे और उसे पता था कि ये लोग गलियारे से निकलते हुए बंद परदों की तरफ उत्सुकता से देख रहे थे। बड़ी-बड़ी आँखों और लालटेन जैसे जबड़ेवाला एक आदमी सीधा खड़ा होकर परदों की तहों के बीच से अपनी पैनी नजरें अंदर गड़ाने की कोशिश करने लगा। चित्तीदार चमड़ीवाली बच्ची नाश्ता करके लौट रही थी और वहाँ से निकलनेवाले

लोगों को अपने चिकने हाथों से पकड़कर तेज फुसफुसाहट में कह रही थी, ''वह बीमार है।'' और एक बार तो कंडक्टर भी टिकट पूछता हुआ वहाँ आ गया। वह अपने कोने में सिमट गई और खिड़की के बाहर एक अनंत तक पसरी पांडुलिपि के अर्थहीन चित्रलेखों—अर्थात् सरपट भागते पेड़ों और मकानों को देखने लगी।

गाड़ी जब-तब रुकती और डिब्बे में आनेवाले नए यात्री बंद परदों को गौर से देखते थे। उसे अधिकाधिक लोग वहाँ से गुजरते प्रतीत हो रहे थे—और उनके चेहरे उसके दिमाग में उमड़ती छवियों में गड्ड-मड्ड होने लगे थे...

दिन चढ़ते एक मोटे आदमी ने अपने आपको चेहरों की धुंध से अलग किया। उसके पेट पर बल पड़े थे और उसके होंठ मुलायम और पीलापन लिये थे। औरत के सामनेवाली सीट पर जब वह बैठने लगा तो उसने गौर किया कि वह बड़े अर्जवाले काले कपड़े (ब्रॉड क्लॉथ) की पोशाक और गंदी सफेद टाई पहने था।

''आज आपके साहब की तबीयत काफी खराब है न?''

''हाँ।''

''ओह! अब यह तो बड़ी परेशानी वाली बात है न!'' यह कहते हुए उसने अपनी धर्म-प्रचारकोंवाली मुसकान बिखेरी तो उसके सोना भरे दाँत दिखाई दे गए। ''बेशक आपको पता है कि बीमारी जैसी कोई चीज नहीं होती। यह सुंदर विचार है न? मौत खुद हमारी स्थूल इंद्रियों का बस एक भ्रम है। बस अपने आपको आत्मा के बहाव में खुला छोड़ दो, अपने आपको दैवी शक्ति की क्रिया को समर्पित कर दो और बीमारी आपके लिए कोई वजूद नहीं रह जाएगा। अगर आप अपने साहब को यह छोटा सा परचा पढ़ने के लिए तैयार कर सकें तो...''

औरत के आस-पास के चेहरे फिर धुँधले हो चले। उसे अब एक हलकी-सी याद भर रह गई कि उसने उस माँ-तुल्य महिला और चित्तीदार चमड़ीवाली बच्ची की माँ को इस बारे में बहस करते सुना था कि एक बार में ही कई दवाइयाँ आजमाना ज्यादा फायदेमंद होता है या एक बार में एक दवा लेना; माँ-तुल्य महिला का कहना था कि प्रतिस्पर्धावाले तरीके से समय की बचत होती है; दूसरी महिला की आपत्ति थी कि इससे यह नहीं पता चल पाता कि किस दवा से बीमारी ठीक हुई है। उनकी आवाजें चलती ही चली जा रही थीं, जैसे कोहरे में घंटी पीपे टुनटुना रहे हों! परिचारक जब-तब आकर ऐसे सवाल पूछ जाता था, जो उसकी समझ से परे थे, लेकिन जिनका जवाब वह जैसे-तैसे दे ही रही होगी, क्योंकि वह उन्हें दोहराए बिना फिर लौट जाता था; माँ-तुल्य महिला हर दो घंटे पर उसे याद दिला जाती थी कि उसके पति की दवा का समय हो गया है; लोग डिब्बे से उतर रहे थे और उनकी जगह दूसरे लोग आ रहे थे।

औरत का सिर चकरा रहा था और वह उमड़ते खयालों को पकड़कर अपने आपको सँभालने की कोशिश कर रही थी; लेकिन विचार थे कि उस खड़ी चट्टान की बगल में लगी झाड़ियों की तरह उसके हाथ से फिसले जा रहे थे, जिसके नीचे वह जैसे गिरी जा रही थी! अचानक उसका मस्तिष्क फिर साफ हो गया और उसे साफ दिखाई देने लगा कि गाड़ी जब न्यूयॉर्क पहुँचेगी तो क्या होगा! यह सोचकर वह काँप गई कि उसका पति बिलकुल ठंडा पड़ चुका होगा और कोई यह भी भाँप सकता है कि उसकी मौत सुबह ही हो चुकी थी।

वह तेजी से सोचने लगी, 'अगर उन्होंने यह देख लिया कि मुझे आश्चर्य नहीं हो रहा तो वे कुछ-का-कुछ संदेह करेंगे। वे सवाल-जवाब करेंगे और अगर मैंने उन्हें सच-सच बता दिया तो वे मेरा विश्वास नहीं करेंगे। कोई भी मेरा विश्वास नहीं करेगा। यह बहुत भयंकर होगा।' और वह बार-बार अपने आपसे कहती रही, 'मुझे दिखावा करना होगा कि मुझे नहीं पता। जब वे लोग परदा खोलें तो मुझे बिलकुल सहज होकर अपने पति के पास जाना चाहिए—और फिर मुझे चिल्लाना चाहिए।' उसका यह विचार था कि चिल्लाना बहुत मुश्किल काम होगा।

धीरे-धीरे नए विचार उसे घेरने लगे। ये स्पष्ट और अत्यंत तत्पर विचार थे—उसने उन्हें अलग करना और रोकना

चाहा, लेकिन उन्होंने शोर मचाते हुए उसे ऐसे घेर लिया, जैसे किसी गरम दिन की समाप्ति पर उसके स्कूल के बच्चे उस समय उसे घेर लेते थे, जब वह इतनी थकी होती थी कि उन्हें चुप भी नहीं करा सकती थी। उसके दिमाग में विचार गड्ड-मड्ड होने लगे और उसे यह दु:खद भय सताने लगा कि वह अपनी भूमिका न भूल जाए, कहीं लापरवाही में अपनी किसी बात या किसी हाव-भाव से अपनी सच्चाई न प्रकट कर दे!

''मुझे दिखावा करना होगा कि मुझे नहीं पता।'' वह बड़बड़ाती रही। ये शब्द अपनी सार्थकता खो चुके थे; लेकिन वह उन्हें मशीन की तरह दोहराए जा रही थी, मानो ये कोई मंत्र हों! फिर अचानक वह बड़बड़ाने लगी, ''मैं याद नहीं रख सकती, मैं याद नहीं रख सकती!''

उसकी आवाज बहुत तेज हो गई थी, वह घबराकर अपने आस-पास देखने लगी; लेकिन उसे लगा कि किसी ने इस तरफ ध्यान भी नहीं दिया था कि उसने कुछ कहा भी था।

उसने डिब्बे में अपनी नजर दौड़ाई तो उसकी दृष्टि अपने पति की बर्थ के परदों पर पड़ी और वह उनकी भारी तहों में कढ़े एकरस बेलबूटों का मुआयना करने लगी। कढ़ाई का नमूना बहुत पेचीदा था और उसे पकड़ना मुश्किल था। वह एकटक परदों को देखती रही और तभी वह मोटा कपड़ा पारदर्शी हो गया और इसमें लेकर उसे अपने पति का चेहरा दिखा दिया—उसका मुरदा चेहरा! उसने अपनी नजर हटाने की भरसक कोशिश की, लेकिन उसकी आँखें वहाँ से हटने का नाम ही नहीं ले रही थीं और उसका सिर तो जैसे किसी शिकंजे में जकड़ गया था। आखिरकार उसने इतना जोर लगाया कि वह कमजोर हो गई और काँपने लगी। वह पूरा जोर लगाकर घूम गई; लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ; उसके सामने, बिलकुल नजदीक, उसके पति का चेहरा था, छोटा सा और चिकना। यह उसके सामने बैठी महिला की नकली चोटियों और उसके बीच हवा में लटका दिखाई दे रहा था। उसने उस चेहरे को परे धकेलने के लिए अपना हाथ फैलाया और अचानक लगा, जैसे उसने अपने पति की चिकनी चमड़ी को छू लिया हो! अपनी चीख को रोकती हुई वह अपनी सीट से उछलकर खड़ी हो गई। नकली चोटियोंवाली महिला इधर-उधर देखने लगी। औरत ने सोचा कि उसे अपनी इस हरकत को किसी-न-किसी तरह सही ठहराना होगा, और वह खड़ी होकर सामनेवाली सीट से अपना बैग उठाने लगी। उसने बैग का ताला खोलकर उसके अंदर देखा; लेकिन उसका हाथ सबसे पहले जिस चीज पर पड़ा, वह था उसके पति का एक छोटा फ्लास्क, जिसे चलने की हड़बड़ी में आखिरी क्षणों में वहाँ ठूँस दिया गया था। उसने बैग का ताला लगाया और अपनी आँखें बंद कर लीं...उसके पति का चेहरा फिर वहाँ दिखाई दिया—यह उसके आँख के गोलों और पलकों के बीच एक लाल परदे की पृष्ठभूमि में मोम के मुखौटे-सा झूल रहा था।

वह जैसे-तैसे काँपती हुई उठी। वह बेहोश हो गई थी या सो गई थी? लग रहा था, जैसे घंटों बीत गए थे; लेकिन अभी भी पूरा दिन था और उसके आस-पास के लोग बिलकुल उसी मुद्रा में बैठे हुए थे, जैसे पहले बैठे थे।

उसे अचानक भूख लगी और तब उसे होश आया कि उसने सुबह से कुछ नहीं खाया था। खाने के खयाल ने उसमें वितृष्णा भर दी; लेकिन उसे डर था कि कहीं वह फिर से बेहोश न हो जाए, इसलिए उसने कुछ खा लेना ठीक समझा। तभी उसे याद आया कि उसके बैग में कुछ बिस्कुट हैं और उसने एक बिस्कुट निकालकर खा लिया। बिस्कुट के सूखे टुकड़े उसके गले में फँसने लगे और उसने जल्दी से अपने पति के फ्लास्क से थोड़ी सी ब्रांडी गटक ली। उसके गले में इससे जो जलन हुई, उसने झुँझलाहट का काम किया और कुछ पल के लिए उसे अपनी नसों में होनेवाले हलके दर्द से राहत मिली। फिर उसे एक सुखद गरमी का अहसास हुआ, मानो धीमी हवा उसे लग रही हो और उसे घेरने वाले भयों की जकड़न ढीली पड़ने लगी। वे उस नीरवता में होकर सिमट गए, जो उसे घेरे हुए थी और जो इतनी सांत्वनादायी थी, जितनी कि गरमियों के दिन की व्यापक शांति। वह सो गई।

अपनी नींद में वह रेलगाड़ी की प्रचंड रफ्तार को महसूस करती रही। लगता था, जैसे स्वयं जिंदगी उसे अंधाधुंध अदम्य शक्ति के साथ उड़ाए ले जा रही थी—उसे अंधकार और आतंक में और अशांत दिनों की विस्मयकारी भयावहता में उड़ाए ले जा रही थी। अब अचानक सबकुछ शांत हो गया था—कोई आवाज नहीं थी, कोई स्पंदन नहीं था। वह महसूस भी कर रही थी। उसने एक औचक विलंबित कंपन महसूस किया, लगातार कई जोरदार झटके महसूस किए और फिर अंधकार में एक और गोता महसूस किया। इस बार यह मौत का अँधेरा था—एक काली भँवर थी यह, जिस पर वे दोनों ही पत्तियों के समान जोरदार खुलती कुंडलियों में चक्कर खा रहे थे और उनके साथ लाखों-लाख मृतक थे।

वह भयाक्रांत होकर उछलकर बैठ गई। वह जरूर बहुत देर तक सोई होगी, क्योंकि सर्दियों का यह दिन धुँधला हो चला था और बत्तियाँ जल गई थीं। डिब्बे में आपा-धापी का माहौल था, और जब उसने अपने आपको संयत किया तो देखा कि यात्री लोग अपने-अपने पैकिट और बैग सँभाल रहे थे। नकली चोटियोंवाली महिला ड्रेसिंग रूम से बोतल में मुरझाया-सा एक सिरपेंचे का पौध ले आई थी और क्रिश्चियन साइंटिस्ट अपनी आस्तीनें उलट रहा था। परिचारक अपना निष्पक्ष ब्रुश लेकर गलियारे से निकल रहा था। सुनहरी पट्टी काली टोपी पहने एक उदासीन व्यक्ति उसके पति का टिकट माँग रहा था। तभी किसी ने 'बैग-गेज एक्सप्रेस' कहा और उसने लोहे के बजने की आवाज सुनी; यात्री लोग अपने टिकट दे रहे थे।

उसी समय उसकी खिड़की के सामने एक बड़ी सी काली दीवार आ गई, और गाड़ी हार्लेम (अश्वेतों की बस्ती) की सुरंग में प्रवेश कर गई। यात्रा समाप्त हो चुकी थी; कुछ ही मिनटों में वह अपने घरवालों को देखेगी, जो स्टेशन पर जमा भीड़ में से खुश होकर रास्ता बना रहे होंगे। उसका दिल बड़ा हो गया। भयंकरतम आतंक बीत चुका था।

''अब तो हमें उन्हें उठा देना चाहिए, क्यों?'' परिचारक ने उसका हाथ छूते हुए पूछा।

परिचारक के हाथ में उसके पति का हैट था और वह ध्यानमग्न होकर इसे अपने ब्रुश के नीचे घुमा रहा था।

औरत ने हैट को देखा और कुछ बोलना चाहा; लेकिन अचानक ही डिब्बे में अँधेरा छा गया। उसने अपने हाथ उठाकर कोई चीज पकड़ने की कोशिश की और इस चक्कर में मुँह के बल नीचे गिरी। उसका सिर मृतक की बर्थ से टकराया।

❑

पुराना फौजी

-स्टीवन क्रेन

नीची खिड़की से तीन हिकरी के पेड़ दिखाई दे रहे थे। जो वसंत की हरियाली में घिरे चरागाह पर बेतरतीब खड़े थे। उनसे थोड़ा आगे निकलकर चीड़ों के ऊपर गाँव के पुराने, निरानंद गिरजाघर की घंटेवाली बुर्ज दिखाई पड़ती थी। एक हिकरी की छाया में ध्यानमग्न खड़ा एक घोड़ा सुस्ती में अपनी पूँछ फटकार रहा था। गुनगुनी धूप परचूनिए के फर्श पर साफ पीले रंग का आयात बना रही थी।

''क्या तुम्हें उनकी आँखों की सफेदी दिखाई दे रही थी?'' साबुन की पेटी पर बैठे आदमी ने कहा।

''ऐसा कुछ नहीं था।'' बूढ़े हेनरी ने गरमजोशी से कहा, ''मुझे तो बस कुछ भागते साए दिखाई दे रहे थे और जहाँ मुझे उनका झुंड सबसे ज्यादा दिखाई देता था, वहीं मैं छोड़ देता था—धायँ!''

''फ्लेमिंग साहब,'' परचूनिए ने कहा। उसके सम्मानसूचक संबोधन में बूढ़े व्यक्ति की सही सामाजिक स्थिति का बोध था—''फ्लेमिंग साहब, आपको उन लड़ाइयों में कभी डर तो नहीं लगा न, क्यों?''

पुराने फौजी ने नीचे देखते हुए खीसें निपोर दीं। उसकी यह अदा देखकर वहाँ बैठे सभी लोग खिलखिलाने लगे।

''हाँ, डर तो लगा था मुझे।'' आखिर में उसने जवाब दिया, ''कभी-कभी तो बहुत ज्यादा डरा था मैं। अरे, अपनी पहली लड़ाई में तो मुझे लगा था कि आसमान गिर रहा है। मैंने सोचा था कि दुनिया का अंत हो रहा है। सच, बहुत डर गया था मैं।''

सब लोग हँस पड़े। शायद उन्हें यह अजीब और अद्‌भुत भी लग रहा था कि कोई आदमी इस तरह की बात स्वीकार करेगा और उनकी हँसी के लहजे से लग रहा था कि अगर बूढ़े फ्लेमिंग ने यह कहा होता कि वह तो हमेशा शेर रहा है, तब शायद उनमें उसके लिए प्रशंसा का इतना भाव न जागा होता। और फिर, उन्हें पता था कि वह सेना में एक अर्दली सार्जेंट हुआ करता था, इसलिए उसकी बहादुरी के बारे में उनकी राय बनी-बनाई थी। यह सच है कि उनमें से किसी को भी यह पक्का पता नहीं था कि अर्दली सार्जेंट का क्या ओहदा होता है, लेकिन फिर भी वे लोग समझते थे कि यह मेजर जनरल के स्टार्स से थोड़ा ही कम था। इसलिए जब बूढ़े हेनरी ने यह स्वीकार किया कि उसे वहाँ डर लगा था, तो ये लोग हँस दिए थे।

''परेशानी यह थी।'' बूढ़े व्यक्ति ने बताया, ''कि मुझे लगता था कि सारे-के-सारे मुझ पर ही गोली चला रहे हैं। हाँ साहब, मैं सोचता था कि दुश्मन फौज का हर आदमी खासकर मुझको ही निशाना बनना रहा है, सिर्फ मुझे। और जानते हैं, मुझे यह सब बहुत बेजा लगता था! मैं उन्हें समझाना चाहता था कि मैं कितना अच्छा बंदा था; क्योंकि मैं सोचता था कि तब वे सब मुझे मारने की कोशिश छोड़ देंगे। लेकिन मैं समझा नहीं पाया, और वे बेजा हरकत करते ही रहे—धूम! धड़ाक! धायँ! बस मैं भाग लेता था।''

यह कहते हुए उसकी आँखों के किनारों पर झुर्रियों के दो छोटे-छोटे तिकोन बन गए। जाहिर था कि वह अपने इस वर्णन में थोड़ा हास्य का पुट रखना चाहता था। लेकिन उसके पाँवों के पास बैठा उसका पोता, नन्हा जिम, साफ डरा-सहमा लग रहा था। उसके हाथ घबराहट में जुड़े हुए थे और उसकी आँखें इस भयानक कांड को सुनकर आश्चर्य में फैल रही थीं कि उसके अत्यधिक शानदार दादा इस तरह की बात सुना रहे थे।

''यह चांसलर्सविल की बात है। बेशक, बाद में मैं इसका आदी-सा हो गया था। हर आदमी हो जाता है। हालाँकि बहुत से आदमी तो शुरू से ही बिलकुल सही रहते हैं। मैं, जैसाकि लोग अब कहते हैं, मैं 'इसमें आते ही' इसका

आदी हो गया था; लेकिन शुरू-शुरू में मैं बहुत घबराया रहता था। अब, जवान जिम कॉन्कलिन को ही लो, जो चमड़े का काम करनेवाले बूढ़े साई कॉन्कलिन का बेटा था—तुम लोगों को उसकी याद नहीं है—तो वह लड़ाई में जाते ही ऐसा रम गया, मानो इसी के लिए पैदा हुआ हो! लेकिन मेरी बात अलग थी। मुझे उसका आदी होना पड़ा था।''

जब नन्हा जिम अपने दादा के साथ चलता था तो उसकी यह आदत थी कि वह तीन दुकानों और कस्बे के होटल के साथ पत्थर के फुटपाथ पर उछलता हुआ चलता था और यह शर्त लगाता था कि वह दरारों पर अपना पाँव नहीं पड़ने देगा। लेकिन इस दिन वह अपने दादा की दो उँगलियाँ पकड़े गंभीर होकर चल रहा था। कभी-कभी वह अनजाने में ही रास्ते में उग आए कुकरौंधों को लात मार देता था। उसे देखकर कोई भी बता सकता था कि वह बहुत परेशान है।

''वह चरागाह में सिकल का बछेड़ा खड़ा है, जिनी।'' बूढ़े व्यक्ति ने कहा, ''क्या तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे पास भी ऐसा ही बछेड़ा हो?''

''हुम्म।'' लड़के ने अजीब उदासीनता से कहा। वह अपनी उधेड़-बुन में लगा रहा। फिर आखिर में वह बोला, ''दादा-अब क्या वह सच था, जो आप उन आदमियों को बता रहे थे?''

''क्या?'' दादा ने पूछा, ''क्या बता रहा था मैं उनसे?''

''वही, अपने भागने के बारे में।''

''अरे हाँ, वह बिलकुल सच था, जिमी! यह मेरी पहली लड़ाई थी और जानते हो, वहाँ बहुत शोर-शराबा था।''

जिमी इस बात से जैसे दंग रह गया कि यह प्रतिमा अपने आप ही इस तरह ढह रही थी। उसका लड़कपन का वह मजबूत आदर्शवाद आहत हो गया।

दादा ने कहा, ''सिकल का घोड़ा पानी पीने जा रहा है। क्या तुम्हारा मन नहीं करता कि सिकल का बछेड़ा तुम्हारे पास हो, जिमी?''

लड़के ने दो-टूक जवाब दिया, ''वह हमारे बछेड़े से अच्छा नहीं है।'' और फिर से खयालों में खो गया।

उन्होंने जिन भाड़े के आदमियों को रख रखा था, उनमें एक स्वीड (स्वीडनवासी) भी था। उसने अपने किसी मकसद से जिला मुख्यालय जाने की इच्छा जताई। बूढ़े व्यक्ति ने उसे नया घोड़ा और अनधुली घोड़ा गाड़ी उधार दे दी। बाद में पता लगा कि उस स्वीड का एक मकसद दारू पीना था।

दुछत्ती पर रहनेवाले खेतिहर मजदूरों और लड़कों की हँसी-ठिठोली को बंद करने के बाद उस रात बूढ़ा व्यक्ति शांति से सोने चला गया था कि तभी रसोईघर के दरवाजे पर होनेवाले शोर ने उसे उठा दिया। उसने अपनी पैंट पकड़ी और दौड़ पड़ा। उसकी पैंट उसके पीछे फड़फड़ाती गई। उसे स्वीड की आवाज सुनाई दी, जो चीख रहा था और अंट-शंट बक रहा था। उसने लकड़ी की सिटकनी हटाई और दरवाजा जैसे ही खुला, वह पागल स्वीड लड़खड़ाता हुआ अंदर आ गया। वह बड़बड़ा रहा था, रो रहा था, और अभी भी चीख रहा था, ''खलिन आग! आग! आग! खलिहान आग! आग! आग! आग!''

बूढ़े व्यक्ति में तेजी से एक अबूझ बदलाव आ गया। उसका चेहरा अब चेहरा नहीं रह गया, यह एक मुखौटा बन गया, एक स्याह मुखौटा, जिसके मुँह और आँखों में आतंक की छाया था। वह सीढ़ियों के नीचे से भर्राई आवाज में चिल्लाया और फौरन ही आदमियों का एक रेला नीचे आया। किसी को यह पता नहीं था कि इस दौरान बूढ़ी औरत सोने के कपड़ों में ही शयनकक्ष के दरवाजे पर खड़ी चिल्ला रही थी, ''क्या बात है? क्या बात है? क्या बात है?''

जब वे खलिहान की तरफ लपके तो काली रात में उनकी आँखों को वह हमेशा की तरह धूसर बल्कि रहस्यपूर्ण

दिखाई दिया। स्वीड की लालटेन खलिहान के दरवाजे के सामने कुछ गज की दूरी पर लुढ़की पड़ी थी। इससे एक तेज छोटी सी लपट उठ रही थी और जो आदमी दौड़ रहे थे, उन्हें अपनी उत्तेजना में भी यह लुढ़की लालटेन देखकर अपने दिमाग में एक हलकी सी थरथराहट महसूस हुई। सामान्य परिस्थितियों में यह एक आपदा होती।

लेकिन खलिहान में मवेशी भगदड़ मचाए हुए थे और धप-धप, धप-धप, धप-धप की इस आवाज के ऊपर भिन-भिन की आवाज आ रही थी, जैसे असंख्य मधुमक्खियाँ भिनभिना रही हों! बूढ़े व्यक्ति ने बड़े से दरवाजों को खोल दिया और एक पीली लपट एक कोने में उठी और तेजी से पुरानी धूसर दीवार पर लपलपाने लगी। यह अकेली लपट आनंदमयी और भयंकर थी, जैसे घातक और विजयी दुश्मनों की उद्दाम पताका हो!

दुछत्ती से उतरनेवाली बहुरंगी भीड़ खेत की सारी बालटियाँ उठा लाई थी। वे कुएँ पर टूट पड़े। यह एक पुरानी सुस्त मशीन थी, जो काफी समय से इस्तेमाल नहीं हुई थी। यह थोड़े अनमनेपन से पानी देने की आदी थी। ये आदमी इस पर पिल पड़े, इसे कोसते रहे; लेकिन इसने अपना रवैया नहीं छोड़ा—आदमियों के बौराए हाथों की बहुत मशक्कत के बाद खूब चटर-मटर करने के बाद ही यह बालटियों को भरने लायक पानी दे रही थी।

बूढ़ा फ्लेमिंग हाथ में अपना खुला चाकू लिये खुद सीधा खलिहान में घुस गया था, जहाँ दमघोंटू धुआँ हवा के झोंकों में घुमड़ रहा था और जहाँ लपटों का समवेत गान अपनी पूरी भयंकरता में सुना जा सकता था; इसमें घृणा और मौत के सुर थे—अद्भुत भीषणता का भजन था यह!

उसने एक बूढ़ी घोड़ी के ऊपर एक कंबल डाल दिया और रस्से को चरनी के पास से काटकर उसे दरवाजे पर ले आया। वहाँ से उसने लात मारकर घोड़ी को खतरे से बाहर कर दिया। फिर वह उसी कंबल को लेकर दोबारा वहाँ आया और एक कमेरे घोड़े को बचाया। इस तरह उसने पाँच घोड़ों को बाहर निकाला और फिर खुद बाहर आया। उसके कपड़ों में आग लगी हुई थी। उसकी गलमुच्छें गायब थीं और सिर पर भी बहुत कम बाल थे। आदमियों ने उस पर पाँच बालटी पानी डाला। उसका सबसे बड़ा बेटा छठी बालटी डालने से चूक गया, क्योंकि तब तक वह बूढ़ा व्यक्ति घूम चुका था और ढलान पर दौड़ता हुआ घूमकर खलिहान के तलघर की तरफ जा रहा था, जहाँ गायों के खूँटे थे। तभी किसी ने देखा कि वह बहुत लँगड़ा रहा था, मानो किसी बिफरे घोड़े ने उसका कूल्हा तोड़ दिया हो!

भारी खूँटों से बँधी गायों ने खूब उछल-कूद की थी, सिर झटका था और अपने आपको उलझा लिया था—यानी अतिशय भय की स्थिति में उनकी समझ में जो भी आ सकता था, वह उन्होंने किया था।

कुएँ की तरह यहाँ भी एक को छोड़कर सभी आदमियों के साथ वही हुआ। उनके हाथ बौरा गए। वे खतरनाक स्थितियों में कूद पड़ने की ताकत के सिवाय और हर काम के अयोग्य हो गए।

बूढ़े व्यक्ति ने दरवाजे के सबसे पास बँधी गाय को आजाद किया और वह भय से अंधी हुई स्वीड से जा भिड़ी। स्वीड न जाने क्या बड़बड़ाता हुआ इधर से उधर भाग रहा था। वह दूध की एक खाली बालटी लिये था और उससे अचेतन, भयंकर उत्साह के साथ चिपका हुआ था। गाय के पैरों के नीचे आकर वह बेतहाश चीख पड़ा और फर्श पर लुढ़कती दूध की बालटी अँधेरे में चाँदी-सी चमक गई।

बूढ़े फोर्क ने एक काँटा उठाकर गाय को मार भगाया और निश्छल स्वीड को खुली हवा में पहुँचाया। वे लगभग सारी गायों को सुरक्षित निकाल चुके थे, केवल एक गाय बची थी, जिसने अपने आपको इस तरह फँसा लिया था कि वह एक इंच भी हिल नहीं सकती थी। तब वे खलिहान के सामनेवाले दरवाजे पर आकर उदास खड़े हो गए। वे इस तरह हाँफ रहे थे, जैसे इनसानी कोशिश के आखिरी बिंदु पर आ पहुँचे हों!

बहुत से लोग दौड़ते हुए वहाँ आ गए थे। किसी ने जाकर गिरजाघर में भी खबर कर दी थी और अब, दूरी से,

पुराने घंटे की खतरे की सूचक आवाज आ रही थी। आसमान में लाल रंग की लंबी लौ लपलपा रही थी, जिससे दूर-दराज के लोग आग लगने की जगह के बारे में अनुमान लगा रहे थे।

लंबी लपटें सबसे भारी मंद स्वरों में अपना समवेत गान गा रही थीं। हवा धुएँ और चिनगारियों के घुमड़ते गुबार तमाशबीनों के मुँह पर फेंक रही थी। नारंगी रंग की लपटों के इन ढेरों के बीच पुराने खलिहान की आकृति काली दिखाई दे रहीथी।

और तभी यह स्वीड फिर आ पहुँचा। वह ऐसे चिल्ला रहा था, जैसे अनिष्टकारी नियति का हथियार हो!

''बछड़े! बछड़े! तुम बछेड़े को भूल गए!''

बूढ़ा फ्लेमिंग लड़खड़ा गया। यह सच था। वे खलिहान के पीछे तबेले में बंद उन दो बछड़ों को भूल गए थे।

''लड़कों,'' वह बोला, ''मुझे उन्हें निकालने की कोशिश करनी ही होगी।'' तब वे उसके लिए दुहाई देने लगे। उन्हें उसके बारे में डर था। उन्हें डर था कि उन्हें कुछ अनहोनी देखने को न मिले। फिर वे बदहवासी में एक-दूसरे से बोलने लगे, ''अरे, यह तो मौत को गले लगाना होगा!''

''वह बाहर नहीं निकल पाएगा!''

''अरे, अंदर जाना तो आत्महत्या के बराबर होगा!'' बूढ़ा फ्लेमिंग अन्यमनस्कता में खुले दरवाजों की तरफ देख रहा था।

''बेचारे बछड़े!'' वह बोला और दौड़ता हुआ खलिहान में घुस गया।

जब छत गिरी तो धुएँ का एक बड़ा शंकु के आकार का गोला आसमान में उठा, मानो बूढ़े व्यक्ति की सशक्त आत्मा अपने शरीर—एक छोटी बोतल—से आजाद होकर कहानी-किस्से के जिन्न की तरह फैल गई थी! धुएँ का रंग लपटों के कारण गुलाबी था और शायद ब्रह्मांड की अकथनीय मध्य रात्रियों के पास अब इस आत्मा के रंग का साहस तोड़ने की शक्ति होगी!

□□□